ज्ञानपीठ-लोकोदय-ग्रन्थमाला—हिन्दी-ग्रन्थाङ्क

नये बादल

श्री मोहन राकेश
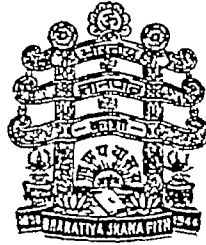
भारतीय ज्ञानपीठ काशी

प्रेमचन्द्र की आत्मा को

मैं यह समझता हूँ कि कहानियाँ पढने वालेसे साथ एक भूमिका पढनेकी आशा करना ज्यादती है। मगर एक ऐसा वर्ग भी है जो कहानियाँ पढनेसे पहले लेखकका दृष्टिकोण जान लेना चाहता है। उसी वर्गको दृष्टिमे रखते हुए मैं ये पक्तियाँ लिख रहा हूँ।

आज कहानीके सम्बन्धमें एक नयी दृष्टि पनप रही है, जिससे कहानीके प्रभावका स्वरूप भी वदल गया है और जिन स्रोतोंसे हम कहानी लिखनेकी प्रेरणा लेते हैं, उनका क्षेत्र भी काफी विस्तृत हो गया है। हमारे चारो ओर जीवनका हर अणु किन्ही प्रभावोंसे चालित हो रहा है। हम उन प्रभावोको पहचान सकें तो हर अणुकी अपनी एक कहानी है। जिस राह पर से दो चरण गुज़र जाते हैं, उस राहके वक्ष पर उन पग-चिह्नोंसे एक कहानी लिखी जाती है। हर जीवित इन्सानके चेहरे पर एक कहानी लिखी रहती है, जो उसके चेहरेकी झुर्रियोमें, उसकी पलकोके निमेषोमें और उसके माथेकी सलवटोमें पढी जा सकती है। मेरे दरवाजे पर जो चिक लगी है, वह उन हाथोकी कहानी है, जो धूपमें वैठकर उसे रँगते रहे हैं। मेरे फर्श पर बिछी हुई दरी शायद एक प्रणयकी कहानी है, जो धागोको आपसमें उलझाते हुए दो हृदयोमे अकुरित हो उठा था। इस समय एक व्यक्ति वाहर धूपमें रद्दी खरीदनेके लिए सडकोके चक्कर काट रहा है। इस व्यक्तिके जीवनमें सन्ध्या और रात भी आती है, जब यह कुछ निजी लोगोके छोटेसे दायरेमे वैठकर खिलखिलाकर हँसता है, या माथे पर हाथ रखे हुए लवी साँस लेता है। इसकी चारपाई पर एक मैला खेस विछा है, इसके लडकेकी आँख फूल आयी है, इसके रसोईघरकी दीवार धुएँसे काली हो गयी है, इसकी पत्नीके चेहरे पर फिर भी एक करुण मुसकराहट है और वह इसके हाथमें इसकी वहनका पत्र दे देती है कि उसके पतिने फिर उसे बुरी तरह पीटा

जब कि हर एक की भविष्यकी खोज अधी गलीमें हाथ मारनेकी-सी रही हो, उस समयको छोड कर एक लेखकके अध्ययन और चित्रणके लिए उपयुक्त और कौन-सा समय हो सकता है ? वास्तवमे जीवनकी सकुलता आजके लेखकके लिए एक चुनौती है । वह इस चुनौतीको स्वोकार करे और जीवन की पकिल गहराईमे डुवकी लगानेका साहस करे तो वह रोम्याँ रोलाँके 'माकट प्लेस' जैसी रचना प्रस्तुत कर सकता है, वल्कि उससे कही अधिक बारीक रेखाएँ उघाड सकता है, क्योकि बीते हुए कलकी उपलब्धियाँ आजके लेखकके लिए आदर्श नही, आरम्भका सकेत हैं । वहाँसे उसकी गतिका श्रीगणेश होता है ।

हमें यह स्वीकार करना होगा कि हमारी पीढीने यथार्थके अपेक्षाकृत ठहरे हुए अर्थात् वैयक्तिक और पारिवारिक रूपको अपनी रचनाओमें अधिक स्थान दिया है । निरन्तर कुलबुलाते और सघर्ष करते हुए सामाजिक पार्श्व का एक व्यापक भाग अछूता रहा है, जिस की पहचान और पकड हमारे लेखकीय दायित्वका अग है ।

आज कुछ लोग कहानीका सम्बन्ध एक विशेष तरहके शिल्प या वस्तुके साथ जोडकर उसका मूल्याकन करना चाहते हैं । इसे बहुत स्वस्थ और अधिकारी दृष्टि नही कहा जा सकता । कहानीकी उत्कृष्टताका यह प्रमाण क्योकर है कि कहानी इस वर्गको लेकर लिखी गयी है या उस वर्गको, और कि उसका सम्बन्ध गाँवके जीवनसे है या कस्बेके या नगरके ? क्या अनिवार्यत इस दृष्टिका यह अर्थ नही कि हम जीवनके विकासशील रूपकी वास्तविकताको स्वीकार करना नही चाहते ? जीवन जड नही है तो उसके किसी बँधे हुए रूपको ही आदर्श मान लेना क्या प्रगतिमे अविश्वासका द्योतक नही ? इस परम्परावादको कहाँ तक सार्थक कहा जा सकता है ? हमारी रचनाका क्षेत्र नि सीम है और रचनाकी वास्तविक सिद्धि उसके प्रभावकी व्यापकतामें है । इसके लिए इतना ही आवश्यक है कि लेखकका दृष्टिकोण स्पष्ट हो और उसकी रचना उसके और पाठकके वीच एक

घनिष्ठताकी स्थापना कर सके। इसके लिए अभिव्यक्तिमें जिस स्वाभाविकताकी आवश्यकता है वह जीवनकी सहज अनुभूतियोसे जन्म लेती है और वह स्वतः ही रचनाको सहज संवेद्य बना देती है। ये अनुभूतियाँ हमे जीवनके हर पक्ष और हर पहलूसे प्राप्त हो सकती हैं।

× × ×

अब कुछ अपनी बात। 'इन्सानके खडहर' के बाद यह मेरा दूसरा कहानी-संग्रह है। कई कारणोसे शायद 'इन्सानके खडहर' का पुनर्मुद्रणन हो सके; परन्तु उस संग्रहकी कहानियाँ पाठकोको बादके संग्रहोमे मिल जायँगी। उस संग्रहके सम्बन्धमें मुझे जो पाठकोकी सम्मतियाँ प्राप्त हुई थी, उनसे निश्चित रूपसे मुझे अपनेको समझनेमे सहायता मिली है। इसके लिए मैं आभारका अनुभव करता हूँ। प्रस्तुत संग्रहके लिए मैंने अपनी अब तककी कहानियोमेंसे सोलह कहानियाँ चुनी हैं। कुछ और कहानियाँ इसके बाद ही प्रकाशित होनेवाले दूसरे संग्रहमे जा रही हैं।

मॉडल टाउन, जालन्धर
१ जनवरी, १९५७

मोहन राकेश

नये बादल

उस रात तत्ता पानीकी धर्मशालामे खास हलचल दिखायी दे रही थी। धर्मशालाका चौकीदार हाथमें लालटेन लिये व्यस्ततापूर्वक नीचे से ऊपर और ऊपरसे नीचे आ जा रहा था। धर्मशालामें कुल सोलह कमरे थे जिनमेंसे ग्यारह कमरे शाम होनेसे पहले ही भर गये थे। शेष कमरोमेंसे दो कमरोको उसने दोहरा ताला लगा रखा था क्योकि कभी कोई मालिकका परवाना लेकर आ पहुँचता तो उसे जगह देना आवश्यक हो जाता था। इस तरह उसके पास कुल तीन कमरे खाली थे और जगह चाहने वाले लगभग बारह-चौदह व्यक्ति उसके आगे-पीछे घूम रहे थे। इतने लोगोका साथ होना ही उसके लिए मुसीवत थी। लोग एक-एक करके आते तो वह उनसे मौकेके मुताविक चार-चार आठ-आठ आने लेकर उन्हें कमरे खोल देता। मगर इतने लोगोंके साथ होनेसे वह किसीसे भी पैसेकी बात नही कर सकता था। विना पैसे लिये किन्ही तीन लोगोको कमरे दे देना भी सभव नही था क्योकि इससे और लोग शिकायत करते कि वह पक्षपात कर रहा है। वह चाबियाँ ढूँढनेके बहाने कभी इधरसे उधर और कभी ऊपरसे नीचे आ जा रहा था कि किसी तरह दो एक लोगोंसे अकेलेमे बात करनेका मौका लग जाय तो वह उनसे पैसे लेकर पक्षपातके दोपसे वच जाय। पैसे लेकर तो वह ईमानदारीके साथ कह सकता था कि वे लोग औरोंसे पहले उसके पास आये हैं, इसलिए कमरो पर पहला हक उन्हीका है।

उस रात इतने लोगोंके एक साथ आ जानेका खास कारण था। वैसे तो हर अमावसको वहुतसे यात्री शिमला और हिमाचल प्रदेशके विभिन्न भागोंसे वहाँ गधकके चश्मेमें नहानेके लिए आया करते थे, पर उनमेंसे आठ दस ही रातको धर्मशालामें ठहरते थे। ज्यादातर लोग सन्ध्यासे पहले ही

वापस चले जाते थे। परन्तु उस दिन सोमवती ग्रमावस होनेके कारण एक तो ग्रधिक सख्यामें लोग बाहरसे आये थे, और दूसरे बादल घिरे रहनेके कारण वर्षाके डरसे बहुत कम लोग लौट कर गये थे।

सम्भव था कि यह अनिश्चयकी स्थिति देर तक बनी रहती, परन्तु वर्षा की बडी-बड़ी बूँदोने सहसा समस्याको सुलझा दिया। समस्याके इस तरह समाधानकी न चौकीदारने कल्पना की थी और न स्वय उन लोगोने जो बूँदे पडनी आरम्भ होते ही अपना-अपना सामान उठा कर उन कमरोमे घुस गये जिनमे दूसरे लोग पहलेसे ठहरे हुए थे। चौकीदारने रोकनेकी चेष्टा की, अन्दर वालोने विरोध किया, दो-एक जगह गाली-गलौच और हाथापाई भी हुई, पर क्योकि यह कदम सामूहिक रूपसे उठाया गया था और हरएक के सामने दूसरोका दृष्टान्त मौजूद था, इसलिए जो एक बार जिस कमरेमें पहुँच गया वह फिर वहाँसे बाहर नही निकला। इस तरह कुछ कमरोमें तो तीन-तीन चार-चार नये आदमी पहुँच गये और कुछ कमरे बिल्कुल ही बचे रह गये। एक कमरेका अधिकारी, जिसके पास चार अतिथियोने आश्रय ले लिया था, बाहर निकल कर चौकीदारको धमकाने और उससे अपनी अठन्नी वापस माँगने लगा तो चौकीदारने घोषणा कर दी कि उसे चाबियोका गुच्छा मिल गया है और उसने सभी बद कमरे खोल दिये। कमरे खुलनेकी सूचना पाकर भी बलात् कमरोमे घुसे हुए लोग अपनी अपनी जगहसे नही हिले। अलबत्ता जिन्होने चौकीदारको पैसे देकर कमरे लिये थे, उनमेंसे कई व्यक्ति एक-एक स्वतत्र कमरेपर अधिकार करनेके इरादेसे बिस्तर लपेट कर बाहर निकल आये, और इस तरह पाँच कमरोंके लिए सात आठ अधिकारी बाहर पहुँच गये। उनमे फिर गाली-गलौच और हाथापाई हुई और दो एकने उसी तरह दूसरो-द्वारा अधिकृत कमरोके आधे आधे भाग पर कब्जा जमा लिया जैसे कुछ देर पहले बाहरके लोगोने उनके कमरोमें आकर किया था। जो एक सज्जन भद्रतापूर्वक लौट आये, उन्होने देखा कि उनकी सुरक्षित जगह पर तब तक नवागन्तुकोने बिस्तर बिछा

लिये हैं, जो उतनी सी देरमें सो भी गये है, और उनके लिए दहलीजके पा
जगह छोड दी गयी है जहाँ वर्षाकी हल्की-हल्की फुहार आ रही है।

खैर, थोडी देरमे हगामा शान्त हो गया। रातकी नि स्तब्धतामें अब सतलुजके बहनेका शब्द सुनायी दे रहा था या वर्षाकी बूँदोका शब्द। बीच-बीचमें दूरसे खच्चरोकी घटियोकी आवाज़ सुनायी देने लगती थी जो क्रमश पास आती जाती थी। फिर लकड़ीके पुल पर खच्चरोंके चलनेका शब्द सुनायी देता था। उसके वाद घटियोकी आवाज़ रुक जाती थी। दरियाके इस पार खच्चर वालोंके डेरे थे।

धर्मशालाके चार नवरके कमरेमें चबूतरे पर एक मद्धम-सा दिया जल रहा था। दियेके पास चबूतरे पर ही एक अधेड उम्रका व्यक्ति लेटा था जिसने चौकीदारको अठन्नी देकर उससे वह कमरा लिया था। चौकीदारने अठन्नीके वदले उसे चौधरीका रुतबा दे दिया था, और वहाँ शामसे उसका वही नाम चल रहा था। कमरेमें दिया रखनेके लिए उसने चौकीदारको अलगसे एक इकन्नी दी थी, पर उसमेंसे चौकीदारने तेल पर पच्चीस फीसदी से अधिक खर्च नही किया था, इसलिए दियेकी लौ अब बुझनेको हो रही थी।

जिस समय बाहरसे तीन व्यक्ति उसके कमरेमे घुस आये, उस समय चौधरी दिया बुझा कर सोने जा रहा था। तीन व्यक्तियोको अनधिकार अपने कमरेमें प्रवेश करते देख पहले तो वह कुछ अव्यवस्थित हुआ, फिर उसने साहस वटोर कर उन्हे वतलाया कि वह उसका कमरा है, वे लोग भूलसे वहाँ आ गये हैं। इसपर जव एक नवयुवकने स्थिति स्पष्ट की कि वाहर वर्षा होने लगी है इसलिए वे भीगनेके डरसे उसके कमरेमें शरण ले रहे हैं तो वह कुछ क्षण असन्तोषके भावसे उनकी ओर देखता रहा। फिर वह चौकीदारको आवाज़ देनेके लिए दरवाज़े तक गया। वहाँसे उसने आसपासके कमरोंसे आती हुई झगडेकी आवाज़ें सुनी और वस्तुस्थितिका ठीक परिचय पाकर अपने स्थान पर लौट आया। उसका क्रोध खीझमें वदल गया। पहले उसने निश्चय किया कि उस घटनाकी ओरसे ध्यान

हटाकर दिया बुझा कर सो जाय। परन्तु फिर उसे लगने लगा कि उसने दिया बुझा भी दिया तो उसे नीद नही आयगी। उसके हृदयमें यह भाव व्याप्त हो रहा था कि उसे इस स्थितिके सम्बन्धमें कुछ न कुछ अवश्य कहना या करना चाहिए। वह लेटा हुआ कई क्षण तक चुपचाप आगन्तुकोके चेहरोका अध्ययन करता रहा। नवयुवती दरी पर लेट कर छतकी ओर देख रही थी। एक नवयुवक अपने घुटने पर पुस्तक और पुस्तक पर कागज़ रखकर कुछ लिख रहा था। दूसरा नवयुवक दीवारसे टेक लगाये हल्की-हल्की सीटी बजा रहा था। चौधरी उनके पारस्परिक सम्बन्धके विषयमें कल्पना करने लगा। क्या वे तीनो भाई-बहन थे? वह बहुत ध्यानसे उनके चेहरोकी रेखाओका अध्ययन करने लगा। उसे उनके चेहरोमे कोई समानता दिखायी नही दी। दोनो नवयुवक आकृतिमे एक-दूसरेसे बहुत भिन्न थे। उनकी त्वचा और बालोंके रग भी नही मिलते थे। हाँ, नवयुवती के बालोका रग थोडा एक नवयुवकके बालोंसे मिलता था। परन्तु बालोंका रग इस बातका प्रमाण कैसे माना जा सकता था कि वे भाई-बहन है? फिर उनके साथ घरका कोई और व्यक्ति क्यो नही था? तो क्या वह नवयुवती उनमेंसे किसी एककी पत्नी थी? चौधरीको यह भी सभव प्रतीत नही हुआ क्योकि नवयुवतीके भाव, चेष्टाओ और वस्त्रोमें पत्नीत्व का कोई लक्षण नही था। व्यवहारमें सकोच न रहने पर भी उसके चेहरे पर कौमार्यकी छाया विद्यमान थी। तो क्या. और तीसरी सभावना पर आते ही जैसे चौधरीको निश्चित उत्तर मिल गया। उसे लगा जैसे वह आरम्भसे ही वही बात सोच रहा था। वे लडके अवश्य उस लड़कीको भगा कर लाये थे। उसका तर्क इस विचारकी पुष्टि करने लगा। उन लोगोके पास सामान बहुत थोडा था। उनके चेहरोंसे उद्विग्नता झलक रही थी। फिर वे बहुत थके हुए प्रतीत होते थे। चौधरी निष्कर्ष पर पहुँच कर उठ बैठा। कुछ क्षण वह नैतिक चेतनाकी दृष्टिसे उन्हें देखता रहा। फिर उसने एक नवयुवकको लक्षित करके पूछा, "तुम लोग कहाँसे आये हो?"

उसके शब्द वातावरणकी ध्वनियोंमे खोकर रह गये। नवयुवक उसकी ओर ध्यान न देकर लिखनेमे व्यस्त रहा। चौधरीको लगा कि वह शब्दोंको उच्चारण खुले गलेसे नही कर पाया। उसने गला साफ करके जरा ऊँचे स्वरमें पूछा, "तुम लोग कहाँसे आये हो ?"

इस बार नवयुवकने उसकी ओर जरा देखा और पुन अपने काममें व्यस्त हो गया।

"तुम लोग कहाँसे आये हो ?" चौधरीने उठकर उनके निकट जाते हुए प्रश्न फिरसे दोहराया।

चौधरीके निकट आने पर नवयुवती उठकर बैठ गयी। वह नवयुवक जो दीवारसे टेक लगाकर सीटी बजा रहा था, सीधा हो गया। उसने कुछ उत्तेजित स्वरमे चौधरीसे पूछा, "क्या बात है ? आप क्या चाहते है ?"

ऐसे स्वरमें संबोधित किये जानेसे चौधरीने अपनेको अपमानित अनुभव किया। उसने नवयुवकको तीखी नजरसे देखा। वह उनसे कई प्रश्न पूछनेके लिए तैयार होकर उठा था। पहले प्रश्नका उत्तर पा कर वह दूसरा प्रश्न पूछता कि उनका आपसमें क्या संबन्ध है ! फिर वह पूछता कि वे तत्तापानी किस मतलबसे आये हैं। परन्तु अब वह कुछ न पूछ कर दरवाजेकी ओर चल पडा।

चौधरी इस विचारसे दरवाजेकी ओर चला था कि वह आसपासके लोगोंसे उस सम्बन्धमें बात करके उन्हें साथ ले कर आयगा। पर बाहर वर्षा जोरकी हो रही थी। कमरेसे निकलते ही पूरी तरह भीग जानेका डर था। वह कुछ क्षण अनिश्चित-सा खडा रह कर फिर चबूतरे पर लौट आया। दियेकी लौ अब बहुत मन्द हो गयी थी। किसी भी क्षण उसके बुझ जानेकी संभावना थी। चौधरीको महसूस हो रहा था कि कमरेमे दियेका जलते रहना आवश्यक है। क्यों, इसका उसे कोई चेतन आभास नही था। बस दिया जलता रहना चाहिए, यही अस्पष्ट-सा आभास था।

उसने और तेल मँगवानेके उद्देश्यसे खिडकीके पाससे चौकीदारको आवाज दी। चौकीदारने आवाज़का उत्तर नही दिया तो उसने गला साफ करके फिर आवाज़ दी, "चौकीदार।"

परन्तु चौकीदार रातकी कमाई सँभाल कर अपनी कोठरीमे चला गया था और बाहर मूसलाधार वर्षाका स्वर गूँज रहा था, अत उसकी आवाज़ चौकीदारके कानो तक नही पहुँच सकी। उसने तीसरी बार चेष्टा की पर कोई परिणाम नही निकला। हार कर वह पुन चबूतरे पर लेट गया और दियेकी मद्धम पडती हुई लौको देखने लगा।

सहसा दियेकी लौ झपक कर बुझ गयी। अँधेरा हो जानेसे चौधरीके हृदय पर आघात-सा लगा। बादल ज़ोरसे गरजा। चौधरी उठ कर बैठ गया। वर्षाका स्वर और भी तेज़ हो गया था। सावनके बादलोका इस तरह बरसना चौधरीको अस्वाभाविक लग रहा था। प्रकृति जैसे जानबूझ कर अनैतिकताको प्रश्रय दे रही थी। कमरेके दूसरे भागमें जरा भी आहट सुनायी देती तो चौधरीकी आँखे घूर-घूर कर उस दिशाकी ओर देखने लगती, यद्यपि अँधेरा इतना था कि अपना हाथ भी देख पाना असम्भव था। आँखें देखनेमें जितनी असमर्थ थी, चौधरीकी कल्पना उस समय उतनी ही उर्वर हो कर उसे कितना कुछ दिखला रही थी। उसने पुनः एक बार सो जानेकी चेष्टा की पर उसे नीद नही आयी। वह देर तक करवटें बदलता पड़ा रहा।

कुछ समयके बाद कमरेके दूसरे भागसे नवयुवकोके धीमे स्वरमे बातचीत करनेका शब्द सुनायी देने लगा। चौधरीकी सपूर्ण चेतना उस ओर उन्मुख हो उठी। परन्तु बहुत चेष्टा करके भी वह उनकी बातचीतका आशय नही समझ सका। एक तो शब्दोका उच्चारण स्पष्ट नही था और दूसरे उनकी बातचीतमें कोई ऐसा सूत्र नही मिल रहा था, जिसे पकड कर चौधरी की कल्पना आगे बढ सकती। बातचीतमे बार-बार सुकेत शब्दका प्रयोग होनेसे वह इतना ही समझ सका कि या तो वे लोग सुकेतसे आये है, या सुकेत

जा रहे हैं। कुछ देरके बाद बातचीत रुक गयी और चौधरीके पास आगे बढनेके लिए अपनी कल्पना ही रह गयी।

धीरे-धीरे वर्षा धीमी पड गयी। जब वर्षाका शब्द बिल्कुल रुक गया तो चौधरी बाहर जानेके उद्देश्यसे अपने स्थानसे उठा। उसने टटोल कर अपने कोटकी जेबसे माचिसकी डिबिया निकाली और एक दियासलाई जलायी। दियासलाई कुछ अस्पष्ट-सी रेखाएँ दिखाकर जलते ही बुझ गयी। उसने दूसरी दियासलाई जलायी और हाथकी ओट करके उसे ठीकसे लौ पकड लेने दिया। हाथ हटाने पर उसने देखा कि वे तीनो दो दरियाँ साथ-साथ बिछा कर उन पर सो गये हैं। वह कुछ क्षण असमजसमें खडा रहा। फिर कमरेसे बाहर निकल आया।

हल्की-हल्की फुहार अब भी पड रही थी। सतलुजके बहनेका शब्द अब अधिक स्पष्ट सुनायी दे रहा था। बाहर आते ही चौधरीके शरीरमें हल्की-सी कंपकँपी दौड गयी। आसपासके कमरोका वातावरण नि स्तब्ध प्रतीत हो रहा था। केवल दो नबर कमरेके बाहर बैठी हुई एक रोगिणी कुतिया बिलबिला रही थी। चौधरीने क्षणभर रुक कर सोचा और फिर धीरे-धीरे चार नबर कमरेकी दहलीज तक चला गया। उस कमरेमे कई बिस्तर बिछे हुए थे—एक बिस्तर तो बिल्कुल दहलीज़के साथ सटा हुआ था। चौधरीने एक दियासलाई जलायी। उसके दियासलाई जलाते ही दहलीज़के पास सोया हुआ व्यक्ति हडबडा कर बोल उठा, "कौन है? क्या कर रहा है इस वक्त यहाँ?"

चौधरी वहाँसे उल्टे पाँव लौट पडा। उसका फिर और किसी कमरेमें जानेका साहस नही हुआ। उसने क्षण भर अपने कमरेके बाहर रुक कर सोचा और यह निश्चय किया कि लोगोको जगा कर उनसे बात करनेकी अपेक्षा चौकीदारको जगा कर उससे बात करना ज्यादा अच्छा है। वह चौकीदारकी कोठरीकी ओर चल दिया। वहाँ पहुँच कर उसने दो बार उसका दरवाजा खटखटाया पर चौकीदारकी आँख नही खुली। चौधरी साथ उसे आवाज़ भी देने लगा।

तीन चार बार आवाज देने पर चौकीदार थोडा कुनमुनाया । उसने, वाक्यके साथ गाली जोड़ कर अन्दरसे पूछा कि कौन इतनी रात गये उसकी नीद खराब कर रहा है । चौधरीने यथासम्भव थोडे शब्दोमे उसे बतलाया कि वह चार नबर कमरे वाला चौधरी है, जिसने अठन्नी देकर उससे कमरा लिया था । फिर वह सक्षिप्त-सी भूमिकाके साथ बतलाने लगा कि उसके कमरेमें एक नवयुवती और दो नवयुवक सोये हुए है, जिनके सम्बन्धमें वह उससे कुछ बात करना चाहता है ।

"अब सो जाओ जी, सवेरे बात करना", चौकीदार निद्रित और उकताये हुए स्वरमे बोला, "सब कमरोमे एक-सा ही हाल है ।" और उसने पुन वाक्यके साथ गाली जोड कर कहा कि सारा अपराध बादलोका है, जिन्होने मौसमके आरम्भमें ही ऐसी झडी लगा दी है ।"

"तुम बाहर निकल कर बात तो सुनो", चौधरी ने झुंझला कर कहा "मुझे उन लोगो पर कुछ शक हो रहा है । मेरा ख्याल है कि वे लडके उस लडकीको भगा कर लाये है "

परन्तु उत्तरमे चौकीदारके खुर्राटे भरनेका शब्द सुनायी देने लगा । चौधरी बहुत कठिनतासे अपनी झुंझलाहट दवा कर वहाँसे लौटा । कुछ क्षण वह फिर अपनी दहलीज़के बाहर रुका रहा । अब उसने निश्चय किया कि वह सवेरे तडके ही उठ कर लोगोसे न केवल अपने सन्देहकी बात करेगा, बल्कि चौकीदारकी भी शिकायत करेगा कि वह धर्मशालाकी चौकीदारी करनेके लायक कतई नही ।

उस समय पासके खच्चर वालोके डेरेसे एक नवयुवकके गानेका शब्द सुनायी दे रहा था । डेरेमे टीनके छप्परके नीचे उन लोगोने शायद रोशनी रखनेके लिए आग जला रखी थी । आगकी लपटे सामनेकी पहाडियो पर अस्थिर रोशनी डाल रही थी । वर्षाके वाद ज़मीनमेंसे हल्की-हल्की वास उठने लगी थी । चौधरी भीगे हुए वातावरण पर एक असतुष्ट दृष्टि डाल

कर अपने चबूतरे पर लौट आया। बहुत देर बाद जब उसकी आँख लगी तो रात आधीसे अधिक बीत चुकी थी।

सबेरे जिस समय चौधरीकी आँख खुली, दिन काफी चढ चुका था यद्यपि बादल छाये रहनेके कारण लगता था कि अभी तडका ही है। उठते ही पहले चौधरीकी नज़र कमरेके दूसरे भागकी ओर गयी। वे लोग वहाँ नही थे। उनका सामान भी नही था। केवल दो एक मसले हुए कागज इधर-उधर पडे थे। चौधरी जल्दीसे उठ कर बाहर निकल आया। उसकी दृष्टि अनायास सुकेत जाने वाली सडककी ओर उठ गयी। कुछ खच्चरें सुकेतकी ओरसे आ रही थी। दो एक मजदूर आलुओंके बोरे लिये आ रहे थे। उसी समय चौकीदार पासके एक कमरेसे निकला। चौधरीने उससे उन लोगोके सबन्धमें पूछा और यह जान कर कि वे दो घण्टे पहले वहाँसे चले गये है, वह उसे उसकी अनवधानताके लिए डाँटने लगा। चौधरीका विवरण सुन कर चौकीदार ज़रा तुनक कर बोला, "मै धर्मशालाकी चौकीदारी करता हूँ जी, यहाँ आने वालोंके धर्म ईमानकी चौकीदारी नही करता। मुझे क्या पता कि कौन क्या है और कौन कैसा है। अभी चार नबर वाले कह रहे थे कि रातको कोई चोर उनके कमरेमे आया था और दियासलाई जला कर इधर उधर देख रहा था। एक बाबू उसे पकडनेके लिए उठा तो वह भाग गया। बताइये, मै किस-किसके पीछे जा सकता हूँ ? मेरा काम आप लोगोको कमरे दे देना है, बस और कुछ नही।"

चार नबरकी घटनाके विषयमे सुन कर चौधरी चुप रह गया। उस घटनाकी वास्तविकतासे वह अकेला ही परिचित था। आशकाकी हल्की सी अनुभूतिके साथ उसके मनमें यह ग्लानि भी उत्पन्न हुई कि लोग किस तरह वास्तविकतासे अपरिचित होते हुए किसी विषयमे यो ही कहानी गढ लेते है। वह कमरेमे लौट आया। ज़मीन पर जो मसले हुए कागज इधर उधर पडे थे, उनमेंसे एक कागज उसने उठा लिया। उसमें कुछ रकमे लिख कर रुपये पैसेका हिसाब किया गया था। उसे फेंक कर उसने दूसरा

कागज उठाया। उस पर अँग्रेजीमें कुछ लिखा था। चौधरी कुछ क्षण उन शब्दोकी आकृतियाँ देखता रहा। फिर वह चश्मे पर जानेके इरादेसे नहानेका सामान लेकर बाहर निकला और कमरेको ताला लगाने लगा। पास ही एक बाबूस्वरूप व्यक्ति कधे पर तौलिया डाले खडा दातुन कर रहा था। चौधरीने ताला बन्द न करके दरवाजा खोल लिया और अन्दर जाकर वह मसला हुआ कागज उठा लाया, जिस पर अग्रेजीमें कुछ लिखा था। अब निकल कर उसने ताला लगाया और उस बाबूस्वरूप व्यक्तिके निकट जा कर कागज़ उसकी ओर बढाते हुए कहा, "बाबू साहब, जरा पढिये इस कागज़ पर क्या लिखा है।" साथ ही वह उस कागजका इतिहास सुनाने लगा कि दो लडके एक लडकीके साथ रातको उसके कमरेमें ठहरे थे, जो सबेरे तडके ही उठ कर वहाँसे चले गये है, उनकी गतिविधिसे प्रतीत होता था कि वे लडके उस लडकीको भगा कर लाये है; और उस कागज़की लिपि उन्ही लडकोमेंसे एकके हाथकी है।

चौधरीके विवरणके समाप्त होने तक उस व्यक्तिने कागज़ ऊपरसे नीचे तक पढ लिया था। चौधरीका ध्यान उसके चेहरेकी ओर नही था, अत वह उसकी बदलती हुई भगिमाको लक्षित नही कर सका। चौधरीके बात समाप्त करते ही उस पर एक ऐसी दृष्टि डाल कर जैसे उस पर उसे पागल होनेका सन्देह हो, उस व्यक्तिने कागज़ उसके हाथमें दे दिया और हटानेके ढगसे हाथ हिला कर कहा, "जाओ।"

उस व्यक्तिका ऐसा व्यवहार चौधरीको असह्य लगा। परन्तु एक अपरिचित जगह पर उसने झगडा मोल लेना उचित नही समझा। किसी तरह अपना आवेश दबा कर तौलिया सँभाले हुए वह गधकके चश्मेकी ओर चल दिया।

जिस समय चौधरी नहानेके लिए गन्धकके चश्मेमें बैठा, वर्षाकी हल्की-हल्की बूँदें फिर पडने लगी। उस समय वहाँ उसके अतिरिक्त एक ही और व्यक्ति था, जो अब नहा कर लौटनेकी तैयारी कर रहा था। सुकेतके

रास्ते पर दूर खच्चरोकी घटियाँ सुनायी दे रही थीं। वर्षा आरम्भ हो जानेके कारण कुछ लोग उस रास्ते पर भागते हुए आ रहे थे और धर्मशाला की दिशामें जा रहे थे। क्षण भर चौधरी कुछ आशाके साथ उस ओर देखता रहा। उस रास्ते पर दूर आगे जाती हुई तीन आकृतियोकी कल्पनासे उसकी चेतनामें फिर कुछ विह्वलता-सी भर गयी। उसने चश्मेसे निकल कर अपनी कमीज़ उठायी और उसे एक जगह पत्थरकी ओटमें रख कर उसकी जेबसे वह कागज़ निकाल लिया। जो व्यक्ति नहा कर लौट रहा था, उसे सम्बोधित करते हुए उसने पूछा, "भाई साहब, यह कागज ज़रा पढ दीजिएगा ?"

इस बार उसने कागज़का इतिहास पहलेसे सुनाना उचित नही समझा।

उस व्यक्तिने कागज पढा और चौधरीको बतलाया कि उस पर केवल कुछ पुस्तको और स्थानोंके नाम लिखे हैं। चौधरी बहुत उत्सुकतापूर्वक उस कागज़की लिपिका अर्थ जाननेकी प्रतीक्षा कर रहा था। यह जान कर उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे सहसा उसके पाससे कुछ खो गया हो। उसके स्वरमें कुछ उलझन और अविश्वासकी ध्वनि आ गयी, जब उसने कहा, "ज़रा ऊपरसे पढ कर बता दीजिए, मेरा तो ख्याल था कि "

वह व्यक्ति आरम्भसे अर्थ करने लगा, "खेती और समाजवाद", दो प्रतियाँ नालधेरा, दो प्रतियाँ दुर्गापुर, तीन प्रतियाँ वसन्तपुर। 'सामूहिक खेती बाडी", एक प्रति नालधेरा, दो प्रतियाँ दुर्गापुर, दो प्रतियाँ वसन्तपुर "

और वह लबी सूची पढता गया। चौधरी अवाक् भावसे उसकी ओर देखता रहा। जब वह व्यक्ति कागज उसके हाथमे दे कर अपने रास्ते पर चला गया, तो वह फिरसे आ कर गन्धकके चश्मेमें बैठ गया। दो फुटके अन्तर पर सतलुजकी धार आवाज़ करती हुई बह रही थी। आस-पासकी मिट्टीमेंसे काफी बास उठ रही थी। चौधरी गन्धकके धुएँमें घिरा हुआ गर्म पानी अपने शरीर पर मलता रहा। उसकी नजर अब भी सुकेत जाने वाले रास्ते पर लगी थी और वह रह-रह कर सोच रहा था कि उस कागज़ की लिपिका उन लोगोके साथ क्या सम्बन्ध हो सकता है और आखिर वे एक-दूसरे का क्या लगते हैं ?

●

उसकी रोटी

बालोको पता था कि अभी बसके आनेमे बहुत देर है, फिर भी पल्लेसे पसीना पोछते हुए उसकी आँखे बार-बार सडककी तरफ उठ जाती थी। नकोदर रोडके उस भागमे आसपास कोई छायादार पेड भी नही था। वहाँकी जमीन भी बजर और ऊबड़-खाबड थी—खेत तो वहाँसे तीस-चालीस गजके फासलेसे शुरू होते थे। और खेतोमे भी उन दिनो कुछ नही था। फसल कटनेके बाद केवल ज़मीनकी गोडाई ही की गयी थी, इसलिए चारो ओर बस मटियालापन ही दिखायी देता था। गर्मीसे पिघली हुई नकोदर रोडका हल्का सुरमई रग ही उस मटियालेपनसे ज़रा भिन्न था। जहाँ बालो खडी थी वहाँसे थोडे अतर पर एक लकडीका खोखा था। उसमे दो बडे-बडे पानीके मटकोके पास एक अधेड-सा व्यक्ति ऊँघ रहा था। ऊँघमे जब वह आगेको गिरनेको होता तो सहसा झटका खाकर सँभल जाता। फिर आस-पासके वातावरण पर एक उदास-सी नज़र डाल कर और अँगौछेसे गलेका पसीना पोछकर वैसे ही ऊँघने लगता। एक ओर अढाई तीन फुटके विस्तारमे खोखेकी छाया फैली थी और एक भिखमगा, जिसकी दाढी काफी बढी हुई थी, वहाँ खोखेसे टेक लगाये बैठा ललचायी आँखोसे बालोके हाथोकी ओर देख रहा था। उसके पास ही एक कुत्ता दुबक कर बैठा था और उसकी नज़रे भी बालोके हाथोकी ओर ही लगी हुई थी।

बालोने अपने हाथकी रोटीको अपने मैले आँचलमे लपेट रखा था। वह उसे बद नज़रसे बचाये रखना चाहती थी। रोटी वह अपने पति सुच्च सिह ड्राइवरके लिए लायी थी, मगर देर हो जानेसे सुच्चा सिहकी बस निकल गयी थी और वह अब इस इतजारमे खडी थी कि बस नकोदरसे

हो कर लौट आये तो वह उसे रोटी दे दे। वह जानती थी कि उसके वक्त पर वहाँ न पहुँचनेसे सुच्चा सिहने बहुत गुस्सा किया होगा। वैसे ही उसकी बस जालधरसे चल कर दो बजे वहाँ आती थी और उसे नकोदर पहुँच कर रोटी खानेमे तीन साढे तीन बज जाते थे। वह उसकी रातकी रोटी भी उसे साथ ही दे जाती थी, जो वह आखिरी फेरेमे नकोदर पहुँच कर खाया करता था। सात दिनमे छह दिन सुच्चा सिहकी ड्यूटी रहती थी और छहो दिन यही सिलसिला चलता था। बालो एक सवा एक बजेके करीब रोटी लेकर गाँवसे चलती थी और धूपमे आधा कोस रास्ता तय करके दो बजेसे पहले सडकके किनारे पहुँच जाती थी। अगर कभी उसे दो-चार मिनिटकी देर हो जाती तो सुच्चा सिह किसी न किसी बहानेसे बसको वहाँ रोके रखता मगर उसके आते ही उसे डाँटने लगता कि वह सरकारी नौकरी करता है, उसके बापकी नौकरी नही करता कि उसकी इतज़ारमें बस खडी रखा करे। वह चुपचाप उसकी डाँट सुन लेती और रोटी उसे दे देती।

परन्तु आज वह दो चार मिनिट नही, दो अढाई घटेकी देरसे आयी थी। यह जानते हुए भी कि उस समय वहाँ पहुँचनेका कोई मतलब नही, वह उद्विग्नताकी मारी घरसे चल दी थी—जैसे उसे लग रहा था कि वह जितना ज्यादा समय सडकके किनारे इतजार करती हुई वितायगी, सुच्चा सिहकी नाराज़गी उतनी ही कम हो जायगी। यह तो निश्चित ही था कि सुच्चा सिहने दिनकी रोटी नकोदरके किसी तदूरमें खा ली होगी। परन्तु उसे रातकी रोटी देना ज़रूरी था और साथ ही वह सारी वात वताना भी ज़रूरी था जिसकी वजहसे उसे देर हुई थी। वह मन ही मन पूरी घटनाको दोहरा रही थी और सोच रही थी कि सुच्चा सिहसे वात किस तरह कही जाय कि उसे सब कुछ पता भी चल जाय और वह खामखाह तैशमें भी न आय। वह जानती थी कि सुच्चा सिहका गुस्सा वहुत बुरा है और साथ ही यह भी जानती थी कि जगीसे कुछ कहा जाय तो वह बगैर गँडासेके वात नही करता।

जगीके वारेमे गाँवमे बहुत-सी बातें सुनी जाती थी। पिछले साल वह साथके गाँवकी एक मेहरीको भगाकर ले गया था और न जाने कहाँ ले जाकर बेच आया था। फिर नकोदरके पडित जीवारामके साथ उसकी लडाई हुई तो उसने उसे कत्ल करवा दिया। गाँवके लोग उससे दूर दूर रहते थे मगर उससे बिगाड कर नही रखते थे। मगर उसकी लाख बुराइयाँ सुन कर भी बालोने यह कभी नही सोचा था कि वह इतनी गिरी हुई हरकत भी कर सकता है कि चौदह सालकी जिंदाको अकेली देख कर उसे छेडनेकी कोशिश करे। वह वैसे भी जिंदासे तिगुनी उम्रका था और अभी साल पहले तक उसे बेटी बेटी कह कर बुलाया करता था। मगर आज उस की यह हिम्मत पड गयी कि उसने खेतमे जिंदाका हाथ पकड लिया ?

उसने जिंदाको नन्तीके यहाँसे उपले माँग लानेको भेजा था। इनका घर खेतोके एक सिरे पर था और गाँवके वाकी घर खेतोके दूसरे सिरे पर थे। वह आटा गूँध कर इतज़ार कर रही थी कि जिंदा उपले ले कर आये तो वह जल्दीसे रोटियाँ सेक ले जिससे बसके समयसे पहले सडक पर पहुँच जाय। मगर जिंदा जब आयी तो उसके हाथ खाली थे और उसके चेहरेका रग हल्दीकी तरह पीला हो रहा था। जब तक जिंदा नही आयी थी तब तक उसे उस पर गुस्सा आ रहा था। मगर उसे देखते ही उसका दिल अज्ञात आशकासे भर गया।

"हाय री, क्या हुआ है जिंदो, ऐसी क्यो हो रही है ? उपले क्यो नही लायी ?" उसने ध्यानसे उसके चेहरेको देखते हुए पूछा।

जिंदा चुपचाप उसके पास आ कर बैठ गयी और बाँहोमें सिर डाल कर रोने लगी।

"खसम खानी, कुछ वतायगी भी क्या वात हुई है ?"

जिंदा कुछ नही बोली। केवल उसके रोनेका स्वर तेज़ हो गया।

"वता किसीने कुछ कहा है ?" उसने अब नरम स्वरमें उसके सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा।

"तू मुझे उपले वुपले लेने मत भेजा कर", ज़िंदाँ रोनेके वीच उखडी उखडी आवाज़में वोली, "मैं आजसे घरसे वाहर कही नहीं जाऊँगी। मुआ जगी मुझसे कहता था " और रोनेका स्वर उभर आनेसे वह आगे कुछ नही कह सकी।

"क्या कहता था जगी वता वोल " वह वोझके नीचे दव कर आवेशके साथ वोली, "खसम खानी, वोलती क्यो नही ?"

"कहता था", जिदाने सिसकते हुए कहा, 'आ जिंदा, अदर चलकर शरवत पी ले। आज तू वहुत सोहणी लग रही है "

"मुआ कमज़ात !" वह सहसा वरस पडी, "मुएको अपनी माँ रडी नही सोहणी लगती ? मुएकी नजरमें कीडे पडें। निपूते, तेरे घरमें लडकी होती तो इससे वडी होती, तेरे दीदे फटें ! फिर तू ने क्या कहा ?"

"मैंने कहा चाचा मुझे प्यास नही है", जिंदा कुछ स्वस्थ होती हुई वोली।

"फिर ?"

"कहने लगा प्यास नही है तो भी एक घूँट पीती जा। चाचाका शरवत पीएगी तो याद करेगी। और मेरी वाँह पकड कर खीचने लगा।"

"हाय रे मौत मरे, तेरा कुछ न रहे, तेरे घरमें आग लगे। आने दे सुच्चा सिंहको। मैं तेरी वोटी वोटी न नुचवाऊँ तो कहना, जल मरे ! तू सोया सो ही जाए। हाँ, फिर ?

"मैं वाँह छुडाने लगी तो मुझे मिठाईका लालच देने लगा। मेरे हाथसे उपले गिर गये। मैंने उन्हे वहीं पडे रहने दिया और वाँह छुडा कर भाग आयी।"

उसने ग़ौरसे जिंदाको सिरसे पैर तक देखा और फिर अपने साथ सटा लिया।

"और तो नही उसने कुछ कहा ?"

"जव मैं चली तो पीछेसे ही ही करके वोला, वेटी तू वुरा मान गयी ? अपने उपले तो ले जा। मैं तो तेरे साथ हँसी कर रहा था। तू इतना भी

नही समझती ? आ इधर । अच्छा नही आती, तो न आ । मैं आज तेरे घर आकर तेरी बहनसे तेरी शिकायत करूँगा कि जिंदा बडी गुस्ताख हो गयी है, बडोका कहा नही मानती । मगर मैंने न उसे जवाब दिया, न मुड कर उसकी तरफ देखा । सीधी घर चली आयी ।"

"अच्छा किया । मैं मुएकी हड्डी पसली एक करा कर छोड़ूँगी । तू आने दे सुच्चा सिहको । मैं अभी जाकर उससे बात करूँगी । इसे यह नही पता कि जिंदा सुच्चा सिह ड्राइवरकी साली है, जरा सोच समझ कर हाथ लगाऊँ ।" और फिर कुछ सोच कर उसने पूछा, "वहाँ तुझे और किसीने तो नही देखा ?"

"नही । खेतोंके इस तरफ आमके पेडके नीचे राघू चाचा बैठा हुक्का पी रहा था । उसने देख कर पूछा कि बेटी इस वक्त धूपमें कहाँसे आ रही है ? मैंने कहा कि बहनके पेटमें दर्द था, हकीमजीसे चूरन लेने गयी थी । उसने कहा आ मेरे पास बैठ । मगर मैं बैठी नही, घर चली आयी ।"

"अच्छा किया । जगी मुआ तो शोहदा है । उसके साथ अपना नाम लग जाय तो अपनी ही इज्जत जायगी । उस सिर जलेका क्या जाना है ? लोगोको तो करनेको बात चाहिए ।"

और उसके बाद उपले ला कर खाना बनानेमे उसे काफी देर हो गयी । जिस समय उसने कटोरेमें आलूकी तरकारी और आमका अचार रख कर उसे रोटियोके साथ खद्दरके टुकडेमें लपेटा, उस समय उसे पता था कि दो कबके बज चुके हैं और वह सुच्चा सिहको दोपहरकी रोटी नही पहुँचा सकती । इसलिए वह लपेटी हुई रोटी रख कर इधर उधरके काम करने लगी । मगर जब वह बिल्कुल खाली हो गयी तो उससे यह नही हो सका कि बसके लौटनेके समयका अदाज करके घरसे चले । मुश्किलसे साढे तीन चार ही बजे थे कि वह चलनेके लिए तैयार हो गयी ।

"बहन, तू कब तक वापस आयगी ?" जिंदाने उससे पूछा ।

"दिन ढलनेसे पहले ही आ जाऊँगी ।"

"जल्दी आ जाना। मुझे अकेले डर लगेगा।"

"डर काहेका है री?" वह दिखावटी साहसके साथ बोली, "किसकी हिम्मत है जो तेरी तरफ आँख उठा कर भी देखे? सुच्चा सिंहको पता चलेगा तो वह उसे कच्चा ही नही चबा जायगा? वैसे मुझे ज़्यादा देर नही लगेगी। साँझ होते होते घर पहुँच जाऊँगी। तू ऐसा करना कि अंदरसे साँकल लगा लेना। समझी? कोई दरवाज़ा खटखटाये तो पहले नाम पूछ लेना।" और फिर उसने जरा धीमे स्वरमें कहा, "और अगर वह आये और मेरे बारेमें पूछे कि कहाँ गयी है तो कहना कि सुच्चा सिंहको बुलाने गयी है। समझी? या नही। तू उससे कुछ नही कहना। अंदरसे जवाब ही नही देना। समझी? वैसे मेरा ख्याल नही कि वह आये। पर खैर तू ध्यानसे रहना।"

जब वह दहलीजके पास पहुँची तो जिंदाने पीछेसे कहा, "बहन, मेरा दिल धडक रहा है।"

"पागल हुई है?" उसने उसे प्यारके साथ झिडका, "साथ ही गाँव है फिर तुझे डर किस बातका है? और तू आप भी मुटियार है, इस तरह हौसला छोडती है?"

मगर जिंदाको दिलासा दे कर भी उसकी अपनी तसल्ली नही हुई। सडकके किनारे पहुँचनेके क्षणसे ही वह चाह रही थी कि किसी तरह बस जल्दी लौट आय जिससे वह रोटी दे कर उडती हुई जिंदाके पास घर पहुँच जाय।

"वीरा, दो बजे वाली बसको गये कितनी देर हुई है?" उसने भिखमंगे को लक्षित करके पूछा जिसकी आँखें अब भी उसके हाथकी रोटी वाली पोटली पर टिकी हुई थी। धूपकी चुभन अभी कम नही हुई थी, यद्यपि खोखेकी छाया अब पहलेसे काफी लंबी हो गयी थी। कुत्ता प्याऊके तख्तेके नीचे जमा पानीको मुँह लगाकर अब उसके आसपास चक्कर काट रहा था।

"पता नही भैणा", भिखमंगेने कहा, "कई बसें आती है कई जाती हैं। यहाँ कौन घडीका हिसाब है?"

बालो चुप कर रही । एक बस थोडी देर पहले उसके सामने ही नकोदरकी तरफ गयी थी । धूलके फैलावके दोनो ओर उसे लग रहा था कि दो अलग अलग दुनियाएँ है । बस एक दुनियासे आती है और दूसरी दुनियाकी तरफ चली जाती है । कैसी होगी वे दुनियाएँ जहाँ बडे-बडे बाजार है, हर चीजकी दुकाने है और जहाँ एक ड्राइवरको अपनी आमदनी का तीन चौथाई हिस्सा खर्च करके भी तसल्ली नही मिलती ? देवी एक दिन उससे कह रहा था कि सुच्चा सिहने नकोदरमे एक रखेल रख रखी है । उसका कितना मन था कि वह एक बार उस औरतको देखे जिससे उसे पता चल जाय कि एक रखेलमें क्या होता है जो घरकी औरतमे नही होता, और जिसे पानेके लिए एक आदमी घर-बारकी तरफ़ इतना बेपर्वाह हो सकता है ? उसने एक बार सुच्चा सिहसे कहा कि मुझे शहर दिखा ला, तो उसने उसे डाँट कर जवाब दिया, "क्यो, तेरे पर निकल रहे है ? घरमे तुझे चैन नही पडता ? सुच्चा सिंह वह मर्द नही है कि औरतकी बाँह पकड कर सडको पर घुमाता फिरे । ऐसा शौक है तो दूसरा खसम कर ले । मेरी तरफसे खुली छुट्टी है ।"

उस दिनके बाद वह यह बात जबान पर भी नही लायी थी । सुच्चा सिंह कैसा भी हो, उसके लिए वही सब कुछ था । वह उसे गालियाँ दे लेता था, मार पीट लेता था, फिर भी उसे उससे इतना प्यार तो था कि हर महीने तनख़ाह मिलने पर उसे बीस रुपये दे जाता था । लाख बुरी कह कर भी वह उसे अपनी घर वाली तो समझता था ! वह जबानका कडवा भले ही हो, दिलका बुरा कतई नही था । वह उसके जिंदाको घरमें रख लेने पर अक्सर कुढा करता था, मगर आप ही पिछले महीने उसके लिए काँचकी चूडियाँ और अढाई गज़ मलमल लाकर दे गया था ।

एक बस धूल उडाती हुई क्षितिजके उस छोरसे इस ओरको आ रही थी । बालोने दूरसे ही पहचान लिया कि वह सुच्चा सिंह वाली बस नही है । फिर भी जब तक बस पास नही आ गयी, वह उत्सुक आँखोंसे उसकी

ओर देखती रही। बस प्याऊके सामने आ कर रुक गयी। एक आदमी प्याज़ और शलजमका गट्ठर लिये हुए वहाँ उतरा। कण्डक्टरने ज़ोरसे दरवाजा बद किया और बस आगे चल दी। जो आदमी बस से उतरा था उसने प्याऊके पास जाकर प्याऊ वाले को जगाया और चुल्लूसे दो लोटे पानी पी कर मूँछे साफ करता हुआ अपने गट्ठरके पास आ गया।

"वीरा, नकोदरसे अगली बस कितनी देर तक आयगी ?" बालोने दो कदम आगे बढकर उस व्यक्तिसे पूछा।

"हर घटेके बाद बस चलती है माई", वह बोला, "तुझे कहाँ जाना है ?"

"जाना कही नही वीरा, बसकी इतज़ार करनी है। सुच्चा सिंह ड्राइवर मेरा घर वाला है। उसकी रोटी देनी है।"

"अच्छा, सुच्चा स्यो !" और उस व्यक्तिके ओठो पर ख़ास तरह की मुसकराहट फैल गयी।

"तू उसे जानता है ?"

"उसे नकोदरमें कौन नही जानता ?"

बालोको उसका कहनेका ढग कुछ ऐसा लगा कि वह चुप हो रही। सुच्चा सिंहके बारेमें जिन बातोको वह खुद जानती थी उन्ह दूसरोंके मुँहसे सुनना उसे गवारा नही था। उसकी समझ में नही आता था कि दूसरोको क्या अधिकार है कि वे उसके बारे में इस तरहसे बात करें ? जब वह उसकी घरवाली होकर उसे बुरा नही समझती तो दूसरोको क्यो उसे देख कर जलन होती है ? वह आप कमाता है, अपनी कमाईसे जो चाहे करता है, लोगोको उससे मतलब ?

"सुच्चा सिंह शायद अगली बस ले कर आयगा", वह व्यक्ति बोला।

"हाँ।"

"बडा ज़ालिम है जो तुझसे इस तरह इतज़ार कराता है।"

"चल वीरा, अपने रास्ते चल !" बालो चिढे हुए स्वरमे बोली, "वह बेचारा क्या इतज़ार करायगा ? मुझे ही रोटी लानेमें देर हो गयी थी

जिससे उसकी बस निकल कर चली गयी। वह बेचारा सबेरेसे अब तक भूखा बैठा होगा।"

"भूखा ? कौन सुच्चा स्यो ?" और वह व्यक्ति दाँत निकाल कर हँस दिया। वालोने उसकी ओरसे मुँह दूसरी तरफ कर लिया। "या साईं सच्चे !" कह कर उस व्यक्तिने अपना गट्ठर सिर पर उठा लिया और खेतोकी ओरकी पगडडी पर चल दिया। बालोकी दायी टाँग सो गयी थी। उसने भार दूसरी टाँग पर बदलते हुए एक लबी साँस ली और दूर तकके वीरानेको देखने लगी।

न जाने कितनी देर बाद क्षितिजके उसी कोनेसे दूसरी बस प्रकट हुई। तब तक खडे खडे बालोके पैरोकी एडियाँ दुखने लगी थी। बसको आते देख कर वह पोटलीका कपडा ठीक करने लगी। उसे खेद हो रहा था कि वह रोटियाँ कुछ और देरसे क्यो नही बना कर लायी, जिससे वे रात तक जरा और ताज़ा रहती। सुच्चा सिहको कडाह प्रशादका इतना शौक है, उसे क्यो ध्यान नही आया कि आज उसके लिए थोडा कडाह प्रशाद ही बना लाती खैर कल गुरपरब है, कल वह जरूर उसके लिए कडाह प्रशाद बना कर लायगी।

पीछे गर्दकी लबी लकीर छोडती हुई बस पास आती जा रही थी। बालोने बीस गज़ दूरसे ही सुच्चा सिहका चेहरा देख कर समझ लिया कि वह बहुत नाराज है। उसे देख कर सुच्चा सिहकी भवें तन गयी थी और निचले ओठका कोना दाँतोमे चला गया था। बालोने धडकते दिलसे रोटी वाला हाथ ऊपर उठा दिया। मगर बस उसके पास न रुक कर प्याऊ से भी जरा आगे निकल कर रुकी।

दो एक व्यक्ति वहाँ बससे उतरने वाले थे। कण्डक्टर बसकी छत पर जा कर एक व्यक्तिकी साइकल नीचे उतारने लगा। बालो तेज़ीसे चल कर ड्राइवरकी सीटके बराबर पहुँच गयी।

"सुच्चा स्याँ !" उसने रोटी वाला हाथ ऊँचा उठा कर खिडकीके अदर रोटी पहुँचानेकी चेष्टा करते हुए कहा, "सुच्चा स्या, रोटी ले ले।"

"हट जा, मुझे फुर्सत नही है", सुच्चा सिंहने उसका हाथ झटक कर पीछे हटा दिया ।

"सुच्चा स्या, पहले एक मिनिट नीचे उतर कर मेरी बात सुन ले । आज दोपहरको खास बात हो गयी थी, नही तो मैं "

"बक नही, हट जा इधर से", कह कर सुच्चा सिहने कण्डक्टरको आवाज़ देकर पूछा कि वहाँका सारा सामान उतर गया है या नही ।

"बस एक पेटी है, उतार रहा हूँ" कण्डक्टरने बसकी छतसे आवाज़ दी ।

"सुच्चा स्या, मैं दो घटेसे खडी हूँ", वालोने मिन्नतके लहजेमे कहा, "तू नीचे उतर कर मेरी बात तो सुन ले । वेडा गर्क हो मुए जगी का । मुएकी वजहसे तेरा खाना भी खराब हुआ और मुझे भी इतनी मुसीबत झेलनी पडी ।" और उसने रोटी वाला हाथ फिर ऊँचा उठा दिया ।

"उतर गयी पेटी ?" सुच्चा सिंहने आवाज दी ।

"हाँ, चलो", कण्डक्टरकी आवाज़ आयी ।

"सुच्चा स्या !" वालोने मिन्नतके साथ हाथ और आगे बढा दिया ।

"हट !" सुच्चा सिंहने दुतकार कर उसका हाथ फिर पीछे हटा दिया ।

"सुच्चा स्या ! तू मुझ पर नाराज हो ले, पर रोटी तो रख ले । तू मगलवार को घर आयगा तो मैं तुझे सारी बात बताऊँगी ।"

"मेरा कोई घर नही है । मगलवारको आयगा तेरा " और एक मोटी सी गाली दे कर सुच्चा सिहने बस स्टार्ट कर दी ।

"हाय सुच्चा स्या सुन तो सही !" वालोने उसे रकनेकी हताश चेष्टा की । मगर बस चली गयी और वह धूलके बवडरमें घिरी रह गयी । उसने धूलकी गधसे व्याकुल हो कर भी जल्दीसे रोटी वाली पोटलीको आँचलमे छिपा लिया, और तब तक छिपाये रखा जब तक वातावरणमे धूल बिल्कुल नही बैठ गयी ।

सूर्यके साथ साथ आकाशका रग अब बदलने लगा था । गाहे बगाहे एकाध पक्षी उडता हुआ आकाशको पार कर जाता था । खेतोमें कही-

कही रगीन पगडियाँ दिखायी देने लगी थी। बालोने प्याऊसे पानी पिया और फिर मुँह और आँखो पर छीटे मार कर आँचलसे मुँह पोछ लिया। प्याऊसे कुछ कदमके फासले पर जा कर वह फिर खडी हो गयी। अब सूच्चा सिहकी बस जालधरसे आठ नौ बजे तक लौटेगी। क्या उसे तब तक उसकी इतजारी करनी चाहिए? सुच्चा सिहको ऐसे नही करना चाहिए, कमसे कम उसकी बात तो सुन लेता। घरमे जिदा अकेली डर रही होगी। अगर मुआं जगी पीछे किसी बहानेसे घर आया तो क्या होगा? सुच्चा सिह रोटी ले लेता तो वह आध घटेमें घर पहुँच जाती। अब सुच्चा सिह की रोटीका क्या होगा? रोटी तो खैर वह बाहर कही न कही खा ही लेगा मगर उसका गुस्सा किस तरह दूर होगा? उसने कहा है कि वह मगलवारको घर नही आयगा। अगर वह सचमुच नही आया? उसे उसकी और मिन्नत करनी चाहिए थी। सुच्चा सिहका गुस्सा ठीक है। उसे क्या पता कि रोटीमे क्यो देर हुई है? उसका मेहनती शरीर है और उसे कस कर भूख लगती है। वक्त पर खाना न मिले तो उसे गुस्सा भी न आये? वह ज्यादा मिन्नत करती तो वह ज़रूर मान जाता। अब?

प्याऊ वाला प्याऊ बद कर रहा था। भिखमगा भी न जाने कब का उठ कर वहाँसे चला गया था। हाँ, कुत्ता अब भी उसके आस पास घूम रहा था। धूप ढल रही थी और आकाशमे उडते हुए चिडियोके गिरोह सोनेके पखोंसे जड़े हुए लग रहे थे। हर चीजकी छाया लबी हो गयी थी और बालोको अपनी सडकके पार तक फैली हुई छाया बहुत अजीब लग रही थी। पासके खेतमें एक गभरू जवान खुले गलेसे 'माहिया' गा रहा था

"बोलण दी थां कोई ना।
जिह्डा सानूँ ला वे दित्ता,
उस रोग दा ना कोई नां।"

माहियाकी लय बालोकी रग रगमें बसी हुई थी। बचपनमे गर्मियो की शामको जब वह और बच्चोंके साथ मिल कर रहटके पानीकी मोटी

घारके नीचे नाच नाच कर नहाया करती थी, तब भी माहियाकी लय इसी तरह् वातावरणमे मँडराया करती थी। साँझके झुटपुटे वातावरणके साथ उस लयका कुछ खास ही सम्बन्ध था। ज्यो-ज्यो वह् वडी होती गयी, जीवनके साथ उस लयका सम्वन्ध गहरा होता गया। उनके गाँवका युवक लाली वडी लोचके साथ माहिया गाया करता था। उसने कितनी ही वार उसे गाँवके बाहर पीपलके पेडके नीचे कान पर हाथ रख कर गाते सुना था। वह पुष्पा और पारोके साथ देर देर तक उस पीपलके पास खडी रहती थी। फिर एक दिन आया जब उसकी माँ कहने लगी कि वह अब मुटियार हो गयी हे इसलिए अब उसे इस तरह् देर देर तक पीपलके पास नही खडी रहना चाहिए। उन्ही दिनो उसकी सगाईकी चर्चा होने लगी। जिस दिन सुच्चा सिंहके साथ उसकी सगाई हुई उस दिन पारो आधी रात तक ढोलकके साथ गीत गाती रही। गाते-गाते पारोका गला वुरी तरह् थक गया था फिर भी वह ढोलक वजाना छोड कर उसे वाँहोमें लपेटे हुए गाती रही

> **"वीवी, चनण दे ओहले ओहले किऊँ खड़ी**
> **नीं लाडो किऊँ खडी ?**
> **मैं ताँ खड़ी साँ बाबल जी दे बार,**
> **मे कनिआ कँवार,**
> **वावल वर लोड़िए।**
> **नीं जाइए, किहो जिहा वर लोड़िए ?**
> **जिऊँ-तारिआँ विचो चद,**
> **चंदां विचो नंद,**
> **नंदा विचो कान्ह कन्हैया वर लोडिए."**

वह नही जानती थी कि उसका वर कौन है, कैसा है, फिर भी उस का मन कहता था कि उसका वर वैसा ही सुन्दर होगा जैसा कि गीतकी कडियाँ सुन कर आँखोंके सामने आता है। सुहागरातको जव सुच्चा सिंह

ने उसके चेहरेसे घूँघट हटाया तो उसे देख कर उसे लगा कि वह सचमुच अपनी कल्पनाका कान्ह कन्हैया वर पा गयी है। जब सुच्चा सिंहने उसकी ठोडीको उठाया तो न जाने कितनी लहरे उसके सिरसे उठ कर शरीरमेंसे होती हुई पैरोके नाखूनोमें जा समायी। वह स्पर्श चाँद और चन्दनके स्पर्श से कही अधिक ठडा और सिहरा देने वाला था। उसे लगा कि जिदगी न जाने ऐसी कितनी सिहरनोसे भरी हुई है, जिन्हे वह अब रोज़-रोज अनुभव करेगी और अपनी यादमे सँजो कर रखती जायगी।

"तू हीरेकी कणी है हीरेकी कणी, "सुच्चा सिंहने उसे बाँहोमे भर कर कहा।

उसका मन हुआ कि कहे कि यह हीरेकी कणी तेरे पैरकी धूलके बराबर भी नही है, मगर वह शरमा कर चुप रह गयी

"माई, अँधेरा हो रहा है, अब घर जा। यहाँ खडी खडी क्या कर रही है ?" प्याऊ वालेने चलते चलते उसके पास रुक कर कहा।

"वीरा, यह बस जालधरसे कब तक लौट कर आयगी ?" वालोने जैसे जाग कर अपनी स्थितिकी व्याख्या करते हुए पूछा।

"क्या पता कब आये ? तू उतनी देर खडी रहेगी ?"

"वीरा, रोटी जो देनी है।"

"उसे रोटी लेनी होती तो इस बार न ले लेता ? उसका तो दिमाग आसमान पर चढा हुआ है।"

"वीरा, मर्द कभी नाराज़ हो ही जाता है। ऐसी क्या बात है ?"

"अच्छा खडी रह तेरी मर्ज़ी। बस आठ नौ से पहले क्या आयगी ?"

"चल, जब भी आवे।"

प्याऊ वालेसे बात करके वह निश्चय अपने आप ही हो गया जो वह अभी तक नही कर पायी थी। उसे बसके जालधरसे लौटने तक रुकी रहना चाहिए। जिंदा थोडी देर डर लेगी तो क्या हुआ। जगीकी अब दोबारा कुछ कहनेकी हिम्मत नही पडेगी। आखिर गाँवकी पचायत भी तो कोई

चीज है। वह पचो तक मामला पहुँचा कर उसे गाँवसे बाहर निकलवा सकती है। दूसरेकी बहन बेटी पर बुरी नज़र रखना मामूली बात है ? सुच्चा सिहको पता चले तो वह उसे केसोंसे पकड कर मैदानमे घसीट लाये। मगर सुच्चा सिंहको बात न बताना ही ठीक है। क्या पता खामखाह सिर-फुटव्वल हो जाय ? सुच्चा सिह पहले ही घरके झझटोसे घवराता है, उसे और झझटोमे डालना ठीक नही। अच्छा ही हुआ जो उस वक्त सुच्चा सिहने उसकी वात नही सुनी। वह कहता था कि मै मगलवारको घर नही आऊँगा। अगर वह सचमुच नही आया तो ? और अगर उसने घर आना बिल्कुल ही छोड दिया ? नही, वह उसे कभी कोई परेशानी की खबर नही देगी। सुच्चा सिह खुश रहे, घरको वह खुद सँभाल सकती है। सुच्चा सिंहके साथ ही तो घरकी बरकत है। वह आता रहे तो घरमे सब कुछ है और वह न आये तो

वालो जरा सिहर गयी। गाँवका लोटू सिह अपनी बीबीको छोड कर भाग गया था। उसके पीछे वह टुकडे टुकडेको तरस गयी थी। अत में उसने कुएँमें छलाग लगा कर आत्महत्या कर ली थी। पानीसे फूल कर उसकी देह कितनी भयानक हो गयी थी ?

बालोको थकान महसूस हो रही थी इसलिए वह प्याऊके तख्ते पर जाकर उकड् हो कर बैठ गयी। अँधेरा होनेके साथ साथ खेतोकी हलचल फिर शान्त होती जा रही थी। माहियाके गीतका स्थान अब झीगुरोके गीतने ले लिया था। एक बस जालधरकी तरफसे और एक बस नकोदर की तरफसे आकर निकल गयी। सुच्चा सिंह जालधरसे आखिरी वस लेकर आता था। उसने पिछली बसके ड्राइवरसे पता कर लिया था कि अब जालधरसे एक ही वस आनी है। अब जिस बसकी बत्तियाँ दिखायी देंगी वह सुच्चा सिंहकी ही वस होगी। थकानके मारे उसकी आँखें मुँदी जा रही थी। वह बार-बार चेष्टासे आँखे खोल कर उन्हे दूर तकके अँधेरे और उन काली-काली छायाओ पर केद्रित करती थी जो धीरे-धीरे गहरी

होती जा रही थी । ज़रा-सी भी आवाज होती तो उसे भ्रम होता कि बस आ रही है और वह सावधान हो जाती । परन्तु वत्तियोकी रोशनी न देख कर ठडी सॉस भर कर फिर शिथिल हो रहती । दो एक बार वह मुंदी हुई आँखोसे जैसे बसकी बत्तियाँ आती देख कर चौंक उठी—मगर बस अभी नही आ रही थी । फिर वह देखने लगी कि कोई ज़ोर ज़ोरसे घरके किवाड खटखटा रहा है । जिंदा अदर सहम कर बैठी हुई है । उसका चेहरा हल्दीकी तरह पीला हो रहा है और वह कह रही है बहन तू मत जा, तू मुझे छोड कर मत जा । रहटके बैल लगातार घूम रहे हैं, उनकी घटियोकी आवाज आ रही है और पीपलके पेडके नीचे बैठा एक युवक कान पर हाथ रखे माहिया गा रहा है । जोरकी धूल उड रही है जो धरती और आकाश की हर चीजको लीलती जा रही है । वह अपनी रोटी वाली पोटलीको सँभालनेकी चेष्टा कर रही है पर वह उसके हाथसे निकलती जा रही है । प्याऊ पर सूखे मटके रखे हैं जिनमे बूंद भर भी पानी नही है । वह बार-बार लोटा मटकोमे डालती है पर उन्हे खाली पा कर निराश हो जाती है। उसके पैरोमें बिवाइयाँ फूट रही है । वह हाथकी उँगलीसे उन पर तेल लगाती है पर लगाते लगाते ही तेल सूख जाता है । जिंदा अपने खुले बाल घुटनो पर डाले रो रही है और कह रही है, "मुझे छोड कर क्यो गयी थी ? क्यो गयी थी छोड कर ? हाय मेरी चोटी, हाय मेरी चोटी "

सहसा कधे पर एक हाथके स्पर्शसे वह चौंक गयी ।

"सुच्चा स्या !" उसने जल्दीसे मुंदी हुई पलकोको मल लिया ।

"अभी घर नही गयी ?" सुच्चा सिंह उसके पास ही तख्ते पर बैठ गया । बस ठीक प्याऊके सामने ही खडी थी । उस समय उसमे एक भी सवारी नही थी । केवल कण्डक्टर पीछेकी सीट पर आँख मूंद कर बैठा था ।

"मैंने कहा कि रोटी देकर ही घर जाऊँगी । . बैठे बैठे झपकी आ गयी । हाय, तुझे बहुत देर तो नही हो गयी ?"

"नही बस अभी खडी ही की है। मैंने तुझे दूरसे ही देख लिया था। तू इतनी पागल है कि तब से अब तक रोटी देनेके लिए बैठी है?"

"क्या करती ? तू जो कह गया था कि मैं घर नही आऊँगा।" और उसने पलकें झपक कर उमडते हुए आँसुओंको सुखा देनेकी चेष्टा की।

"अच्छा ला रोटी, अब घर जा। जिंदा अकेली डर रही होगी।" सुच्चा सिंहने उसकी बाँह थपथपा कर कहा और उठ खडा हुआ।

झपकी आ जानेसे कटोरा बालोके हाथसे नीचे सरक गया था। उसने उसे उठाया तो उसे वह काफी हल्का लगा। उसने देखा कि कटोरेमे रोटी साग कुछ भी नही है। तख्तेके नीचे कुत्ता निश्चिंत हो कर गुर्रा रहा था।

"हाय मुए।" बालो जल्दीसे तख्तेसे उठी।

"कुत्ता खा गया?" सुच्चा सिंह हँस कर बोला, "सत्त नाम सिरी वाह गुरू।"

बालोकी आँखोमें फिर पानी आ गया। वह खाली कटोरेको छातीके साथ सटाये निरीह दृष्टिसे सुच्चा सिंहकी ओर देखती खडी रही।

"चल अब खडी क्या है?" सुच्चा सिंह उसकी पीठ पर हाथ रखे हुए बसकी ओर बढने लगा। बालो अपराधिनी सी उसके साथ बसकी खिडकी तक पहुँच गयी। सुच्चा सिंह उचक कर अपनी सीट पर बैठ गया और बस स्टार्ट करने लगा तो वह डरती हुई सी बोली, "सुच्चा स्या, तू मंगलवार को घर आयगा न?"

"हाँ, तुझे शहरसे कुछ मँगवाना हो तो बता दे।'

"नही, मँगवाना कुछ नही।"

बस चलनेके लिए घरघराने लगी तो वह दो कदम पीछे हट गयी। सुच्चा सिंहने दाढी मूँछ पर हाथ फेरा, एक डकार लिया, और उसकी ओर मुड कर पूछा, "तू उस वक्त जगीकी क्या बात कहती थी?"

"नही, कोई खास बात नही थी। तू मंगलको घर आयगा ही "

"अच्छा, अब जल्दी चली जा, देर न कर, एक मील वाट है "

"सुच्चा स्या, कल गुरपरबका दिन है, कल मैं तेरे लिए कडाह प्रशाद बना कर लाऊँगी "

"अच्छा ।"

और बस चल पडी । बालोके चारो ओर गर्द फैल गयी । उसने पल्लेसे आँखे पोछ ली और तब तक बसके पीछेकी लाल बत्तीको देखती रही जब तक वह आँखोसे ओझल नही हो गयी ।

सौदा

दिनके नौ बज रहे थे और हर रोजकी तरह पहलगामके बाज़ारमें चहलपहल आरम्भ हो गयी थी। लोग नाश्तेके बाद अपने-अपने होटलो और खैमोंसे तैयार हो कर आ रहे थे। कई पार्टियाँ बाज़ारमें एक सिरेसे दूसरे सिरे तक चहलकदमी करती दिखायी देने लगी थी। अल्सेशियन कुत्तेको लेकर घूमती हुई चेकोस्लोवाकियाकी भद्र महिलासे लेकर सान फ्रासिस्कोके तरुण दपति तक, और सिंधी डाक्टरकी लडकियोसे लेकर तिरुचिरापल्लीके विद्यार्थियो तक हर एकका चलनेका अदाज कुछ ऐसा था जैसे वह वहाँ दिग्विजय करनेके लिए आया हो। कुछ सुन्दर छरहरे शरीर, दो चार याद रखने वाले चेहरे, कही एक अच्छी मुसकराहट या चुभ जाने वाली मुद्रा वर्ना केवल वस्त्र, काले चश्मे और कैमरे। दो एक ऐसे भी चेहरे दिखायी दे रहे थे जिनकी बदसूरतीको शायद घटोकी मेहनतसे निखारा गया था। दो प्रौढ व्यक्ति अपने तरुण मित्रोंके समुदायमे खडे होकर शोर मचाते हुए लोगोको अपने युवा होनेका प्रमाण देनेकी चेष्टा कर रहे थे। और इस वातावरणमे घिरा हुआ एक व्यक्ति जिसकी वेशभूषा से प्रकट था कि वह अमृतसरका लाला है, अपनी पत्नी और बच्चेके साथ एक ओर खडा था। वह बहुत सँवार सँवार कर चाकूसे एक सेवके टुकडे काट रहा था और उनके हाथमें देता जा रहा था। उन लोगोंके पास एक दरी, एक सेबो की टोकरी और एक रोटीका डिब्बा रखा था।

पहले पुलकी तरफसे कुछ घोडेवाले घोडोकी लगामे थामे हुए आ रहे थे। घोडोकी उजली सज्जाके साथ उनके मैले फटे हुए वस्त्रोकी तुलना करनेसे लगता था कि वे घोडोंके मालिक नही, घोडे उनके मालिक हैं। वे लोग आज बहुत धीरे-धीरे बाजारकी ओर आ रहे थे, जो कि उनके स्वभाव

के विरुद्ध था। अक्सर उनमें जो जल्दबाज़ी दिखायी दिया करती थी वह आज नही थी।

घोडेवालोके बाजारमें पहुँचते ही बाजारकी हलचल बढ गयी। बहुत से लोग उन्हे घेर कर आदेशात्मक स्वरमे उनसे घोडोकी माँग करने लगे।

"हतो, पाँच घोडे लाओ, अच्छे जवान घोडे चाहिएँ।"

"हतो, ये दोनो घोडे हमारे साथ ले आओ, चदनवाडी चलना है।"

"चल हतो, उधर वे मेम साहब घोडा माँग रही हैं।"

ज्यादातर लोगोको चन्दनवाडीके लिए घोडे लेने थे। पहलगाम आने वाले लोग एक बार चन्दनवाडी तक घुडसवारी अवश्य करते हैं हालाँकि चन्दन वाडीमें कोई ख़ास आकर्षण नही है और वह अमरनाथके रास्तेका एक साधारण पडाव है। पर क्योकि वहाँ जानेका रिवाज है इसलिए लोग वहाँ गये बिना अपनी पहलगामकी यात्रा पूरी नही समझते।

उस लालाने भी निश्चिन्ततापूर्वक सेबका एक टुकडा चबाते हुए एक घोड़ेवालेको आदेश दिया, "तीन घोडे इधर लाना भाई, अच्छे बढिया घोडे हो।"

परन्तु घोडेवालेने उत्तरमे उपेक्षा-सी दिखलाते हुए कहा, "तीन घोडो के बारह रुपये होगे।"

"सब घोडे तीन तीन रुपयेमे जाते है", लालाने झिडकते हुए कहा, "हम आज पहली बार नही जा रहे।"

यह छोटा सा झूठ उसकी व्यवहारबुद्धिने ही उससे बुलवा दिया, हालाँकि कुछ देर पहले जिस तरह एक व्यक्तिसे वह चन्दनवाडीके विषयमें पूछ रहा था उससे स्पष्ट था कि वह पहलगाममे अपने जीवनमे पहली बार आया है और शायद पिछली शामको ही आया है। उसी व्यक्तिसे उसे पता चला था कि घोड़ेवाले चन्दनवाडीके तीन तीन रुपये लेते हैं।

"चार रुपये सरकारी रेट है", घोडेवालेने घोडेकी ज़ीन ठीक करते हुए पहलेसे ही स्वरमे कहा, "चार रुपयेसे कममें आज कोई नही जायगा।"

"तू जा, अभी पचास मिल जायँगे' लालाने तिरस्कारके साथ कहा और दूसरे घोडे वालेको आवाज़ दी ।

परन्तु सब घोडेवाले उस दिन चार चार रुपये ही माँग रहे थे । और लोग भी उनसे इसी बात पर झगड रहे थे । वही घोडेवाले जो रोज तीन तीन रुपयेमें चलनेके लिए लोगोकी मिन्नतें किया करते थे और कई बार दो दो रुपयेमे भी चलनेको तैयार हो जाते थे, आज सीधे मुँह बात नही कर रहे थे । लोग कह रहे थे कि उन्होने स्वय ही घोडेवालोके दिमाग आसमान पर चढाये है, घोडेवाले उन्हे जरूरतमद समझ कर नखरा दिखा रहे हैं । वे सब अगर निश्चय कर लें कि कोई घोडा नही लेगा तो अभी घोडेवाले उनकी खुशामद करेंगे और दो-दो रुपयेमे चलनेको तैयार हो जाएँगे ।

"आज बात क्या है ?" किसीने पूछा ।

"बात कुछ नही है", एक घोडेवालेने उत्तर दिया, "चार रुपये सरकारी रेट है !"

"पहले भी तो सरकारी रेट चार रुपये था, फिर पहले क्यो तीन रुपये लेते थे ?"

"यह तो मर्जीकी बात है साहब", एक जवान घोडेवालेने उत्तर दिया, "पहले मर्जी थी लेते थे । आज मर्जी नही है, नही लेते ।"

पर धीरे-धीरे इधर-उधरकी चेहमेगोइयोसे लोगोको पता चल गया कि कल किसी बाबूने एक घोडेवालेको इस बात पर पीट दिया था कि वह उससे चन्दनवाडीके तीनकी बजाय चार रुपये माँग रहा था । इसीलिए सब घोडेवालोने आज निश्चय किया था कि आजसे वे चार रुपयेसे कममें चन्दनवाडी नही जायँगे । रोजकी तरह मैले कपडोमे लिपटे हुए भी वे आज खास गर्वका अनुभव कर रहे थे । उनके रेखाकित चेहरोका उल्लास प्रकट करते हुए उनके मैले दाँत बार बार दिखायी दे जाते थे ।

"थोडी देर इतजार करो जी, ये लोग अभी रास्ते पर आ जायँगे" लालाने बढ कर आगे आते हुए कहा, "आज हम इन्हे चार-चार रुपये देंगे तो

कल ये लोगोसे पाँच पाँच रुपये माँगेंगे । जो जायज है वही होना चाहिए । इन्हे जाने दीजिए । अभी और घोडेवाले आ जाएँगे ।"

खालसा होटलका नौकर आवाज दे रहा था कि होटलमे अठारह घोडे चाहिएँ, इसलिए वे सब घोडेवाले खालसा होटलकी तरफ चल दिये । इस पर कुछ लोगोने तुरन्त परिस्थितिसे समझौता कर लिया और चार चार रुपयेमे अपने लिए घोडे ठहरा लिये । लाला और कुछ अन्य लोगोने असन्तोष प्रकट किया कि वे लोग खामखाह घबरा कर अपनेको घोडेवालोके सामने हीन कर रहे है । पर जिन्होने घोडे ले लिये थे, वे चुपचाप उन पर सवार होकर चल दिये । लालाके साथ केवल तिरुचिरापल्लीके विद्यार्थी और एक बगाली परिवार रह गया । लाला कुछ देर उन्हे अपना दृष्टिकोण समझाता रहा, फिर अपने परिवारके पास आ गया ।

क्योकि उस स्थान पर काफी बकझक हो चुकी थी, इसलिए वह अपनी पत्नी और बच्चेको साथ लिये हुए पुलकी दिशामें चल दिया । उधरसे और बहुतसे घोडेवाले आ रहे थे । उसने उनमेंसे तीन चारको रोक कर पूछा पर हर एकने चार रुपये ही माँगे । वह कुछ देर उस दिशामे चल कर फिर वापस लौट पडा । उसका बच्चा जो रास्तेके हर घोडेको उत्सुकतापूर्ण दृष्टिसे देखता था, चलते चलते ठोकरे खा रहा था । लाला आखिर निर्णयात्मक भावसे सडकके बीच ठहर गया । पाससे गुज़रते हुए तीन घोडोको उसने ठहरा लिया और एक घोडेवालेको आदेश दिया कि वह उसकी धर्मपत्नी को घोडे पर बैठनेमे मदद दे । दूसरे घोडे पर उसने बच्चेको बैठा दिया और तीसरे घोडेकी रकाबमें पाँव रख कर प्रतीक्षा करने लगा कि घोडेवाला आकर उसे शरीरको उछालनेमें सहायता दे ।

"लाला, कहाँ चलना है ?" घोडेवालेने उसे हाथका सहारा देते हुए पूछा ।

"चन्दनवाडी", लालाने घोडे पर जम कर बैठते हुए कहा ।

"चार चार रुपये होगे ।"

लालाने घोडेकी पीठ परसे विश्वविजयीकी तरह एक दृष्टि चारों ओर डाली और घोड़ेवालेकी बातको महत्त्व न देकर कहा, "बताओ, लगाम किस तरह पकडनी है ?"

घोड़ेवालेने लगाम उसके हाथमें दे दी और कहा, "साथ आठ आठ आने बख्शीशके मिल जायँ ।"

"जो मुनासिब पैसे हैं, मिल जायँगे", लालाने कहा, "हम किसीका हक नही रखते ।" और उसने लगामको ज़रा-सा झटका दिया । पर उससे घोडा आगे चलनेकी बजाय पीछेकी ओर घूम गया ।

"लाला, यह ऐसे नही चलेगा", घोडेवाला हँस कर बोला, "तुम पैसेकी बात करो, यह अभी दौडने लगेगा ।"

"तुमसे कह दिया है कि ठीक पैसे दे देंगे ।"

"चार चार रुपया भाडा और आठ आठ आना बख्शीश ।"

"तीन तीन रुपया भाडा और चार चार आना .."

"तो उतर जाओ लाला," घोडेवालेने बीचमे ही कहा, "तीन रुपयेमें कोई घोडा नही जायगा ।"

"कैसे नही जायगा ?" लाला आवेशके साथ बोला, "जब रोज़ जाता है तो आज भी जायगा ।"

"नही जायगा साहब, आज नही जायगा ।"

"तो हम भी घोडेसे नही उतरेंगे, खडे रहो जितनी देर खडे रहना है ।" और वह पजाबीकी गालियाँ मिलाकर ऐसी हिन्दी बोलने लगा जिसमे विशुद्ध भाव ही भाव था, कलाका अश तक नही था । और तभी न जाने क्या हुआ कि उसकी पत्नीका घोड़ा बिदक कर सरपट दौड उठा । उस बेचारीने बहुत सँभलनेकी कोशिश की पर कुछ गज़ जाते न जाते वह बिल्कुल गिरनेको हो गयी । घोडेवालेने भाग कर वक्त पर घोड़ेको रोक लिया ।

लाला ऐसी स्थितिमें था कि वह बिना घोडेवालेकी सहायताके उतर भी नही सकता था । उसने एक पैर रकाबसे निकाल लिया, पर उसे ज़मीन

तक पहुँचानेकी चेष्टामे उसका दूसरा पैर उलझ गया । घोडेवालेने उसे सहारा दे कर उतार दिया । तब तक उसकी पत्नी भी किसी तरह सँभल कर उतर गयी थी । लालाने उतर कर बच्चेको उतारा और फिर उसी भाषा मे अपने उद्‌गार प्रकट करने लगा । घोडेवाले वहाँसे चले गये, क्योकि दूर कोई उन्हे हाथके इशारेसे बुला रहा था ।

बगाली परिवार और तिरुचिरापल्लीके विद्यार्थी भी अब घोडो पर सवार हो कर आ रहे थे । और भी कितने ही गिरोह चन्दनवाडीकी दिशा मे जा रहे थे । कुछ युवतियाँ और युवक तेजीसे घोडोको दौडाते हुए निकल गये । बच्चा चकित दृष्टिसे उन्हे दूर तक जाते देखता रहा ।

लालाकी पत्नीने उससे कहा कि यदि चलना हो तो उन्हे भी और लोगो की तरह चुपचाप चार चार रुपयेमे घोडे ले लेने चाहिएँ । लालाने जैसे आत्मसमर्पण करते हुए उसकी बात मान कर एक घोडेवालेको आवाज दी कि वह उनके लिए तीन घोडे ले आये ।

मगर घोडेवालेने दूरसे ही कहा, "नही साहब, घोडा खाली नही है ।"

एक और पाससे निकलता हुआ घोडेवाला भी यही कहकर चला गया कि घोडा खाली नही है । तीसरेने यह उत्तर देना भी मुनासिब नही समझा । आखिर एक घोडेवालेने रुककर कहा, "चार रुपया भाडा और एक रुपया बख्शीश मिलेगा ?"

"भाडा तुम्हे रेटके मुताबिक देगे," लालाने खिसियाने स्वरमे कहा, "बख्शीश हमारी मर्जीपर है ।"

"नही साहब," घोडेवाला बोला, "बख्शीश भी पहले तय होना चाहिए । उधर एक और साहब घोडा माँग रहा है । वह एक-एक रुपया बख्शीश देता है ।"

और इससे पहले कि लाला निश्चय कर पाता कि बख्शीशकी स्वीकृति दे या नही, एक और घोडेवालेने उस घोडेवालेको बुला लिया । वह एक यूरोपियन परिवारके लिए सात घोडे इकट्ठे कर रहा था । लालाने पत्नी

ग्रौर बच्चेको वही छोडकर स्वय बाजारका एक पूरा चक्कर लगाया । पर घोडे सभी जा चुके थे । सहसा उसकी दृष्टि एक घोडेवाले पर पडी जो क्लवकी तरफ घोडा लिये बाजारकी ग्रोर जा रहा था । वह रुककर उसकी प्रतीक्षा करने लगा । घोडा ग्रौर घोडेवाला बहुत धीरे-धीरे चल रहे थे ग्रौर लगता था कि दोनो बीमार है । पास पहुँचनेपर लालाने घोडेवालेसे पूछा कि वह चन्दनवाडी चलनेका क्या लेगा ।

"चार रुपया," घोडेवालेने खाँस कर उत्तर दिया ।

उसने साथ बख्शीशकी माँग नही की इससे लालाके चेहरे पर प्रसन्नता की हल्की-सी लहर दौड गयी । उसने घोडेवालेसे कहा कि वह तुरन्त दो घोडे ग्रौर ले ग्राये ।

"ग्रौर घोडा ग्राप देख लीजिये, मेरे पास एक ही घोडा है," घोडेवाला बोला, "रखना हो तो बताइये, नही तो मै उधरसे एक मेमके बच्चोको घुमानेके लिए ले जाऊँगा ।"

"तू मेरे साथ रह, ग्रभी दो घोडे ग्रौर मिल जायँगे, लालाने कहा, ग्रौर उसे साथ लिये हुए वहाँ ग्रा गया जहाँ उसकी पत्नी खडी थी । वहाँ ग्राकर उसने ग्रात्मश्लाघात्मक ढगसे पत्नीको बतलाया कि किसतरह ग्रब वगैर बख्शीशके झगडेके चार-चार रुपयेमें घोडे मिल रहे है ग्रौर थोडी देरतक शायद इससे भी कममे मिलने लगे । उसके बाद वह पत्नी ग्रौर बच्चोको साथ लिये हुए घोडोकी तलाशमे बाजारमें चक्कर लगाने लगा । बच्चा रोटीका डिब्बा उठाये था, पत्नी सेबोकी टोकरी हाथमे लिये थी ग्रौर वह स्वय दरी बगलमें सँभाले था । घोडेवाला उनके पीछे-पीछे घोड़ेकी लगाम सँभाले खाँसता हुग्रा चल रहा था । बहुत देरतक वे इस तरह बाजारके चक्कर लगाते रहे, पर कही कोई दूसरा घोडा दिखायी नही दे रहा था ।

—×—

मलबेका मालिक

पूरे साढे सात सालके बाद वे लोग लाहौरसे अमृतसर आये थे। हाकीका मैच देखनेका तो बहाना ही था, उन्हे ज्यादा चाव उन घरो और बाजारोको फिरसे देखनेको जो था, साढेसात साल पहले उनके लिए पराये हो गये थे। हर सडकपर मुसलमानोकी कोई-न-कोई टोली घूमती नजर आ जाती थी। उनकी आँखें इस आग्रहके साथ वहाँकी हर चीजको देख रही थी, जैसे वह शहर साधारण शहर न होकर एक खास आकर्षण-केन्द्र हो।

तग बाजारोमें से गुजरते हुए वे एक-दूसरेको पुरानी चीजोकी याद दिला रहे थे . देख, फतहदीना, मिसरी बाजारमें अब मिसरीकी दुकानें पहलेसे कितनी कम रह गयी हैं! उस नुक्कडपर भठियारिनकी भट्ठी थी, जहाँ अब यह पानवाला बैठा है। यह नमकमण्डी देख लो, खानसाहब! यहाँकी एक-एक लालाइन वह नमकीन होती है कि बस ..

बहुत दिनोंके बाद बाजारोमें तुर्रेदार पगडियाँ और लाल तुर्की टोपियाँ दिखायी दे रही थी। लाहौरसे आये हुए मुसलमानोमें काफी सख्या ऐसे लोगोकी थी, जिन्हें विभाजनके समय मजबूर होकर अमृतसर छोडकर जाना पड़ा था। साढ़े सात सालमें आये अनिवार्य परिवर्तनोको देखकर कही उनकी आँखोमें हैरानी भर जाती और कही अफसोस घिर आता—वल्लाह! कटरा जयमलसिंह इतना चौडा कैसे हो गया? क्या इस तरफके सब-के-सब मकान जल गये? यहाँ हकीम आसिफअलीकी दुकान थी न? अब यहाँ एक मोचीने कब्जा कर रखा है!

और कही-कही ऐसे भी वाक्य सुनायी दे जाते—वली, यह मस्जिद ज्यो-की-त्यो खड़ी है? इन लोगोने इसका गुरुद्वारा नही बना दिया?

जिस रास्तेसे भी पाकिस्तानियोकी टोली गुज़रती, शहरके लोग उत्सुकतापूर्वक उसकी ओर देखते रहते । कुछ लोग अब भी मुसलमानोको आते देखकर शकित-से रास्तेसे हट जाते थे, जबकि दूसरे आगे बढकर उनसे बगलगीर होने लगते थे । ज्यादातर वे आगन्तुकोंसे ऐसे-ऐसे सवाल पूछते थे कि आजकल लाहौरका क्या हाल है ? अनारकलीमें अब पहले जितनी रौनक होती है या नही ? सुना है, शाहालमीगेटका बाज़ार पूरा नया बना है ? कृष्णनगरमे तो कोई ख़ास तब्दीली नही आयी ? वहाँका रिश्वतपुरा क्या वाकई रिश्वतके पैसेसे बना है ? कहते है, पाकिस्तानमें अब बुर्का बिल्कुल उड गया है, यह ठीक है ? इन सवालोमें इतनी आत्मीयता झलकती थी कि लगता था कि लाहौर एक शहर नही, हज़ारो लोगोका सगा सम्बन्धी है, जिसके हालात जाननेके लिए वे उत्सुक है । लाहौरसे आये हुए लोग उस दिन शहर-भरके मेहमान थे, जिनसे मिलकर और बाते करके लोगोको ख़ामखाह खुशीका अनुभव होता था ।

बाजार बाँसाँ अमृतसरका एक उपेक्षित-सा बाजार है, जो विभाजन से पहले गरीब मुसलमानोकी बस्ती थी । वहाँ ज्यादातर बाँस और शहतीरो की ही दुकाने थी, जो सबकी-सब एक ही आगमे जल गयी थी । बाज़ार-बाँसाँकी आग अमृतसरकी सबसे भयानक आग थी, जिससे कुछ देरके लिए तो सारे शहरके जल जानेका अदेशा पैदा हो गया था । बाज़ार बाँसाँके आस-पासके कई मुहल्लोको तो उस आगने अपनी लपटमें ले ही लिया था । खैर, किसी तरह वह आग काबूमें आ तो गयी, पर उसमें मुसलमानोके एक एक घरके साथ हिन्दुओके भी चार-चार, छह-छह घर जलकर राख हो गये । अब साढे सात सालमें उनमेंसे कई इमारते तो फिरसे खडी हो गयी थी, मगर जगह-जगह मलबेके ढेर अब भी मौजूद थे । नयी इमारतोंके बीच-बीचमे मलबेके ढेर अजीब ही वातावरण प्रस्तुत करते थे ।

बाजार बाँसाँमें उस दिन भी चहल-पहल नही थी, क्योकि उस बाज़ार के ज़्यादातर बाशिन्दे तो अपने मकानोंके साथ ही शहीद हो गये थे और

जो बचकर चले गये थे, उनमें शायद लौटकर आनेकी हिम्मत बाकी नही रही थी। सिर्फ एक दुबला-पतला बुड्ढा मुसलमान ही उस वीरान बाज़ार मे आया और वहाँकी नयी और जली हुई इमारतोको देखकर जैसे भूलभुलैया मे पड गया। बाये हाथको जानेवाली गलीके पास पहुँचकर उसके कदम अंदर मुडनेको हुए, मगर फिर वह हिचकिचाकर वहाँ बाहर ही खडा रह गया, जैसे उसे निश्चय नही हुआ कि वह वही गली है या नही, जिसमे वह जाना चाहता है। गलीमे एक तरफ कुछ बच्चे कीडी-काडा खेल रहे थे और कुछ अतर पर दो स्त्रियाँ ऊँची आवाज़में चीखती हुई एक दूसरीको गालियाँ दे रही थी।

"सब कुछ बदल गया, मगर बोलियाँ नही बदली!" बुड्ढे मुसलमान ने धीमे स्वरमें अपनेसे कहा और छडीका सहारा लिये खडा रहा। उसके घुटने पाजामेसे बाहरको निकल रहे थे और घुटनोके थोडा ऊपर ही उसकी शेरवानीमे तीन-चार पैवन्द लगे थे। गलीसे एक बच्चा रोता हुआ बाहर को आ रहा था। उसने उसे पुचकारकर पुकारा, "इधर आ, बेटे, आ इधर! देख, तुझे चिज्जी देगे, आ!" और वह अपनी जेबमें हाथ डाल कर उसे देनेके लिए कोई चीज़ ढूँढने लगा। बच्चा क्षणभरके लिए चुप कर गया, लेकिन फिर उसने ओठ बिसोर लिये और रोने लगा। एक सोलह सत्रह बरसकी लडकी गलीके अदरसे दौडती हुई आयी और बच्चेकी बाँह पकडकर उसे घसीटती हुई गलीमे ले चली। बच्चा रोनेके साथ-साथ अपनी बाँह छुडानेके लिए मचलने लगा। लडकीने उसे बाँहोमे उठाकर अपने साथ चिपका लिया और उसका मुँह चूमती हुई बोली, "चुप कर, मेरा वीर! रोयेगा तो तुझे वह मुसलमान पकडकर ले जायगा, मै वारी जाऊँ, चुप कर!"

बुड्ढे मुसलमानने बच्चेको देनेके लिए जो पैसा निकाला था, वह वापस जेबमे रख लिया। सिरसे टोपी उतार कर उसने वहाँ थोडा खुजलाया और टोपी बगलमे दबा ली। उसका गला खुश्क हो रहा था और घुटने

जरा जरा काँप रहे थे । उसने गलीके बाहरकी बद दुकानके तख्तेका सहारा ले लिया और टोपी फिरसे सिर पर लगा ली । गलीके सामने जहाँ पहले ऊँचे-ऊँचे शहतीर रखे रहते थे, वहाँ अब एक तिमज़िला मकान खडा था । सामने बिजलीके तार पर दो मोटी-मोटी चीलें बिल्कुल जड होकर बैठी थी । बिजलीके खभेके पास थोडी धूप थी । वह कई पल धूपमें उडते हुए ज़र्रोंको देखता रहा । फिर उसके मुँहसे निकला, "या मालिक !"

एक नवयुवक चाबियोका गुच्छा घुमाता हुआ गलीकी ओर आया और बुड्ढेको वहाँ खडे देखकर उसने रुककर पूछा, "कहिए, मियाँ जी, यहाँ किस तरह खडे है ?"

बुड्ढे मुसलमानकी छाती और बाहोमें हल्की-सी कँपकँपी हुई और उसने ओठो पर ज़बान फेरकर नवयुवकको ध्यानसे देखते हुए पूछा, "बेटे, तेरा नाम मनोरी नही है ?"

नवयुवकने चाबियोका गुच्छा हिलाना बद करके मुट्ठीमे ले लिया और आश्चर्यके साथ पूछा, "आपको मेरा नाम कैसे पता है ?"

"साढे सात साल पहले तू बेटे इतना-सा था," कहकर बुड्ढेने मुसकराने की कोशिश की ।

"आप आज पाकिस्तानसे आये है ?" मनोरीने पूछा ।

"हाँ, मगर पहले हम इसी गलीमे रहते थे", बुड्ढेने कहा, "मेरा लडका चिरागदीन तुम लोगोका दर्ज़ी था । तकसीमसे छह महीने पहले हम लोगो ने यहाँ अपना नया मकान बनाया था ।"

"ओ, गनी मियाँ !" मनोरीने पहचानकर कहा ।

"हाँ, बेटे, मै तुम लोगोका गनी मियाँ हूँ ! चिराग और उसके बीवी-बच्चे तो नही मिल सकते, मगर मैंने कहा कि एक बार मकानकी सूरत ही देख लूँ !" और उसने टोपी उतारकर सिर पर हाथ फेरते हुए आँसुओको बहनेसे रोक लिया ।

"आप तो शायद काफी पहले ही यहाँसे चले गये थे", मनोरीने स्वरमें सवेदना लाकर कहा ।

"हाँ, बेटे, मेरी बदबख्ती थी कि पहले अकेला निकलकर चला गया। यहाँ रहता, तो उनके साथ मैं भी " और कहते-कहते उसे अहसास हो आया कि उसे ऐसी बात नही कहनी चाहिए। उसने बात मुँहमें रोक ली, मगर आँखमें आये हुए आँसुओको बह जाने दिया।

"छोडिए, गनी साहब, अब बीती बातोको सोचनेमें क्या रखा है ?" मनोरीने गनीकी बाँह पकडकर कहा, 'आइए, आपको आपका घर दिखा दूँ ?'

गलीमे खबर इस रूपमें फैली थी कि गलीके बाहर एक मुसलमान खडा है, जो रामदासीके लडकेको उठाने जा रहा था . उसकी बहन उसे पकडकर घसीट लायी, नही तो वह मुसलमान उसे ले गया होता। यह खबर पाते ही जो स्त्रियाँ गलीमे पीढे बिछाकर बैठी थी, वे अपने-अपने पीढे उठाकर घरोके अन्दर चली गयी। गलीमें खेलते हुए बच्चोको भी उन स्त्रियोने पुकार-पुकार कर घरोमें बुला लिया। मनोरी जब गनीको लेकर गलीमे आया, तो गलीमे एक फेरीवाला रह गया था या कुएँके साथ उगे हुए पीपल के नीचे रक्खा पहलवान बिखरकर सोया। घरोकी खिडकियोमेंसे और किवाडोके पीछेसे अलबत्ता कई चेहरे झाँक रहे थे। गनीको गलीमे आते देखकर उनमे हल्की-हल्की चेहमेगोइयाँ शुरू हो गयी। दाढीके सब बाल सफेद हो जानेके बावजूद लोगोने चिरागदीनके बाप अब्दुल गनीको पहचान लिया था।

"वह आपका मकान था", मनोरीने दूरसे एक मलबेकी ओर संकेत किया। गनी पल-भरके लिए ठिठक कर फटी-फटी आँखोसे उसकी ओर देखता रहा। चिराग और उसके बीबी-बच्चोकी मौतको वह काफी अर्सा पहले स्वीकार कर चुका था, मगर अपने नये मकानको इस रूपमें देखकर उसे जो झुनझुनी हुई, उसके लिए वह तैयार नही था। उसकी ज़बान पहले से ज्यादा खुश्क हो गयी और घुटने भी और ज्यादा काँपने लगे।

"वह मलबा ?" उसने अविश्वासके स्वरमें पूछा।

मनोरीने उसके चेहरेका बदला हुआ रग देखा। उसने उसकी बाँहको और सहारा देकर ठहरे हुए स्वरमें उत्तर दिया, "आपका मकान उन्ही दिनो जल गया था।"

गनी छडीका सहारा लेता हुआ किमी तरह मलबेके पास पहुँच गया। मलबेमे अब मिट्टी-ही-मिट्टी थी, जिसमें जहाँ-तहाँ टूटी और जली हुई ईंटे फँसी थी। लोहे और लकडीका सामान उसमेंसे न जाने कबका निकाल लिया गया था। केवल जले हुए दरवाज़ेका चौखट न जाने कैसे बचा रह गया था, जो मलबेमेंसे वाहरको निकला हुआ था। पीछेकी ओर दो जली हुई अलमारियाँ और बाकी थी, जिनकी कालिख पर अब सफेदीकी हल्की-हल्की तह उभर आयी थी। मलवेको पाससे देखकर गनीने कहा, "यह रह गया है, यह ?" और जैसे उसके घुटने जवाव दे गये और वह जले हुए चौखटको पकडकर बैठ गया। क्षण-भर बाद उसका सिर भी चौखटसे जा लगा और उसके मुँहसे बिलखने की-सी आवाज़ निकली, "हाए ! ओए चिरागदीना !"

जले हुए किवाडका चौखट साढे सात साल मलबेमेंसे सिर निकाले खडा तो रहा था, मगर उसकी लकडी बुरी तरह भुरभुरा गयी थी। गनीके सिरके छूनेसे उसके कई रेशे झडकर विखर गये। कुछ रेशे ग़नीकी टोपी और वालो पर आ गिरे। लकडीके रेशोंके साथ एक केंचुआ भी नीचे गिरा, जो गनीके पैरसे छ-आठ इच दूर नालीके साथ वनी ईंटोकी पटरी पर सरसराने लगा। वह अपने लिए सूराख ढूँढता हुआ जरा-सा सिर उठाता, मगर दो-एक वार सिर पटककर और निराश होकर दूसरी ओरको मुड़ जाता।

खिडकियोमेंसे झाँकनेवाले चेहरोकी सख्या पहलेसे कही वढ गयी थी। उनमे चेहमेगोइयाँ चल रही थी कि आज कुछ-न-कुछ ज़रूर होगा चिराग दीनका वाप गनी आ गया है, इसलिए साढे सात साल पहलेकी सारी घटना आज खुल जायगी। लोगोको लग रहा था, जैसे वह मलबा ही गनीको सारी

कहानी सुना देगा कि शामके वक्त चिराग ऊपरके कमरेमे खाना खा रहा था, जब रक्खे पहलवानने उसे नीचे बुलाया कि वह एक मिनिट आकर एक जरूरी बात सुन जाय पहलवान उन दिनो गलीका बादशाह था। हिन्दुओ पर ही उसका काफी दबदबा था, चिराग तो खैर मुसलमान था। चिराग हाथका कौर बीचमें ही छोडकर नीचे उतर आया। उसकी बीबी जुबैदा और दोनो लड़कियाँ किश्वर और सुलताना खिडकियोमेंसे नीचे झाँकने लगी। चिरागने ड्योढीसे बाहर कदम रखा ही था कि पहलवान ने उसे कमीज़के कालरसे पकडकर खीच लिया और उसे गलीमें गिराकर उसकी छाती पर चढ़ बैठा। चिराग उसका छुरेवाला हाथ पकड कर चिल्लाया, "न, रक्खे पहलवान, मुझे मत मार! हाय! मुझे बचाओ! जुबैदा! मुझे बचा!" और ऊपर जुबैदा, किश्वर और सुलताना हताश स्वरमे चिल्लायी। जुबैदा चीख़ती हुई नीचे ड्योढीकी तरफ भागी। रक्खेके एक शागिर्दने चिरागकी जद्दोजहद करती हुई बाहे पकड ली और रक्खा उसकी जाँघोको घुटनोसे दबाये हुए बोला, चीख़ता क्यो है, भैणके तुझे पाकिस्तान दे रहा हूँ, ले!" और जुबैदाके नीचे पहुँचनेसे पहले ही उसने चिरागको पाकिस्तान दे दिया।

आस-पासके घरोकी खिडकियाँ बद हो गयी। जो लोग इस दृश्यके साक्षी थे, उन्होने दरवाज़े बद करके अपनेको इस घटनाके उत्तरदायित्वसे मुक्त कर लिया। बद किवाडोमें भी उन्हें देर तक जुबैदा, किश्वर और सुलतानाके चीखनेकी आवाज़ें सुनायी देती रही। रक्खे पहलवान और उसके साथियोने उन्हें भी उसी रात पाकिस्तान देकर विदा कर दिया, मगर दूसरे तवील रास्तेसे। उनकी लाशें चिरागके घरमें न मिलकर बादमे नहर के पानीमें पायी गयी।

दो दिन तक चिरागके घरकी ख़ानातलाशी होती रही। जब उसका सारा सामान लूटा जा चुका, तो न जाने किसने उस घरको आग लगा दी। रक्खे पहलवानने कसम खायी थी कि वह आग लगानेवालेको जिंदा ज़मीन

मे गाड देगा, क्योकि उसने उस मकान पर नजर रखकर ही चिरागको मारने का निश्चय किया था। उसने उस मकानको शुद्ध करनेके लिए हवन-सामग्री भी खरीद रखी थी। मगर आग लगानेवालेका पता ही नही चल सका, उसे ज़िंदा गाडनेकी नौबत तो बादमें आती। अब साढे सात सालसे रक्खा पहलवान उस मलबेको अपनी जागीर समझता आ रहा था, जहाँ न वह किसीको गाय-भैंस बाँधने देता था और न खोचा लगाने देता था। उस मलबेसे बिना उसकी अनुमतिके कोई ईंट भी नही उठा सकता था।

लोग आशा कर रहे थे कि यह सारी कहानी ज़रूर किसी-न-किसी तरह गनीके कानो तक पहुँच जायगी जैसे मलबेको देखकर उसे अपने-आप ही सारी घटनाका पता चल जायगा। और गनी मलबेकी मिट्टी नाखूनोंसे खोद-खोदकर अपने ऊपर डाल रहा था और दरवाजेके चौखटको बाँहमें लिये हुए रो रहा था, "बोल, चिरागदीना, बोल! तू कहाँ चला गया, ओए? ओ किश्वर! ओ सुलताना! हाय मेरे बच्चे ओएऽऽ! गनीको कहाँ छोड दिया, ओएऽऽऽ!"

और भुरभुरे किवाडसे लकडीके रेशे झडते जा रहे थे।

पीपलके नीचे सोये हुए रक्खे पहलवानको जाने किसीने जगा दिया, या वह वैसे ही जाग गया। यह जानकर कि पाकिस्तानसे अब्दुलगनी आया है और अपने मकानके मलबे पर बैठा है, उसके गलेमें थोडा झाग उठ आया, जिससे उसे खाँसी हो आयी और उसने कुएँके फर्श पर थूक दिया। मलबेकी ओर देखकर उसकी छातीसे धौकनी का-सा स्वर निकला और उसका निचला ओठ थोडा बाहरको फैल आया।

"गनी अपने मलबे पर बैठा है", उसके शागिर्द लच्छे पहलवानने उसके पास आकर बैठते हुए कहा।

"मलबा उसका कैसे है? मलबा हमारा है!" पहलवानने झागके कारण घरघरायी हुई आवाज़में कहा।

"मगर वह वहाँ पर बैठा है", लच्छेने आँखोमें रहस्यमय सकेत लाकर कहा।

"बैठा है, बैठा रहे, तू चिलम ला !" उसकी टाँगें थोडी फैल गयी और उसने अपनी नगी जाँघो पर हाथ फेरा ।

"मनोरीने अगर उसे कुछ बताया-वताया, तो . ?" लच्छेने चिलम भरनेके लिए उठते हुए उसी रहस्यपूर्ण दृष्टिसे देखकर कहा ।

"मनोरीकी शामत आयी है ?"

लच्छा चला गया ।

कुएँ पर पीपलकी कई पुरानी पत्तियाँ बिखरी थी । रक्खा उन पत्तियोको उठा-उठाकर हाथोमे मसलता रहा । जब लच्छेने चिलमके नीचे कपडा लगाकर उसके हाथमें दिया, तो उसने कश खीचते हुए पूछा, "और तो किसीसे गनीकी बात नही हुई ?"

"नही ।"

"ले," और उसने खाँसते हुए चिलम लच्छेके हाथमे दे दी । लच्छेने देखा कि मनोरी मलवेकी तरफसे गनीकी बाँह पकडे हुए आ रहा है । वह उकडूँ होकर चिलमके लम्बे-लम्बे कश खीचने लगा । उसकी आँखें आधा क्षण रक्खेके चेहरे पर टिकती और आधा क्षण गनीकी ओर लगी रहती ।

मनोरी गनीकी बाँह पकडे हुए उससे एक कदम आगे चल रहा था, जैसे उसकी कोशिश हो कि गनी कुएँके पाससे बिना रक्खे पहलवानको देखे ही निकल जाय । मगर रक्खा जिस तरह बिखरकर बैठा था, उससे गनीने उसे दूर-से ही देख लिया । कुएँके पास पहुँचते-न-पहुँचते उसकी दोनो बाहें फैल गयी और उसने कहा, "रक्खे पहलवान !"

रक्खेने गरदन उठाकर और आँखे जरा छोटी करके उसे देखा । उसके गलेमे अस्पष्ट-सी घरघराहट हुई, पर वह बोला कुछ नही ।

"रक्खे पहलवान, मुझे पहचाना नही ?" गनीने बाहें नीची करके कहा, "मैं गनी हूँ, अब्दुल गनी, चिराग़ दीनका बाप !"

पहलवानने सन्देहपूर्ण दृष्टिसे उसका ऊपरसे नीचे तक जायज़ा लिया । अब्दुलगनीकी आँखोमे उसे देखकर चमक आ गयी थी । सफेद दाढ़ीके

नीचे उसके चेहरेकी झुर्रियाँ ज़रा फैल गयी थीं। रक्खेका निचला ओठ फड़का, फिर उसकी छातीसे भारी-सा स्वर निकला, "सुना, गनिया।"

गनीकी बाहें फिर फैलनेको हुईं, परन्तु पहलवान पर कोई प्रतिक्रिया न देखकर उसी तरह रह गयी। वह पीपलके तनेका सहारा लेकर कुएँकी सिल पर बैठ गया।

ऊपर खिड़कियोमें चेहमेगोइयाँ तेज़ हो गयी कि अब दोनो आमने-सामने आ गये है, तो बात जरूर खुलेगी फिर हो सकता है, दोनोमें गाली-गलौज भी हो अब रक्खा गनीको कुछ नही कह सकता, अब वो दिन नही रहे बडा मलबेका मालिक बनता था। असलमें मलबा न इसका है, न गनी का। मलबा तो सरकारकी मलकियत है किसीको गायका खूंटा नही लगाने देता।. .मन री भी डरपोक है। इसने गनीको बताया क्यो नहीं कि रक्खेने ही चिराग और उसके बीबी बच्चोको मारा है? रक्खा आदमी नही, साँड है। दिन-भर साँडकी तरह गलीमें घूमता है गनी बेचारा कितना दुबला हो गया है? दाढीके सारे बाल सफेद हो गये है।

गनीने कुएँकी सिल पर बैठकर कहा, "देख, रक्खे पहलवान, क्यासे-क्या रह गया है? भरा-पूरा घर छोडकर गया था और आज यहाँ मिट्टी देखने आया हूँ। बसे हुए घरकी यही निशानी रह गयी है। तू सच पूछे, रक्खे, तो मेरा यह मिट्टी भी छोडकर जानेको जी नही करता।" और उसकी आँखें छलछला आयी।

पहलवानने फैली हुई टाँगें समेट ली और अँगोछा कुएँकी मुडेरसे उठा कर कधे पर डाल लिया। लच्छेने चिलम उसकी तरफ बढा दी और वह कश खीचने लगा।

"तू बता, रक्खे, यह सब हुआ किस तरह?" गनी आँसू रोकता हुआ आग्रहके साथ बोला, "तुम लोग उसके पास थे, सबमें भाई-भाई की-सी मुहब्बत थी, अगर वह चाहता तो वह तुममेंसे किसीके घरमें नही छिप सकता था? उसे इतनी भी समझ नही आयी?"

"ऐसा ही है," रक्खेको स्वय लगा कि उसकी आवाज़मे कुछ अस्वाभाविक-सी गूँज है । उसके ओठ गाढे लारसे चिपक-से गये थे । उसकी मूँछो के नीचेसे पसीना उसके ओठो पर आ रहा था । उसके माथे पर किसी चीज का दवाव पड रहा था और उसकी रीढकी हड्डी सहारा चाह रही थी ।

"पाकिस्तानका क्या हाल है ?" उसने वैसे ही स्वरमे पूछा । उसके गलेकी नसोमें तनाव आ गया था । उसने अँगोछेसे बगलोका पसीना पोछा और गलेका झाग मुँहमे खीच-खीचकर गलीमे थूक दिया ।

"मै क्या हाल बताऊँ, रक्खे", गनी दोनो हाथोसे छडी पर ज़ोर देकर झुकता हुआ बोला, "मेरा हाल पूछे, तो वह मेरा खुदा ही जानता है । मेरा चिराग साथ होता, तो और बात थी रक्खे, मै उसे समझा हटा था कि मेरे साथ चला चल । मगर वह अड रहा कि नया मकान छोडकर कैसे जाऊँ, यहाँ अपनी गली है, कोई खतरा नहीं है । भोले कबूतरने यह नही सोचा कि गलीमें खतरा न सही, बाहरसे तो खतरा आ सकता है ? मकान की रखवालीके लिए चारो जनोने जान दे दी ! रक्खे, उसे तेरा बहुत भरोसा था । कहता था कि रक्खेके रहते कोई मेरा कुछ नही बिगाड सकता । मगर जब आनी आयी, तो रक्खेके रोके भी न रुक सकी ।"

रक्खेने सीधा होनेकी चेष्टा की, क्योकि उसकी रीढकी हड्डी दर्द कर रही थी । उसे अपनी कमर और जाँघोंके जोड पर सख्त दबाव महसूस हो रहा था । पेटकी अँतडियोके पास जैसे कोई चीज़ उसकी साँसको जकड रही थी । उसका सारा ज़िस्म पसीनेसे भीग गया था और उसके पैरोंके तलुवोमें चुनचुनाहट हो रही थी । बीच-बीचमें नीली फुलझडियाँ-सी ऊपरसे उतरती और उसकी आँखोके सामनेसे तैरती हुई निकल जाती । उसे अपनी ज़बान और ओठोके बीचका अन्तर कुछ ज्यादा महसूस हो रहा था । उसने अँगोछेसे ओठोके कोनोको साफ किया और उसके मुँहसे निकला, "हे प्रभु सच्चिआ, तू ही है, तू ही है, तू ही है !"

गनीने लक्षित किया कि पहलवानके ओठ सूख रहे है और उसकी आँखो के इर्द-गिर्द दायरे गहरे हो आये है, तो वह उसके कधे पर हाथ रखकर बोला, "जी हल्का न कर, रक्खिआ ! जो होनी थी, सो हो गयी । उसे कोई लौटा थोडे ही सकता है ? खुदा नेककी नेकी रखे और वदकी बदी माफ करे ! मेरे लिए चिराग नही, तो तुम लोग तो हो । मुझे आकर इतनी ही तसल्ली हुई कि उस जमानेकी कोई तो यादगार है । मैने तुमको देख लिया, तो चिरागको देख लिया । अल्लाह तुम लोगोको सेहतमद रखे ! जीते रहो और खुशियाँ देखो !" और गनी छडी पर दबाव देकर उठ खडा हुआ । चलते हुए उसने फिर कहा, "अच्छा, रक्खे पहलवान, याद रखना !"

रक्खेके गलेसे स्वीकृतिकी मद्धम-सी आवाज निकली । अँगोछा बीच में लिये हुए उसके दोनो हाथ जुड गये। गनी गलीके वातावरणको हसरत भरी नजरसे देखता हुआ धीरे-धीरे गलीसे वाहर चला गया ।

ऊपर खिडकियोमे थोडी देर चेहमेगोइयाँ चलती रही कि मनोरीने गलीसे बाहर निकलकर ज़रूर गनीको सब कुछ बता दिया होगा गनी के सामने रक्खेका तालू किस तरह खुश्क हो गया था ? रक्खा अब किस मुँहसे लोगोको मलबे पर गाय बाँधनेसे रोकेगा ?. बेचारी जुबैदा ! बेचारी कितनी अच्छी थी ! कभी किसीसे मन्दा बोल नही बोली रक्खे मरदूदका घर, न घाट, इसे किस माँ-बहनका लिहाज़ था ?

और थोडी ही देरमे स्त्रियाँ घरोंसे गलीमे उतर आयी, बच्चे गलीमे गुल्ली-डण्डा खेलने लगे और दो बारह-तेरह वरसकी लडकियाँ किसी बात पर एक दूसरीसे गुत्थम-गुत्था हो गयी ।

रक्खा गहरी शाम तक कुएँ पर बैठा खँकारता और चिलम फूँकता रहा । कई लोगोने वहाँसे गुजरते हुए उससे पूछा, "रक्खे शाह, सुना है, आज गनी पाकिस्तानसे आया था ?"

"आया था", रक्खेने हर बार एक ही उत्तर दिया ।

"फिर ?"

"फिर कुछ नही, चला गया।"

रात होने पर पहलवान रोज़की तरह गलीके बाहर बायी ओरकी दुकानके तख़्ते पर आ बैठा। रोज़ अक्सर वह रास्तेसे गुज़रनेवाले परिचित लोगोको आवाज़ दे-देकर बुला लेता था और उन्हें सट्टेके गुर और सेहतके नुस्खे बताया करता था, मगर उस दिन वह लच्छेको अपनी वैश्नो देवीकी यात्राका विवरण सुनाता रहा, जो उसने पद्रह साल पहले की थी। लच्छे को बिदा करके वह गलीमें आया, तो मलबेके पास लोकू पडितकी भैसको खडी देखकर वह रोज़की आदतके मुताबिक उसे धक्के दे देकर हटाने लगा—तत्-तत्-तत्. तत्-तत् .

और भैसको हटाकर वह सुस्तानेके लिए मलबेके चौखट पर बैठ गया। गली उस समय बिल्कुल सुनसान थी। कमेटीकी कोई बत्ती न होनेसे वहाँ शामसे ही अँधेरा हो जाता था। मलबेके नीचे नालीका पानी हल्की आवाज़ करता हुआ बह रहा था। रातकी खामोशीके साथ मिली हुई कई तरहकी हल्की-हल्की आवाजें मलबेकी मिट्टीमेंसे निकल रही थी . च्यु च्यु च्यु .. चिक्-चिक्-चिक् चिर्र्र्र्-इर्र्र्र्-रीरीरीरी-चिर्र्र्र् . एक भटका हुआ कौआ न जाने कहाँसे उडकर लकडीके चौखट पर आ बैठा। उससे लकडीके रेशे इधर-उधर छितरा गये। कौएके वहाँ बैठते-न-बैठते मलबेके एक कोनेमें लेटा हुआ कुत्ता गुर्राकर उठा और ज़ोर-जोरसे भौकने लगा, वऊ-अऊ-अऊऽऽ-वऊ! कौआ कुछ देर सहमा-सा चौखट पर बैठा रहा, फिर वह पख फडफड़ाता हुआ उड़कर कुएँके पीपल पर चला गया। कौए के उड जाने पर कुत्ता और नीचे उतर आया और पहलवानकी ओर मुँह करके भौंकने लगा। पहलवान उसे हटानेके लिए भारी आवाजमें बोला—दुर् दुर् दुर्. . दुरे!

मगर कुत्ता और पास आकर भौंकने लगा—वउ-अउ-वउ-वउ-वउ-वउ..

—हट-हट, दुर्र्र्र्-दुर्र्र्र् दुरे!

—वउ-अऊऽऽ-अउ-अउ-अउ-अउ!...

पहलवानने एक ढेला उठाकर कुत्तेकी ओर फेंका। कुत्ता थोडा पीछे हट गया, पर उसका भौंकना बंद नही हुआ। पहलवान मुँह-ही-मुँह कुत्तेको माँकी गाली देकर वहाँसे उठ खडा हुआ और धीरे-धीरे जाकर कुएँकी सिल पर लेट गया। पहलवानके यहाँसे हटने पर कुत्ता गलीमें उतर आया और कुएँकी ओर मुँह करके भौंकने लगा। काफी देर भौंककर जब गलीमें उसे कोई प्राणी चलता-फिरता दिखायी नही दिया, तो वह एक बार कान झटककर मलबे पर लौट आया और वहाँ कोनेमें बैठकर गुर्राने लगा।

मन्दी

चेयरिंग क्रासपर पहुँचकर मैंने देखा कि उस समय वहाँ पर मेरे अति-रिक्त एक भी व्यक्ति नही है। एक बच्चा, जो अपनी आयाके साथ वहाँ खेल रहा था, अब उसके पीछे भागता हुआ ठडी सड़कपर चला गया था। घाटीमे एक जली हुई इमारतका जीना इस तरह शून्यकी ओर झाँक रहा था जैसे विश्वको आत्महत्याकी प्रेरणा और ऊपर आकर कूद जानेका निमत्रण दे रहा हो। आसपासके विस्तारको देखते हुए उस नि स्तब्ध एकान्तमें मुझे हार्डी-द्वारा वर्णित एक लैंडस्केपका स्मरण हो आया, जिसके कई पृष्ठके वर्णनके अनन्तर मानवता दृश्य-पटपर प्रवेश करती है—अर्थात् एक छकडा मद गतिसे आता दिखाई देता है। मेरे सामने भी खुली घाटी थी, दूर-दूरतक फैली हुई पहाडी शृखलाएँ थी, बादल थे, चेयरिंग क्रासका सुनसान मोड़ था और यहाँ भी कुछ उसी तरह मानवताने दृश्यपटपर प्रवेश किया अर्थात् एक पचास-पचपन वर्षका भद्रपुरुष छड़ी टेकता हुआ दूरसे आता दिखाई दिया। वह इस तरह इधर-उधर निरीक्षणात्मक दृष्टि डालता चल रहा था जैसे देख रहा हो कि जो ढेले पत्थर कल वहाँ पडे थे, वे आज भी यथास्थान हैं या नही। जब वह मुझसे कुछ ही अन्तरपर रह गया, तो उसने आँखें कुचित करके रेखाओ जैसी बना ली और मेरे चेहरे पर अध्ययनात्मक दृष्टि डालता हुआ आगे बढने लगा। मेरे निकट आकर उसकी दृष्टिका भाव कुछ निर्णयात्मक हो गया और उसने रुककर छड़ीपर भार देते हुए क्षणभरके विरामके अनन्तर पूछा, "नये आये हो?"

"जी हाँ" मैंने उसकी मुरझायी हुई पुतलियोमे अपने चेहरेका प्रतिबिम्ब देखकर ज़रा सकोचके साथ कहा।

"मुझे लग रहा था कि नये आये हो", वह बोला, "पुराने लोग तो अपने रोज़के पहचाने हुए है।"

"आप यही रहते है ?" मैने पूछा।

"यही रहते हैं", उसने विरक्ति और शिकायतके स्वरमें उत्तर दिया "जहाँका अन्न-जल लिखाकर लाये थे, वही रहेगे अन्न-जल मिले चाहे न मिले।"

उसकी ध्वनि कुछ ऐसी थी जैसे मुझसे उसका कोई पुराना गिला हो। मुझे लगा कि या तो वह परम निराशावादी है या उसे पेटका सक्रामक रोग है। उसकी रस्सीकी तरह बँधी टाईसे यह अनुमान होता था कि वह एक रिटायर्ड सरकारी कर्मचारी है जो अब अपनी कोठीमे सेवका बाग लगाकर उसकी रखवाली किया करता है।

"आपकी यहाँपर ज़मीन होगी ?" मैने जिज्ञासा न रहते हुए भी पूछ लिया।

"जमीन ?", उसने स्वरमें और भी, निराशा और शिकायत लाकर उत्तर दिया, "ज़मीन कहाँ जी !" और फिर जैसे कुछ निराशा और व्यग्यके साथ सिर हिलाकर बोला, "ज़मीन !"

मेरी समझमें नही आ रहा था कि अब मुझे उससे क्या कहना चाहिए। वह उसीतरह छडीपर भार दिये मेरी ओर देख रहा था। कुछ क्षणोका वह मौन व्यवधान मुझे विचित्र-सा लगा। उस स्थितिसे निकलनेके लिए मैने प्रश्न किया, "तो आप यहाँ कोई निजी काम कर रहे है ?'

"काम क्या करना है जी ?," उसने उत्तर दिया, "घरसे खाना काम है, तो वही काम करते है। आजकल काम क्या रह गये है ? हर कामका बुरा हाल है !"

मेरा ध्यान क्षण-भरके लिए जली हुई इमारतके जीनेकी ओर चला गया, जिसके सिरेपर एक बन्दर आ बैठा था और सिर खुजलाता हुआ शायद इस निश्चयपर पहुँचनेकी चेष्टा कर रहा था कि कूद जाय या नही।

"अकेले ही आये हो ?" अब उस व्यक्तिने मुझसे पूछा।

"जी हाँ।" मैंने उत्तर दिया।

"आजकल यहाँ कौन आता है ?" वह बोला, "बियाबान जगह है। सैरके लिए तो शिमला, मसूरी वगैरह है। वहाँ क्यो नही चले गये ?"

मेरी दृष्टि पुन. उसकी पुतलियोमें अपना प्रतिबिम्ब देखकर हट गयी। मन होते हुए भी मै उससे यह नही कह सका कि यदि मुझे पहले पता होता कि वहाँ आकर मेरा उससे साक्षात्कार होगा तो मै ज़रूर किसी और पहाड़ पर चला जाता।

"चलो, अब तो आ ही गये हो", वह पुन बोला, "कुछ दिन घूम-फिर लो। घर ले लिया ?"

"जी हाँ", मैंने कहा, "कथलक रोडपर एक कोठी मिल गयी है।"

"सभी कोठियाँ खाली पड़ी है," वह बोला, "हमारे पास एक कोठरी थी। कल दो रुपये महीनेपर चढाई है। दो-तीन महीने लगी रहेगी। फिर दो-चार रुपये पाससे डालकर सफेदी करा देंगे। और क्या!" फिर दो-एक क्षणके व्यवधानके बाद उसने पूछा, "खानेका क्या इन्तज़ाम किया है ?"

"अभी कुछ नही किया", मैने कहा, "इस समय इसी ख्यालसे बाहर आया था कि कोई अच्छा-सा होटल देख लूँ, जो ज्यादा मँहगा भी न हो।"

"नीचे बाज़ारमे चले जाओ", वह बोला, "नत्थासिहका होटल पूछ लेना। सस्ते होटलोमें वही अच्छा है। वही खा लिया करना। और क्या! पेट ही भरना है!"

और अपनी नहूसत मेरे अन्दर भी भरकर वह पूर्ववत् छड़ी टेकता हुआ अपने रास्ते पर चल दिया।

नत्थासिहका होटल बाजारमे बहुत नीचे जाकर था। जिस समय मै वहाँ पहुँचा, बुड्ढा सरदार नत्थासिह और उसके दोनो बेटे अपनी दुकानके सामने हलवाईकी दुकानमें बैठे हलवाईके साथ ताश खेल रहे थे। मुझे देखते

ही नत्थासिहने तत्परतापूर्वक अपने बडे लडकेसे कहा, "उठ बसन्ते, ग्राहक आया है।'"

बसन्तेने तुरन्त हाथके पत्ते फेंक दिये और बाहर निकल आया।

"क्या चाहिए, साब ?" उसने आकर अपनी गद्दीपर बैठते हुए पूछा।

"चाय बना दो", मैंने कहा।

"अभी लीजिए साब !" और वह केतलीमें पानी डालने लगा।

"अडे रखते हो ?" मैंने पूछा।

"रखते तो नही जी, पर अभी मँगवा देता हूँ", वह बोला, "फ्राई लेंगे या आमलेट ?"

"आमलेट", मैंने कहा।

"हरबसे, भागकर ऊपरवाले लालासे दो अडे ले आ", उसने अपने छोटे भाईको आवाज़ देकर कहा।

उसकी आवाज़ सुनकर हरबसेने भी झट हाथ के पत्ते फेंक दिये और उठ खडा हुआ। उससे पैसे लेकर वह भागता हुआ बाज़ारकी सीढियाँ चढ़ गया। बसन्ता केतली भट्ठी पर रखकर नीचे से हवा करके आँच तेज़ करने लगा।

हलवाई और नत्थासिह अभी अपने-अपने पत्ते हाथमें लिये थे। हलवाई अपने पाजामेका कपडा चुटकीमें लेकर जाँघ खुजलाता हुआ कह रहा था, "अब चढाई शुरू हो रही है, क्यो नत्थासिह ?"

"हाँ, अब गर्मी आयी है, चढ़ाई तो शुरू होगी ही", नत्थासिह अपनी सफेद दाढीमे उँगलियोंसे कघी करता हुआ बोला, "यही तो चार पैसे कमानेके दिन है।"

"पर नत्थासिह, अब वह बात नही है," हलवाई बोला, "पहले दिनोंमें हज़ार-बारह सौ आदमी निकलकर इधरको आते थे, हज़ार-बारह सौ निकल कर उधरको जाते थे तो लगता था कि लोग बाहरसे आये है। अब आ भी गये सौ-पचास तो क्या है !"

"सौ-पचासकी भी बडी बरकत है", नत्थासिह कुछ धार्मिकताके स्वरमें बोला।

"कहते है कि किसीके पास पैसा ही नही रहा," हलवाईने विमर्श करते हुए कहा, "यह बात मेरी समझमे नही आती। दो-चार साल सबके पास पैसा ही पैसा हो जाता है और फिर एकदम सब-के-सब भूखे-नगे हो जाते है, जैसे किसीने पैसो पर बाँध बाँधकर रखा है। जब चाहता है छोड देता है, जब चाहता है रोक लेता है।"

"सब करनी कर्तारकी है," कहता हुआ नत्थासिह भी पत्ते फेककर उठ खड़ा हुआ।

"कर्तारकी करनी कुछ नही है," हलवाई अनिच्छापूर्वक पत्ते रखता हुआ बोला, "जब कर्तार पैदावार उसी तरह करता है तो फिर लोग क्यो भूखे, नगे हो जाते है? मेरी समझमें यह बात नही आती।"

नत्थासिहने दाढी खुजलाते हुए आकाशकी ओर देखा, जैसे खीज रहा हो कि कर्तारके अतिरिक्त दूसरा कौन है जो लोगोको भूखे-नगा बना सकता है।

"कर्तार ही जानता है," क्षण भर बाद उसने सिर हिलाकर कहा।

"कर्तार कुछ नही जानता," हलवाईने ताशकी गड्डी फटी हुई डिबिया मे रखते हुए नकारात्मक भावसे सिर हिलाकर कहा और अपनी गद्दी पर आ गया।

मै यह नही समझ सका कि हलवाईने कर्तारको निर्दोष बतानेकी चेष्टा की है या कर्तारकी ज्ञानशक्ति पर सदेह प्रकट किया है।

कुछ देर बाद जब मै चाय पीकर वहाँसे चलने लगा तो बसतेने मुझसे कुल छह आने माँगे। उसने हिसाब भी दिया—चार आनेके अडे, एक आनेका घी और एक आनेकी चाय। जब मैं पैसे देकर बाहर निकला तो नत्थासिह ने पीछेसे आवाज देकर कहा, "भाई साहब, रातको खाना भी यही खाइयेगा। आज आपको स्पेशल चीज खिलायेंगे। ज़रूर आइएगा।"

उसका स्वर इतना अनुरोधपूर्ण था कि मै मुसकराये बिना नही रह सका। मैंने सोचा कि उसने छह आनेमे मुझसे क्या कमा लिया है जो मुझसे फिर रातको आनेका अनुरोध कर रहा है।

सायकाल सैरसे लौटते हुए मैंने बुक एजेंसीसे अखबार खरीदा और बैठकर पढनेके उद्देश्यसे एक बडे-से रेस्तराँके अन्दर चला गया। अन्दर पहुँच कर मैंने देखा कि कुर्सियाँ, मेज और सोफे तो व्यवस्थापूर्वक रखे हुए है, पर न हालमे कोई बैरा है और न काउण्टर पर ही कोई व्यक्ति है। मैं एक सोफे पर बैठकर अखबार पढने लगा। एक कुत्ता जो उस सोफेसे सटकर लेटा हुआ था, अब वहाँसे उठकर सामनेके सोफे पर बैठ गया और मेरी ओरको जीभ लपलपाने लगा। मैंने एक बार मेजको थपथपाया, 'बैरा' कहकर आवाज दी, पर कोई मानवीय आकृति प्रकट नही हुई। अलबत्ता, कुत्ता सोफेसे मेज पर आकर अब और भी निकटसे मेरी ओरको जीभ लपलपाने लगा। मै अपने और उसके बीच अखबारका व्यवधान करके समाचार पढता रहा।

इस तरह बैठे हुए मुझे पन्द्रह-बीस मिनिट बीत गये। अन्तमें जब मैं वहाँसे उठनेको हुआ, तो बाहरका दरवाजा खुला और पाजामा कमीज पहने एक व्यक्तिने अन्दर प्रवेश किया। मुझे देखकर उसने दूरसे ही सलाम किया और पास आकर जरा सकोचके साथ बोला, "माफ करना जी, मै एक बाबूका सामान मोटरके अड्डे पर छोडने चला गया था। आपको ज्यादा देर तो नही हुई ?"

मैंने उसके ढीले-ढाले कलेवर पर एक अध्ययनात्मक दृष्टि डाली और पूछा, "यहाँ तुम अकेले ही काम करते हो ?"

"जी, आजकल मैं अकेला ही हूँ,, उसने उत्तर दिया, "दिन भर मैं यही पर रहता हूँ, सिर्फ बसके वक्त किसी बाबूका सामान मिल जाय तो अड्डे पर छोडने चला जाता हूँ।"

"यहाँका मैनेजर कौन है ?" मैंने पूछा।

"जी, मालिक आप ही मनीजर है," वह बोला, "वह आजकल अमृतसर रहता है। यहाँका सारा काम मेरे जिम्मे है।"

"तुम यहाँ चाय-वाय बनाते हो ?"

"चाय, काफी, जो आर्डर करे बन सकता है !"

"जरा अपना मेन्यू लाओ।"

उसके चेहरेके भावसे मैंने अनुमान लगाया कि वह मेरी बात नही समझा। मैंने उसे समझाते हुए कहा,' तुम्हारे पास चीजोकी छपी हुई लिस्ट होगी, वह ले आओ।"

"अभी लाया जी," कहकर वह सामनेकी दीवारकी ओर गया और वहाँसे एक गत्ता उतार लाया। देखकर मुझे पता चला कि वह होटलका लायसेंस है।

"यह तो यहाँका लायसेस है," मैंने कहा।

"छपी हुई लिस्ट तो यहाँ पर यही है," उसने कुछ असमजसमे पडकर कहा।

"अच्छा तो चाय ले आओ," मैंने कहा।

"अच्छा जी," वह बोला, "मगर साहव," और स्वरमे आत्मीयता लाकर उसने कहा, "मै तो कहता हूँ, खानेका टाइम है खाना ही खाओ। चायका क्या पीना ! अन्दर जाकर नाड़ियोको ही जलाती है।"

मै उसके तर्क पर मन ही मन मुसकराया। मुझे भूख लग रही थी, अत मैंने पूछा, "क्या-क्या तरकारी बनाते हो ?"

"आलू-मटर, आलू-टमाटर, भुर्ता, भिंडी, आलू, कोफ्ता, रायता .." वह जल्दी-जल्दी लबी-सी सूची बोल गया।

"कितनी देरमे ले आओगे ?" मैंने पूछा।

"वस पाँच मिनिट में।"

"तो आलू-मटर और रायता ले आओ।"

"अच्छा जी," वह बोला, "पर साहब," और पुन स्वरमे आत्मीयता लाकर उसने कहा, "बरसातका मौसम है, मै कहता हूँ रातके वक्त रायता नही खाओ तो अच्छा है। ठडी चीज है, बाज वक्त नुकसान कर जाती है।"

उसकी आत्मीयतासे प्रभावित होकर मैने कहा, "अच्छा सिर्फ आलू-मटर ले आओ।"

"अभी लो जी, अभी लाया", कहता हुआ वह नीचेकी ओर चला गया।

उसके चले जाने पर मै कुत्तेसे दिल बहलाने लगा। कुत्तेको शायद दिनोसे कोई चाहने वाला नही मिला था। वह मेरे साथ आवश्यकतासे अधिक प्यार दिखाने लगा। चार-पाँच मिनिट बाद बाहरका दरवाज़ा फिर खुला और एक पहाडी नवयुवती अन्दर आ गयी। उसकी वेशभूषा और पीठकर बधी टोकरीसे प्रकट था कि वह कोयला बेचने वाली लड़कियो-मेंसे है। यदि सौन्दर्यका सम्बन्ध चेहरेकी रेखाओके साथ ही हो तो वह सुन्दर कही जा सकती थी। वह सीधी चलकर मेरे निकट आ गयी और बोली "बाबूजी, हमारे पैसे मिल जायें।"

कुत्ता मेरे पास था इसलिए मै उसकी बातसे अव्यवस्थित नही हुआ।

मेरे कुछ कहनेसे पूर्व वह फिर बोली, "आपके आदमीने एक किल्टा कोयला लिया था। छह-सात दिन हो गये। कहता था कि दो दिनमें पैसे ले जाना। आज तीसरी बार माँगने आयी हूँ। मुझे पैसोकी बहुत ज़रूरत है।"

मैने कुत्तेको बाहोसे निकल जाने दिया। मेरी दृष्टि उसकी आँखों की नीलिमाको देख रही थी। उसके कपड़े पायजामा, कमीज़, वास्कट-चादर और पटका, सभी बहुत मैले थे। मुझे उसकी ठुड्डीकी तराश बहुत सुन्दर लगी। मै सोचने लगा कि यदि उसकी ठुड्डीके सिरेपर एक तिल होता

"चौदह आने पैसे है," वह कह रही थी।

मैंने सोचा कि उसे ठुड्डीके तिल और चौदह आने पैसेमें से एक चीज़ चुननेको कहा जाय तो वह अवश्य चौदह आने पैसे ही चुनेगी ।

"मुझे बाज़ारसे सौदा ले कर जाना है," वह कह रही थी ।

"कल सवेरे आना !" उसी समय बैरेने नीचेसे आते हुए दूरसे कहा ।

"रोज़ कल सवेरे बोल देता है," वह मुझे लक्षित कर जरा क्रोधके साथ बोली, "इससे कहिए कि कल सवेरे मेरे पैसे जरूर दे दे ।"

"इनसे क्या कह रही है, ये तो यहाँ पर खाना खाने आये है," बैरेने उससे कहा ।

इससे उसकी नीली आँखोमे सकोचकी हल्की-सी लहर दौड गयी । वह स्वर बदल कर मुझसे बोली, "आपको कोयला चाहिए ?"

"नही" मैंने कहा ।

"चौदह आनेका किल्टा दे दूँगी, कोयला देख लो", कहते हुए उसने अपनी चादरकी किसी तह मेंसे एक कोयला निकालकर मेरी ओर बढा दिया ।

"ये यहाँ आकर खाना खाते है, इन्हें कोयला नही चाहिए", बैरा झिडक-कर उससे बोला ।

"आपको खाना बनानेके लिए नौकर चाहिए ?" वह मुझसे बोली, "मेरा छोटा भाई है । सब काम जानता है । पानी भी भरेगा, बरतन भी माँजेगा ..."

"चल यहाँसे", बैरा उसकी बात बीचमे ही काटकर ज़रा तीखे स्वरमें बोला ।

"आठ रुपये महीनेमे सारा काम कर देगा", वह बैरेके स्वरको महत्त्व न देकर मुझे लक्षित करके कहती रही । पहले एक डाक्टरके घरमें काम करता था । डाक्टर अब चला गया है .. "

बैरेने उसे बाँहसे पकड लिया और बाहरकी ओर ले जाता हुआ बोला, "चल जाकर अपना काम कर । इन्हें नौकर नही चाहिए ।"

"मै कल इसी वक्त उसे लेकर आऊँगी," वह चलती हुई मुडकर बोली ।

बैरा उसे दरवाजेसे बाहर पहुँचाकर मेरी ओर आता हुआ बोला, "कमीनजात ! ये लोग ऐसे गले पड जाते है जैसे "

"खानेमें कितनी देर है ?" मैंने पूछा ।

"बस जी पाँच मिनटमें लाया" वह बोला, "आटा गूधकर सब्जी चढा आया हूँ, जरा नमक ले आऊँ, आकर चपातियाँ बनाता हूँ ।"

खाना खैर मुझे काफी देर बाद मिला । खाना खानेके बाद मै देर तक गोल सडक पर टहलता रहा क्योकि पूर्णिमाकी रात थी और पहाडियो पर छिटकी हुई चाँदनी बहुत अच्छी लग रही थी । लौटते समय बाजारके पाससे निकलते हुए मैंने सोचा कि नाश्तेके लिए सरदार नत्थासिहसे दो अडे उबलवा कर लेता चलूँ । दस बज चुके थे पर नत्थासिहकी दूकान अभी खुली हुई थी । जिस समय मै वहाँ पहुँचा, नत्थासिह और उसके दोनो बेटे पैरोके भार बैठे खाना खा रहे थे । मुझे देखते ही बसन्तेने कहा, "वह लो, भाई साहब आ गये ।"

"हम कितनी देर तक इतजार कर-करके अब खाना खाने बैठे हैं!", हरबस बोला ।

"खास आपके लिए मुर्गा बनाया था," नत्थासिह बोला, "हमने कहा कि भाई साहब देख लें कि हम कैसी चीज़ बनाते है । सोचा था कि दो एक प्लेटें और भी लग जाएँगी। पर न आप ही आये और न किसी और ने ही प्लेट ली । अब हम तीनो आप खाने बैठे हैं । मैंने मुर्गा इतने चावसे, इतने प्रेमसे बनाया था कि क्या कहूँ ! क्या पता था कि आप खाना पडेगा । ऐसे भी दिन देखने थे ! एक वे दिन थे, जब अपने लिए मुर्गेका शोरबा नही बचता था और एक यह दिन है । भरी हुई पतीली अपने आगे रखकर बैठे है । साढे तीन रुपये लग गये, अब पेटमें जाकर खनकते भी नही । जो तेरी करनी मालिका !"

"इसमें मालिककी क्या करनी है ?" बसन्ता ज़रा तीखा होकर बोला, "जो करनी है सब अपनी ही है। आपही को जोश आया हुआ था कि चढाई

शुरू हो गई है, लोग आने लगे है, कोई अच्छी चीज बनानी चाहिए। मैंने कहा था कि अभी आठ-दस दिन ठहर जाओ, ज़रा रुख देख लेने दो। पर आप नही माने। बोले कि अच्छी चीज़से मुहूर्त्त करेगे तो सीज़न अच्छा निकलेगा। लो, हो गया मुहूर्त्त !"

उसी समय वह व्यक्ति, जो कुछ घटे पहले मुझे चेयरिंग क्रास पर मिला था, मेरे निकट आकर खडा हो गया। अँधेरेमे उसने मुझे नही पहचाना और छडी पर भार देकर नत्थासिहसे बोला, "नत्थासिह, एक ग्राहक भेजा था, आया कि नही ?"

"कौन-सा ग्राहक ?" नत्थासिहने मुरझाये हुए स्वरमे पूछा।

"घुंघराले बालो वाला था, ज़रा मोटे शीशेका चश्मा लगाये हुए. "

"ये भाई साहब खडे है !" इससे पहले कि वह विस्तृत वर्णन देता, नत्थासिहने उसे होशियार कर दिया।

"अच्छा आ गये है !" उसने मुझे लक्षित करके कहा और फिर नत्था-सिहकी ओर देखकर बोला, "तो ला नत्थासिह, फिर चायकी एक प्याली पिला।"

कहता हुआ वह अन्दर जाकर सन्तुष्ट भावसे टीनकी कुर्सी पर बैठ गया। बसन्ता केतली भट्टी पर रखता हुआ जिस तरह बुदबुदाया उससे स्पष्ट था कि वह व्यक्ति चायकी प्याली ग्राहक भेजनेके उपलक्ष्य में पीने जा रहा है !

फटा हुआ जूता

टाइमपीसने अलार्म दिया। रायकी नीद टूट गयी। उसने चादर टाँगोंसे उतार फेंकी और बैठ कर टाइमपीसको चाबी देने लगा। बारह साल पहले तीन रुपयेमे लिया हुआ वह जापानी टाइमपीस आज बुढापेमें भी बारह घटेका सफर चौदह घटेमें तय कर ही लेता था और सबेरे पाँच बजेका अलार्म पाँचसे सातके बीच किसी भी समय बजा कर उसे जगा दिया करता था।

अभी टाइमपीसमें पाँच ही बजे थे, हालाँकि धूप खिडकीसे हट कर मेज पर से होती हुई उसके बिस्तरकी सीमाओ तक पहुँच गयी थी। रायने अदाज़ेसे घडीमें पौने सात बजाये और उसे खिडकीमें कघे शीशेके पास रख कर उठ खडा हुआ।

खडे होकर रायने एक अँगडाई ली। फिर उसने गद्देको गोल किया, उठाया और छज्जे पर टीनके ऊपर पटक दिया। उसके बाद उसने मेज़ को दीवारके पाससे खीच कर कमरेके बीच कर दिया, कुर्सियोको मेजके इधर-उधर लगा दिया और 'एशिया सर्जिकल कपनी' का बोर्ड उठा कर बाहर लटका दिया। इस तरह शयनागारको कार्यालयमें परिणत करके उसने सामने औषधालयके चौकीदारसे माचिस लेकर सिगरेट सुलगाया और छज्जे पर आकर पिछले घरकी जालीदार खिडकीके पास हिलती हुई नारीमूर्तिको देखने लगा।

राय, अर्थात् दामोदरदास चिन्तामणि राय, उन व्यक्तियोमेंसे था जो ईश्वरकी प्रयोगशालासे अकेले ही बनकर आते हैं। उसके दाँत काफी आगे को उभरे हुए थे और आँखे पीछेको धँसी हुई थी, और उसकी बाँहो और टाँगोमें कुछ ऐसे खम पडते थे जिनसे किसी भी चीजकी उपमा नही दी जा

सकती । उसके कधोसे मिली हुई गरदनकी रेखाएँ इस बातकी गवाही देती थी कि उसके शरीरमे मास केवल नामको ही है । वह हाथ हिलाता या ओठो पर जबान फेरता या सिगरेटका कश खीचता तो उसमें कुछ अस्वाभाविक-सा लगता था—कुछ ऐसे लगता था जैसे वह व्यक्ति हिलने डुलनेमें ही एक तरहका मजाक कर रहा हो ।

जब सिगरेट उस सीमा तक पिया जा चुका कि और कश खीचनेसे ओठ जल जाते तो रायने बाकी टुकडा फेक दिया । सिगरेटका टुकडा हवा में लकीर खीचता हुआ नीचे अखबार वालेके अखबार पर गिरा और वहाँ से धक्का खाकर गलीमे आमके छिलकेके पास जा लेटा ।

खिडकीसे हटकर रायने एक लबी साँस ली । फिर उसने एक अलमारी के पीछेसे तौलिया निकाल कर कधे पर रख लिया और कमरेसे बाहर चला गया ।

नहाने, खाना खाने और दो-एक डाक्टरोकी दुकानोके चक्कर लगानेके बाद जब राय अपनी कुर्सी पर आकर बैठा, उस समय साढे ग्यारह बज रहे थे । उसने पत्र लिखनेके लिए पैड उठाया पर वह 'डियर सर' से आगे नही बढ सका । फिर उसने एक फाइल उठायी, पर उसे भी देखनेका उसका मन नही हुआ । उसकी आँखे दूरकी जालीदार खिडकी परसे होती हुई सामने दीवार पर लगे कैलेडर पर स्थिर हो आयी जब कि उसका हाथ स्याहीदान पर पचिग मशीन और पचिग मशीन पर पेपर वेट रखता और हटाता रहा । फिर उसने कुर्सीकी पीठसे टेक लगा ली और ऊपर छतकी कडियाँ देखने लगा । एक बार जरा-सा खटका हुआ तो उसने चौक कर दरवाजेकी ओर देखा मगर कोई आहट न पाकर फिर उसी तरह छतकी ओर देखने लगा ।

प्रतीक्षा करनेमें उसे बहुत झुँझलाहट होती थी । रोज उसे कही न कही किसी न किसी चीजके लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती थी । सुबह नहाने के लिए जाता तो अक्सर नल सू सू की आवाज करके रह जाता था और

वह तब तक इतजार करता खडा रहता था जब तक कि निचली मजि़ल वाले न नहा चुकें। ढाबेमें जाता तो तब तक कोई उसकी ओर ध्यान नही देता था जब तक वह बीस मिनिट बैठे रहनेके अनन्तर उठ जानेकी धमकी न दे। बसके क्यूमें भी अक्सर वह खडा रह जाता था, और पीछेसे भाग कर आने वाले चढ जाते थे। अब दो दिनसे यह पोस्टमैन था कि आनेका नाम ही नही ले रहा था। रातको सपनेमें उसने कितनी ही बार पोस्टमैन को आते देखा था, पर हर बार वह दूरसे ही मुसकरा कर या सलाम करके चला गया था। रायने सोतेमें भी पोस्टमैनको जी भर कोसा था और अब भी चाह रहा था कि एक मोटी-सी गाली देकर दिलका गुबार निकाल ले।

मेज़के नीचे रद्दीकी टोकरीके पास उसका जूता पडा था, जो उसने बाहरसे आते ही खोल कर रख दिया था। जूतेके मैले सिकुडे हुए तलुवे तिरछे होकर आधा आधा इच ऊपरको सरक आये थे। पीछेकी दोनो ओर की सीवनें उधड रही थी। उसे याद नही था कि यह जूता उसने कब खरीदा था—उसे खरीदे हुए कमसे कम अढाई तीन साल हो चुके थे। जूतेके दाँत बहुत पहले ही निकलने लगे थे, पर राय उसे ठोक पीटकर लटकाता आ रहा था। कुछ महीने पहले सामनेसे जूतेके ओठ भी खुल गये थे पर रायने मोचीको चवन्नी देकर उन्हे बद करा लिया था। मगर इसके बाद जब जूतेकी बगलें शिकायत करने लगी तो रायको बैठ कर गभीरतापूर्वक सोचना पडा और सोचनेका परिणाम यह निकला कि उसे नकद तीस रुपये का पुरस्कार मिल गया।

घिसा हुआ जूता बबईकी पटरियो पर बहुत सफाईके साथ फिसलता है—और रायका जूता तो फिसलते समय शब्द भी किया करता था। पर यह रोज़ रोजकी बात उसके लिए उतनी ही स्वाभाविक हो चुकी थी जितनी गुजराती ढाबेकी रोटियाँ, पाउडर दूधकी चाय और पारसी लडकियो की लटकेदार अग्रेजी। परन्तु जब एक दिन जूतेके फिसलने पर एक नोकदार कील जूतेके तलेमें सूराख़ करके उसके पाँवमें आ घुसी, तो पाँवकी पीडा

स्नायुओमेंसे होती हुई उसके मस्तिष्कमे पहुँची और मस्तिष्कके किसी कोनेमें सोयी हुई चिंतनशक्ति झटका खाकर सहसा जाग उठी ।

रायने सोचा और सोचकर निश्चय किया कि जीना हो तो उसे ठीकसे जीना चाहिए । यह अग अगमें ऊँघती हुई शिथिलता, यह खाना सोना और बीतना, बरसो खेली हुई ताशकी तरह घिसा हुआ जीवन, यह सब बदलना चाहिए ।

निश्चय पर पहुँच कर उसने उपाय सोचना आरम्भ किया । नयी नौकरी मिलना असम्भव था । मैट्रिक फेल होनेके कारण एशिया सर्जिकलकी नौकरी भी बहुत सिफारिशके बाद मिली थी । उसे दो ही काम दिखायी दिये जो बिना किसी तरद्दुदके आसानीसे किये जा सकते थे—एक कहानियाँ लिखना और दूसरे पहेलियाँ भरना । रायने एक ही मुहूर्तमें दोनो काम आरम्भ कर दिये ।

रायकी कहानी तो जहाँ गयी, वही की हो रही—न छपी ही और न लौटकर ही आयी । पर पहेलीमें किसी तरह उसका तीस रुपयेका पुरस्कार निकल आया । रायने पुरस्कार-विजेताओकी सूचीमे अपना नाम देखा तो उसे विश्वास हो गया कि उसकी छिपी हुई योग्यताको अपने लिए मार्ग मिल गया है—वह अब पहेलियाँ भर कर अपना जीवनस्तर ऊँचा उठा सकता है ।

प्रकाशित सूचनाके अनुसार पुरस्कार छब्बीस तारीखको भेजे जा रहे थे और उस दिन उनतीस तारीख थी । रायके लिए एक एक क्षण काटना भारी हो रहा था । उसकी आँखें छतकी दरारोको देखती, फिर दीवार पर लगे कैलेण्डरको और फिर दरवाजेके चौखट पर स्थिर हो जाती, जहाँ एक मकडी अपने जालेमें उलझी हुई कभी नीचे गिरती, फिर ऊपर उठने लगती और फिर नीचे गिर जाती थी ।

आखिर जब पोस्टमैन आया तो रायका मन मकडीके जालेमें इतना उलझा हुआ था कि वह पोस्टमैनको देखकर चौंक गया ।

पोस्टमैनके हाथसे रजिस्ट्रीका लिफाफा लेते हुए उसका हाथ जरा-सा काँप गया। रसीद पर उसके हस्ताक्षर भी बिगड गये। रसीद पोस्टमैनको देकर वह तुरन्त पोस्टमैनके विषयमें भूल गया। उसने काँपती उँगलियो-से लिफाफेको खोला। अन्दरसे छपे हुए पत्रके साथ एक हरे रगका चेक निकला। राय जल्दी-जल्दी पत्रको आरम्भसे अन्त तक देख गया। कई मोटे मोटे शब्द उसे समझ नही आये। पत्र पढनेका जैसे उसने फर्ज़ पूरा किया और फिर चेकको दोनो हाथोंसे मेज़ पर फैला कर देखने लगा।

चेकका कागज़ बहुत चिकना था और उस पर बहुत सुन्दर इबारतमें उसका नाम लिखा हुआ था। तीन और शून्यके अक भी बहुत सधे हुए ढगसे लिखे गये थे। हरे कागज़ पर वह नीली लिखाई बहुत नयी और सजीव लग रही थी। रायने चेकसे अपने हाथ हटा लिये। उसके हाथ बहुत मैले और मुरझाये हुए थे। उसके नाखून बढे हुए थे और उनमे मैल की लकीरें जमा थी। उसे अपने हाथो पर झुँझलाहट हुई। उसे लगा कि उसके हाथ चेककी नीली लिखावटकी तरह सुन्दर और सुडौल होने चाहिए—भरे भरे और कसाव लिये हुए। उसने दो एक बार मुट्ठियाँ बाँध कर खोलीं और हाथोको मला। पर वे उँगलियाँ वैसीकी वैसी ही रही—जिनके एक एक पोर पर न जाने कितनी लकीरें खिची थी—जैसे वे कुहरेमें ठिठुरी हुई उँगलियाँ हो।

रायने दोनो हाथोकी उँगलियाँ उलझा कर हथेलियाँ मिला ली। उस का ध्यान रद्दीकी टोकरीके पास रखे जूतेकी ओर चला गया। जूतेका चमडा भी उसकी उँगलियोंके चमडेकी तरह सूखा था। बहुत पहले वह चमडा शायद किसी हट्टे-कट्टे पशुके शरीर पर था। वहाँसे उतर कर वह भीगा, छिला, कटा, सिला और उसके पैरमें आया। पैरमें घिसा, फटा, सूखा और बेकार हो गया। मगर उसके हाथका चमडा? वह उसके शरीर पर ही सूख रहा था—क्यो?

रायके मनमें बगावतका भाव पैदा हुआ—अपने प्रति, उस कमरेकी नीची छत और चारो ओरसे कसती हुई दीवारोंके प्रति, एशिया सर्जिकलकी

फाइलो और अलमारियोमें रखे चीरफाडके औजारोके प्रति और मालिकसे लेकर गुजराती ढावेके वैरो तक हरएकके प्रति । उसे कुछ क्षणोके लिए तो लगा कि वह अपने सारे वातावरणको तहस-नहस कर देगा, पर फिर उसकी आँखे हरे चेककी नीली इवारत पर स्थिर हो गयी और तीन और शून्यके हिंदसे अधिक मासल होकर उसके सामने उभरने लगे । धीरे-धीरे उन हिंदसोका अर्थ हो गया दस दसके तीन नोट, नये या मैले, पर कुछ भी खरीदने में समर्थ । उन नोटोकी आकृतियोंके नीचे रायका बगावतका भाव दब गया ।

ये तीस रुपये बिल्कुल उसके अपने थे । हर मास उसे जो वेतनके साठ रुपये मिलते थे, वे कभी उसके अपने नही होते थे । उनमेंसे चालीस पैंतालीस रुपये तो पहले दिन ही होटल और सिगरेट वालेका बिल चुकानेमे चले जाते थे और इस पर भी अर्सेसे उनका बकाया चला आ रहा था । बाकी रुपये भी तीन चार दिनसे अधिक जेबमें नही रहते थे, क्योकि उसकी कितनी ही इसानी जरूरते उधारके सिर पर पूरी होती थी, और जो लोग उधार देते थे वे महीनेके पहले सात दिनोमे किसी न किसी तरह सामने पड ही जाते थे । मगर वे तीन और शून्यके दोनो हिंदसे आज उसके अपने थे—वह उनसे कुछ भी कर सकता था, कुछ भी खरीद सकता था । रायने चेक हाथ मे ले लिया और फिर कुर्सीके साथ टेक लगा कर थोडा पीछेकी ओर झूल गया ।

तीस रुपये—नकद तीस रुपये उसके पास थे जिनका वह जैसे चाहे उपयोग कर सकता था । उसने पैरोमें फटे हुए जूतेके स्थान पर चमकते हुए नये जूतेकी कल्पना की, शरीर पर शार्कस्किनकी बुशशर्ट और आर्टलिनकी पतलूनकी कल्पना की । परन्तु तभी उसके वे सूखे हुए हाथ सामने आ गये जिनकी उँगलियाँ बढे हुए नाखूनोंके अनुपातमें छोटी प्रतीत होती थी, और वह विटामिन बीकी गोलियो, नारगियो और मक्खनकी टिकियाओकी कल्पना करने लगा । जब ये सब कल्पनाएँ एक दूसरीमें उलझ गयी तो

वह फिर कुर्सी सीधी करके मेज़ पर झुक गया और चेकके सुडौल हिंदसोको देखने लगा।

शामको जिस समय राय कुर्सियाँ हटाकर और विस्तर विछा कर ताला हाथमें लिये हुए कमरेसे बाहर निकला, उस समय तक वह चेक, नीचेके इम्पोर्ट एक्सपोर्ट वाले दीनू भाईकी सहायतासे तीन नोटोमें बदल चुका था। ताला लगा कर जब वह नीचे उतरा तो उसके ओठ हल्की-सी मुसकराहटसे अनायास फैल रहे थे और चुटकी वजा कर सिगरेटकी राख झाडनेमें खासी वेपरवाही आ गयी थी। चार मजिलोकी सीढियाँ उतर कर जब वह बाजारमें आया तो कई क्षण सिगरेटके लबे-लबे कश खीचता हुआ खडा रहा। कालवा देवीकी तरफ कई ट्रामे एक दूसरेके पीछे घिसटती जा रही थी, और प्रिंसेस स्ट्रीटके मोड पर फ्लोरा फाउण्टेनको जानेवाली वस आकर रुकी ही थी। रायके देखते-देखते वह वस चली गयी, लेकिन उसके कदम उसकी ओर नही वढे, हालाँकि वह फ्लोरा फाउण्टेन जानेके इरादेसे ही निकला था। उसने सिगरेटका आखिरी कश खीच कर उसके नाखून भरके टुकडेको पैरके नीचे मसल दिया और पैदल क्राफर्ड मार्केटकी तरफ जाने वाली पगडडी पर चल पडा।

क्राफर्ड मार्केटसे जरा पहले ही वाई ओर वह दुकान थी जिसके शोकेसमें रखा सफेद ब्राउन जूता रोज उसकी आँखोको वरवस अपनी ओर खीच लिया करता था। जूता आज भी यथास्थान तिरछे कोणसे रखा था और उसका टिप बहुत चमक रहा था। राय पल भर जूतेके टिप और गदराये हुए फ़ीतेको देखता रहा और फिर ज़रा चेष्टासे चेहरेको गम्भीर वना कर और पतलूनकी विगडी हुई लकीरको थोडा सँवार कर दुकानके अदर चला गया।

पहले उसने वह सफेद-ब्राउन जूता ही निकलवाया। उसका चमडा बहुत मुलायम था और सोल डेढ उँगली मोटा था। रायने पुराना जूता उतार कर उसे पाँवमें पहन लिया और दुकानके मोटे गलीचे पर चहलकदमी करने लगा। दुकानदारने जूतेका दाम उनतीस रुपये पद्रह आने

बतलाया था । रायने चलते हुए शीशेमे अपना प्रतिबिम्ब देखा । सिर पर उसके रूखे वालोकी गाँठे सी बँध रही थी । कमीजका कालर दोनो ओरसे फट गया था और नीचेका कपडा बाहर निकल आया था । पतलूनकी लकीर को उसने बाहरसे आते हुए ठीक करनेकी चेष्टा की थी, पर उससे उसके समानान्तर एक और लकीर बन गयी थी । उसके नीचे पैरमे वह उनतीस रुपये पद्रह आनेका जूता था, जिसका सोल चलते-चलते गलीचे परसे फिसल जाना चाहता था । एक बार उसने एक मन्दिर देखा था, जिसके टूटे फूटे कलश पर किसीने सोनेकी झडी लगवा दी थी । उस मन्दिरका ध्यान आते ही वह शीशेके सामनेसे हट कर कुरसी पर आ बैठा । उसके मनने जल्दी-जल्दी व्यवस्था दी कि तीस रुपयेका जूता खरीदना बेकार है—सोलह सत्रहका कोई गुजारे लायक जूता ले लिया जाय, और बाकी रुपयोसे एक कमीज़ पतलून बनवा ली जाय । वेतनके रुपयोमेंसे पैसा निकाल कर कुछ बनवा पाना तो लगभग असम्भव ही था

दुकानदार उसके अनिश्चयको भाँप रहा था । उसने जूता उसके पैरसे उतार कर दो बार हाथमे उछाला और फिर फूँक मार कर कपडेसे पोछते हुए कहा, "इसके अलावा आपको और क्या चाहिए ?" और उसने अपने लड़केको आवाज़ दी कि वह जूता बाँध दे ।

"अभी ठहरिए", राय कुछ अव्यवस्थित होकर बोला, "दो-एक इससे हल्के डिजाइन भी दिखा दीजिए, ज़रा देख लें तो "

दुकानदारने दस रुपयेसे लेकर पच्चीस रुपये तकके कई जूते उसके सामने खोल दिये । रायने हर एक को हाथमें लेकर उलट-पलट कर देखा, दो एकको पैरमे पहन कर गालीचे पर चला, परन्तु कोई जूता उसके मनको नही जँचा । जब दुकानदारके पास कोई और चीज़ दिखाने लायक नही रही तो उसने धीरेसे सिर हिला दिया ।

"तो वही पहले वाला ले लीजिए, वही सबसे अच्छा है", दुकानदार कहने लगा ।

रायने फिर सिर हिला दिया और पुराना जूता पहन कर उसके फीते बाँधने लगा।

"दूसरी जगह देख लूँ, शायद कोई और चीज़ मिल जाय", उसने कहा।

नये जूतोंके ढेरमें उसका पुराना जूता बहुत ही बदनुमा लग रहा था। अपने तरुण सजातीयोमें आकर वह जैसे लज्जासे कुण्ठित हो गया था और कह रहा था कि तुम्हारा अपना तो कुछ बनता बिगडता नही, पर दूसरेके तो मान अपमानकी कुछ चिंता कर लिया करो। रायने एक फीता ज़ोरसे कसा तो वह टूट कर आधा उसके हाथमें आ गया। उसने उसे उँगलीमें लपेट लिया और बाहर निकल आया।

बाहर आ कर उसे कितनी ही चीज़ोका ध्यान आने लगा, जिन्हे उसने समय-समय पर ख़रीदना चाहा था। ह्वाइटवेज़में उसने एक बहुत ख़ूबसूरत टेबल लैंप देखा था जिसका हल्का नीला शेड उसे बहुत पसद था। आर्मी नेवी स्टोरमें एक सफेद फलटेका चाकू रखा था जिसकी धार देखते हुए कुछ दिन हुए उसने अपनी उँगली पर ज़ख्म कर लिया था। फ्लोरा फाउटेन के फुटपाथ पर दो दिन पहले उसने एक लडकेके पास बहुत अच्छी नेकटाइयाँ देखी थी। रास्तेमें चलते हुए अब भी कई चीज़ें उसका ध्यान खीच रही थी। वह सोचने लगा कि यदि वह अपनी चायदानी ख़रीद ले तो उसकी चार छ आने रोज़की बचत हो सकती है, और उसकी टूटी हुई साबुनदानी रोज़ कपडे गीले कर देती है, इसलिए एक नयी साबुनदानी भी उसके पास जरूर होनी चाहिए।

क्राफर्ड मार्केटमें एक चक्कर लगा कर वह बोरीबदरकी तरफ चल दिया। बोरीबदरके ट्राम जक्शन पर आ कर वह काफी देर ट्रामकी प्रतीक्षा मे खडे लोगोको देखता रहा। उसे एक व्यक्तिके हाथमें बँधा हुआ घडीका जालीदार फीता बहुत पसद आया। एक लड़की सफेद डोरेदार रूमालमें नाक साफ कर रही थी। रायने हाथ पतलूनकी जेबमे डाल कर अपनी

उँगलियोको मसला । उसे महसूस हुआ कि इसानके पास एक रूमालका होना भी बहुत जरूरी है ।

एक ट्राम फ्लोरा फाउण्टेनकी तरफसे आयी और आधेसे अधिक लोगो को लेकर चली गयी । राय ट्राम स्टैंडसे हट कर फ्लोरा फाउण्टेनकी तरफ चल पडा । हार्नबी रोडसे गुज़रते हुए एक दुकान पर उसे बहुत भीड दिखायी दी तो वह अनजाने ही उस भीडमे सम्मिलित हो गया । अदर पहुँच कर उसने देखा कि दुकान तो कपडेकी है, पर अधिकाश लोग वहाँ बरसातियाँ ख़रीद रहे हैं । चारो तरफ तरह तरहकी बरसातियोके ढेर लगे थे । एक सेल्जमैन बता रहा था कि गबार्डिनकी बरसातीका दाम तीस रुपया है, रबडकी बरसातीका दाम पद्रह रुपया है और प्लास्टिककी बरसातियाँ दस-दस रुपयेमे है ।

बरसातियोको देख कर रायको ध्यान आया कि आते हुए रास्तेमें उस पर हल्की हल्की बूदे पड रही थी । दो तीन दिन पहले एक अच्छी बारिश हो चुकी थी । उसे याद आया कि पिछले साल बारिशमे कही आने जानेमे उसे कितनी तकलीफ होती रही है । कभी उसने एक छाता ख़रीदा था, जो ख़रीदनेके पद्रह दिन बाद ही गुम हो गया था । महीना बीस दिन की बात हो तो आदमी किसी तरह चला भी ले, पर बारिशके पूरे चार महीने बिना बरसातीके निकालना लगभग असम्भव ही था । उसने सोचा कि अगर वह जूतेकी बजाय आठ दस रुपयेकी चप्पल ले ले और कमीज़ पतलूनके लिए भी कोई कपडा आठ दस रुपयेमें उसे मिल जाय तो दस रुपयेका बर-साती कोट लिया जा सकता था । उसने प्लास्टिककी बरसातीको हाथमे मसला और कधे पर रख कर देखा और उसे रख कर सेल्ज़मैनसे कमीज़ोका कपडा दिखानेके लिए कहा ।

"कैसा कपडा चाहिए ?" सेल्जमैनने पूछा ।

"कैसा भी हो", कहते हुए रायने चेष्टापूर्वक अपने दाँतोको ओठोंसे ढाँप लिया ।

"सफेद पापलीन दिखाऊँ ?"

रायने सिर हिला दिया । सेल्जमैनने बढिया सफेद पापलीनका थान उसके सामने खोल दिया । रायने उस कपडेका वजन हाथ पर महसूस करते हुए उसका भाव पूछा ।

"चार रुपया ।"

"चार रुपया गज ?" रायके मुँहसे अनायास निकल गया । कह चुकनेके अगले क्षण उसे ध्यान आया कि उसके आश्चर्यकी ध्वनि कुछ और भी व्यजित कर गयी है ।

सेल्जमैनने गहरी नज़रसे उसकी ओर देखा । उसकी आँखसे मिलते ही रायकी आँखें दूसरी ओर घूम गयी । सेल्ज़मैनके माथे पर बल पड गये और उसके दाँत आपसमें मिल गये । रायकी कमीज़के फटे हुए कालरो पर आँख स्थिर किये हुए उसने ओठ चबा कर कहा, 'जी हाँ, चार रुपया गज ।'

रायने चुपचाप सिर हिलाया । सेल्ज़मैन अब भी सीधी आँखोंसे उसकी तरफ देख रहा था । राय कपडेके थानके पाससे हट कर फिर प्लास्टिककी बरसाती देखने लगा । बरसातीको छोड कर उसने एक उडती हुई नज़र ऊपरके ख़ानोमें रखे छीटके थानो पर डाली और जैसे कुछ विमर्श करता हुआ बाहरकी तरफ चल पडा । चलते-चलते उसने लक्षित किया कि सेल्ज़मैन थान लपेटता हुआ उसीकी तरफ देखे जा रहा है । उसने दुकानसे उतरते हुए तीनो नोट जेबसे निकाल लिये और जैसे और कोई कागज ढूँढना हो, इस तरह जेबमें टटोल कर उन्हे फिर वापस जेबमे रख लिया । उसके बाद फिर सेल्जमैनसे नज़र मिला कर वह आगे चल पडा ।

बहुत हल्की-हल्की बूँदें अब भी पड रही थी । अँधेरा हो जानेसे चारो तरफ सडको और दुकानोकी बत्तियाँ जगमगाने लगी थी । राय फ्लोरा फाउण्टेनसे आगे निकाल कर दायें हाथको मुड गया । रास्तेमे दो एक जगह रुक कर उसने मोज़ेका जोडा, मफलर, बिस्कुटका डिब्बा, फाउण्टेन पेन और सिगरेट केस जैसी कई छोटी-मोटी चीज़ोंके भाव पूछे, परन्तु यह दिक्कत

हर जगह बनी रही कि जहाँ दाम ठीक थे वहाँ चीज़ अच्छी नही थी और जहाँ चीज मनपसद की थी, वहाँ दाम जरूरतसे ज़्यादा थे। जिस समय वह उस बडे रेस्तराँके सामने पहुँचा जिसके अदरसे रंगीन कुर्सियाँ प्राय उसे निमत्रण देती प्रतीत हुआ करती थी, तो वह चलते-चलते और सोचते-सोचते काफी थक गया था। बहुत दिनोसे उसकी उस रेस्तराँमें बैठ कर चाय पीनेकी इच्छा थी। गलेके बटनके पाससे कमीज़को ठीक करता हुआ वह रेस्तराँके अदर चला गया।

रेस्तराँमें उस समय काफी भीड थी। एक बैरा आकर उसे एक खाली मेज़के पास ले गया। राय हरे रगकी बेंतकी कुर्सी पर बैठ कर वहाँके वातावरणको चकाचौंध नज़रोसे देखने लगा। एक तरफ आर्केस्ट्रा बज रहा था और दो-एक जोडे नाच रहे थे। आसपास बहुतसे लोग शीशेके गिलासोमें बियर या ह्विस्की लिये बैठे थे। काली और सफेद वर्दी वाले बैरे व्यस्ततापूर्वक इधर उधर आ-जा रहे थे। उसके बैरेने दूसरी जगहसे मेन्यू उठा कर उसके सामने ला रखा। राय मेन्यू देखने लगा—उसकी आँखें पहले दायी ओर छपी कीमतो पर पड़ती, फिर बायी ओर छपे नामो पर। बैरा आर्डर लेनेके लिए जरा झुक गया।

"अभी ठहरो", रायने मेन्यू पर नज़र गडाये हुए कहा और चेष्टापूर्वक ओठ बद करके दाँतोको छिपा लिया। बैरा चला गया।

मेन्यू को एक सिरेसे दूसरे सिरे तक देख कर जब रायने आँख उठायी तो एक एग्लो-इण्डियन लड़की बाहरसे अदर आ रही थी। रायकी आँखें उसके शरीर पर स्थिर हो रही। उसने बिना बाँहका ब्लाउज़ पहन रखा था, जिससे उसका गोरा मांस दूर तक दिखायी दे रहा था। वह उडती हुई नज़र चारो तरफ डाल कर सीधी उसकी मेजके पास ही आ गयी तो रायको कुछ आश्चर्य हुआ। जब उसने मुलायम स्वरमें उससे पूछा, "मै यहाँ बैठ सकती हूँ?" तो उसने एक बार अडबडा कर इधर-उधर देखा और यह लक्षित करके कि आस-पास कही जगह खाली नही है, कुछ नम्रता, कुछ अभिलाषा और कुछ घबराहटके साथ कहा, "बैठिए।"

वह धन्यवाद दे कर पासकी कुर्सी पर बैठ गयी। रायको उसका बैठने, पर्स खोलने और पर्समेंसे सिगरेट केस निकालनेका ढग बहुत आकर्षक लगा। उसकी लबी पतली उँगलियाँ बहुत ही सुन्दर थी।

लडकीने अपना सिगरेट केस खोला और एक सिगरेट अपने मुँहमें लगा कर सिगरेट केस रायकी ओर बढाते हुए कहा, "सिगरेट लीजिए।"

रायने धन्यवाद दे कर सिगरेट ले लिया। अभ्यासवश उसका हाथ दियासलाईकी डिबिया निकालनेके लिए पतलूनकी जेबमें चला गया, पर तब तक लडकीने अपना सिगरेट सुलगा कर लाइटर उसकी तरफ बढा दिया।

रायकी समझमें नही आ रहा था कि उसे उस दयामयीसे किस तरह बात करनी चाहिए। बात करनेको तो खैर कुछ नही था, कुछ भी बात की जा सकती थी, परन्तु बातको शुद्ध अंग्रेज़ीमें कह पाना बहुत बडी समस्या थी। वह व्यस्त रहनेके लिए लगातार सिगरेटके कश खीचता रहा। कुछ देर बाद लडकीने आँखें ज़रा कुचित करके मुँहसे धुआँ निकालते हुए पूछा, "इस तबाकूकी गन्ध आपको कैसी लगती है?"

"बहुत अच्छी गध है", यह वाक्य अंग्रेज़ीमें इतनी आसानीसे बन गया कि रायको स्वय अपनी योग्यता पर आश्चर्य हुआ।

"यह फ्रासीसी तबाकू है", लडकी सिगरेटकी राख झाडती हुई बोली, "मेरा एक मित्र पेरिससे ये सिगरेट लाया था।"

"बहुत अच्छी गध है", रायने फिर कहा और आँखोमें प्रशसात्मक भाव लाकर सिर हिलाया। ओठोको जरा गोल करके उसने चेष्टा की कि उसके मुँहसे भी धुआँ उसी तरह निकले जैसे उस रूपसीके मुँहसे निकलता है।

"आप नौकरी करते है?" लडकीने पूछा।

"नही बिज़नेस करता हूँ", यह रायने इस लिए कह दिया कि अंग्रेज़ीमे यह उससे आसानीसे कहा गया।

"किस चीज़का बिज़नेस?"

"चीर-फाडके औज़ारोका।"

"उसमे तो काफी नफा होता होगा।"

रायने कहना चाहा कि हाँ गुजारे लायक कुछ हो ही जाता है पर जल्दी में वह इसका ठीक अनुवाद नही सोच पाया, इसलिए उसने कह दिया, "हाँ, काफी हो जाता है।"

दो क्षणकी चुप्पीके बाद रायने अपनी ओरसे प्रश्न किया, "मै आपका नाम जान सकता हूँ ?"

'जेनी डि' सूजा। और आपका नाम ?"

"राय।"

"सिर्फ राय ?"

"नही, दामोदर दास चिंतामणि राय।"

"डामोडर डास चिंटामोनी राय ?", जेनीने दोहराया। रायको इस रूपमे अपने नामका उच्चारण बहुत अच्छा लगा और उसके ओठ फैलनेको हुए, पर दाँतोका ध्यान आ जानेसे वह उन्हे सकुचित किये रहा।

"आप भी कही काम करती है ?" उसने दूसरा प्रश्न पूछा।

जेनी उसे बतलाने लगी कि वह एक फर्ममें असिस्टेटके रूपमें काम करती है। काम उसके मनका नही है, फिर भी पैसेकी वजहसे उसे करना पडता है। शामको कुछ देर वह सैल्वेशन आर्मीका काम करती है। उसके बाद थकान दूर करनेके लिए किसी रेस्तराँमें चली आती है। वहाँ कभी कोई साथी मिल जाता है तो शाम अच्छी बीत जाती है।

रायकी आँखे उसके शरीरकी गोलाइयो पर घूम रही थी। चर्च गेट, रीगलके फुट पाथ और काला घोडाके चौराहे पर ऐसी युवतियोको उसने अनेक बार देखा था। उनके पाससे गुजरते हुए शरीरकी दबी हुई भूख जैसे अग-अगमें लहरा जाती थी। परन्तु कभी उसके पास इतने पैसे नही हुए थे कि वह उस भूखको शान्त कर सकता। आज ज़िदगीमें पहला अवसर था जब कि एक लडकी उसके बगलमे बैठी थी, और बैठी ही नही थी, उसकी

आँखे उससे प्रस्ताव कर रही थी और उसकी अपनी जेवमें दस दसके तीन नोट थे जिनकी सामर्थ्यसे वह उसे पा सकता था

जेनीकी गोरी पिंडलियोसे हटकर उसकी आँखे पल भर उसके हरे रग के सैंडलो पर टिकी रही और वहाँसे उठ कर सहसा अपने पाँवमे पडे जूतेसे टकरा गयी, जो होटलके चिकने फर्श पर मटमैले दाग सा लगता था। जूतेके पजे वीचसे वल खाकर थोडा थोडा ऊपरको उठ आये थे और मैलसे भरी एडियाँ कोनोसे तीन चौथाई घिस चुकी थी। पैरोके पाससे ही पतलून के फुँदने निकल रहे थे, जिन्हें काटनेके लिए ही उसने कैंची खरीदनेकी बात सोची थी। रायने सिगरेटका टुकडा एशट्रेमें डालकर मल दिया और ओठोको ज़बान फेर कर गीला किया।

वैरा फिर उसके पास जा कर थोडा झुक गया। उसकी आँखे जेनीकी आँखोसे मिली।

"मेरे लिए जिनके साथ जिंजर", जेनीने कोमल स्वरमे कहा।

"इनके लिए जिनके साथ जिंजर", रायने दोहराया।

"और ?" वेरा उसी तरह झुका रहा।

"और अभी ठहर जाओ " और वह फिर झुक कर मेन्यू देखने लगा। वैरा चला गया।

जेनीने दूसरा सिगरेट सुलगा कर सिगरेट केस उसकी ओर वढाया तो उसने धन्यवाद देकर मना कर दिया। जेनीके मुँहसे हल्का नीला धुआँ बहता हुआ सा निकलता और कुछ देर हवामे लचक कर विलीन हो जाता। रायके हाथके पसीनेसे मेजका शीशा कुछ गदला हो गया था। उसने हथेली के कोनेसे उसे साफ किया और हाथ हटा लिया। वैरा जिन और जिंजर लाकर जेनीके सामने रख गया। जेनी छोटे छोटे घूँट भरने लगी।

आर्केस्ट्रा पर नाचकी धुन वजनी आरम्भ हुई तो जेनीने फिर उसकी ओर देखा और पूछा, "आप नाचना पसन्द करेंगे ?"

"मैं नाचना नही जानता," रायने एक हाथकी उँगलियोको दूसरे हाथ से मसलते हुए उत्तर दिया और उसकी आँखे झुक कर फिर जूते पर जा टिकी। आस-पाससे बहुतसे लोग नाचनेके लिए उठ रहे थे। पासकी एक टेबलसे एक नवयुवकने जेनीके पास आकर उससे नाचनेका प्रस्ताव किया। जेनी गिलास उसी तरह छोड कर उठ खडी हुई और उसके साथ नाचने लगी। दूरसे उसके शरीरकी लचक रायको और भी आकर्षक लगी। नाचती हुई एक बार वह उसकी ओर देख कर मुसकरायी तो रायके मस्तिष्कमे भँवर-सा घूम गया। उसने तीनो नोटोको जेबसे निकाल कर देखा और दूसरी जेवमें रख लिया। उसे कुछ गर्मी महसूस हो रही थी। उसने ऊपर छतके पखेको देखा और उसे लगा कि वह बहुत धीमी गतिसे चल रहा है। उसका मन हुआ कि बैरेको बुला कर उससे पखा तेज़ करनेको कहे, पर बैरेका ध्यान आते ही उसे मेन्यू का ध्यान हो आया। सामने जेनीका जिनका गिलास रखा था जिसमेंसे दो चार घूँट ही भरे गये थे। लोगोके नाचनेके लिए उठ जानेसे आस-पास आधीसे अधिक कुर्सियाँ खाली हो गयी थी। सामने दरवाजेकी जालियोमेंसे बाहर फुटपाथकी हल्की-हल्की झलक दिखायी दे रही थी। मेज़का शीशा उसकी बाँहके पसीनेसे फिर गदला हो गया था। आर्केस्ट्राकी धुन तेज हो गयी थी, लेकिन छत पर पखा बहुत धीमे-धीमे चल रहा था। बाईं ओर लगी घडीने जल्दी-जल्दी आठ वजा दिये। राय सहसा जैसे चौंक कर उठ खडा हुआ और दरवाज़ेकी ओर चल दिया।

जालीदार दरवाज़ेसे निकल कर जब वह फुट पाथ पर पहुँचा तो उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि हल्की-हल्की बूँदें अब भी पड रही है। फुट पाथ गीला होकर और भी चिकना हो गया था। उसने पीछेकी ओर देखा। जालीदार दरवाज़ा बद था। अदर पडी रगीन कुर्सियो पर एक नज़र डाल कर वह वहाँसे चल पडा। फ्लोरा फाउण्टेनके पाससे ट्रामकी पटरी पार करते हुए उसका पाँव फिसल गया और वह बड़ी मुश्किलसे गिरनेसे

बचा । परन्तु फिसलनेसे दाये पैरके जूतेका मुँह आगेसे खुल गया और वह बोलने लगा—तपत् तपत् तपत्

राय एक-एक करके उन सब दुकानोके पाससे गुजर गया जिनमें आते हुए वह एक या दूसरी चीज़का भाव पूछनेके लिए रुका था । जूतेकी दुकानके बाहर शो केसमें रखे सफेद-ब्राउन जूतेके पाससे तो वह जैसे आँख चुरा कर आगे निकला । किन्तु प्रिंसेस स्ट्रीटके मोड पर पहुँच कर वह भौंचक-सा खडा होकर पटरियो और ट्रामोको देखने लगा । सामने थोडी ही दूरी पर वह इमारत थी जिसकी चौथी मजिल पर उसका कमरा था । उससे पहले बायी ओर वह ढाबा था जहाँ वह रोटी खाया करता था । उसने मन ही मन हिसाब किया कि ढाबे वालेके उसकी ओर पुराने हिसाबमें तेईस चौबीस रुपयेके लगभग निकलते है । ढाबेके साथ ही पनवाडीकी दुकान थी जिसके नौ रुपयेमेंसे इस बार कुल पाँच रुपये ही चुकाये गये थे । इसके अतिरिक्त कुछ पैसे बिसातीके रहते थे । और पद्रह रुपये नकद उधारके थे, जो उसने चार महीने पहले तुलुजासे लिये थे । तुलुजा पिछले सप्ताह ही उससे अपने पैसोंके लिए तकाजा कर रहा था ।

रायके कदम ढाबेकी ओर बढ गये । वहाँसे खाना खा कर और पान वालेसे कैंचीकी डिबिया लेकर वह अपने कमरेमें आ गया । कमरेमे आकर उसने मेज और कुर्सियोको कोनोकी तरफ हटा दिया और छज्जेसे लाकर गद्दा फर्श पर बिछा लिया । तीनो नोट उसने जेबसे निकाल कर तकियेके नीचे रख दिये और जूता उतार कर गद्दे पर लेट गया । हवा बद हो गयी थी और कमरेमें बहुत उमस हो रही थी । उसने उठ कर बत्ती बद कर दी तो भी सामने घरकी खिडकी से रोशनी उसके कमरेमें आती रही । रोशनी उमसको और बढा रही थी, जिससे उसकी तबीअत बेचैन हो रही थी । सामनेकी अलमारीमें चीर-फाडके औज़ार चमक रहे थे । उधर कोनेमें मैले कपडे गोल किये रखे थे जो सबके सब जर्जर हालतमें थे । कमरेमें उन कपडोकी वजहसे, या वैसे ही एक गन्ध सी बस गयी थी । और सामने फर्श

पर उसका फटा हुआ जूता रखा था, जिसकी पिछली सीवने पहलेसे ज़्यादा उघडी हुई मालूम होती थी ।

राय कई क्षण जूतेकी घिसी हुई एडियो और उघडी हुई सीवनोको देखता रहा । फिर उसने आँखे मूँद ली और वे सब चीज़े एक-एक करके उसके सामने आने लगी जिन्हे वह थोडी देर पहले बहुत पाससे देख कर आया था—सफेद-ब्राउन जूता, बरसाती कोट, मोजा, सिगरेट केस, रगीन कुर्सियाँ और   और जेनी डि सूजा, जिसकी उँगलियाँ बहुत पतली थी और जिसके ओठोमेंसे निकलता हुआ नीला धुआँ बहुत खूबसूरत मालूम होता था   ।

उसने आँखें खोली तो वे उधडी हुई सीवने और घिसी हुई एडियाँ ही सामने थी । उसने करवट बदल कर जूतेकी ओर पीठ कर ली और हाथ तकियेके नीचे नोटो तक पहुँचा कर आँखे धीरे-धीरे फिर मूँद ली और सब चीजोके बारेमे नये सिरेसे सोचने लगा .. ।

अपरिचित

कुहरेकी वजहसे खिडकियोंके शीशे धुँधले पड गये थे । गाडी चालीस मीलकी रफ्तारसे सुनसान अँधेरेको चीरती चली जा रही थी । खिडकीसे सिर सटा कर भी बाहर कुछ दिखायी नही देता था, फिर भी मैं आँख गडा कर देखनेका प्रयत्न कर रहा था । कभी किसी पेडकी हल्की गहरी रेखा ही पाससे गुज़र जाती तो कुछ देख लेनेका सन्तोष होता । मनको उल-झाये रखनेके लिए इतना ही काफी था । पलकोमें जरा नीद नही थी । गाडीको जाने कितनी देर बाद कही जा कर ठहरना था । जब और कुछ दिखायी नही देता तो अपना प्रतिबिम्ब तो कम-से-कम देखा ही जा सकता था । अपने प्रतिबिम्बके अतिरिक्त और भी कई प्रतिबिम्ब थे । ऊपरकी बर्थ पर सोये हुए व्यक्तिका प्रतिबिम्ब अजब बेबसीके साथ हिल रहा था । नीचे सामनेकी बर्थ पर बैठी हुई महिलाका प्रतिबिम्ब बहुत उदास था । उसकी भारी भारी पलके पल भरके लिए ऊपर उठती और फिर नीचे झुक जाती । आकृतियोंके अतिरिक्त कई बार नयी-नयी ध्वनियाँ ध्यान बँटा लेती थी, जिनसे भान होता था कि गाडी अब पुल परसे जा रही है या मकानो की पक्तिके आगेसे गुज़र रही है । बीच बीचमें सहसा इजनकी सीटी चीख जाती, जिससे अँधेरा और एकान्त और गहरे प्रतीत होने लगते ।

मैंने खिडकीसे सिर हटा कर घडी की ओर देखा । सवा ग्यारह बजे थे ।

सामने बैठी हुई महिलाकी आँखे बहुत सुनसान थी । बीच बीचमे उनमें एक लहर-सी आती और विलीन हो जाती । वह जैसे आँखोंसे देख नही रही थी, सोच रही थी । उसकी बच्ची जो फरके कम्बलोमे लिपट कर सोयी थी, ज़रा-ज़रा कुनमुनाने लगी । उसकी गुलाबी ऊनकी टोपी सिरसे उतर गयी थी । उसने दो एक बार पैर पटके, अपनी बँधी हुई

मुट्ठियाँ ऊपर उठायी और सहसा रोने लगी। महिलाकी सुनसान आँखें उमड आयी। उसने बच्चीके सिर पर टोपी ठीक कर दी और उसे कम्बलो समेत उठा कर छातीसे लगा लिया।

मगर इससे बच्चीका रोना बद नही हुआ। उसने बच्चीको हिला कर और दुलरा कर चुप कराना चाहा, पर फिर भी वह रोती रही तो उसने कम्बल थोडा ऊपर उठा कर उसके मुँहमे दूध दे दिया और उसे अपने साथ सटा लिया।

मैंने फिर खिडकीके साथ सिर टिका लिया। दूर एक बत्तियोकी कतार नजर आ रही थी। शायद वह कोई आबादी थी, या केवल सडक ही थी। गाडी बहुत तेज़ चल रही थी और इजन पास होनेके कारण कुहरे के साथ धुआँ भी खिडकीके शीशो पर जमता जा रहा था। आबादी या सडक, जो भी था, अब धीरे-धीरे पीछे रहा जा रहा था। शीशेमें दिखायी देते हुए प्रतिबिम्ब पहलेसे गहरे हो गये थे। महिलाकी आँखें बद थी और ऊपर लेटे हुए व्यक्तिकी बाँह जोर-ज़ोरसे हिल रही थी। शीशे पर मेरी साँसके फैलनेसे प्रतिबिम्ब और धुँधले हुए जा रहे थे। यहाँ तक कि एक बार सब आकृतियाँ अदृश्य हो गयी। मैंने जेबसे रूमाल निकाल कर शीशे को पोछ दिया।

महिलाने आँखें खोल ली थी और एक-टक सामनेकी ओर देख रही थी। उसके ओठो पर हल्की-सी मधुर रेखा फैली थी, जो ठीक मुसकराहट नही थी। मुसकराहटसे बहुत कम व्यक्त उस रेखामें गम्भीरता भी थी और अवसाद भी—वह जैसे अनायास उभर आयी किसी स्मृतिकी रेखा मात्र थी। उसके माथे पर भी हल्की-सी सिकुडन पड गयी थी।

बच्ची जल्दी ही दूधसे हट गयी। उसने सिर उठा कर अपना बिना दाँतका मुँह खोल दिया और किलकारी मारती हुई माँकी छाती पर मुट्ठियो से प्रहार करने लगी। दूसरी ओरसे आती हुई एक गाडी तेज़ीसे गुज़री तो वह ज़रा सहम गयी, मगर गाडीके गुज़रते ही और भी मुँह खोल कर

किलकारी मारने लगी। बच्चीका चेहरा गदराया हुआ था और उसकी टोपीके नीचेसे भूरे रगके हल्के-हल्के बाल नजर आ रहे थे। उसकी नाक ज़रा छोटी थी, पर आँखें माँकी ही तरह गहरी और फैली हुई थी। माँके गाल और कपडे नोच कर उसकी आँखे मेरी ओर घूम गयी और वह बाहें हवामें झटकती हुई मेरी ओर देख कर किलकारियाँ मारने लगी।

महिलाकी पुतलियाँ उठी और उसकी उदास आँखें पल भर मेरी आँखोसे मिली रही। मुझे क्षणभरके लिए लगा कि मैं एक ऐसे क्षितिजको देख रहा हूँ, जिसमे गोधूलिके सभी हल्के गहरे रंग झिलमिला रहे हैं और जिसका दृश्यपट क्षणके हर शताशमे बदलता जा रहा है . ।

बच्ची मेरी ओर देख कर बहुत हाथ पटक रही थी, इसलिए मैंने बच्ची की ओर हाथ बढा दिये और कहा, "आ बेटे, आ "

मेरे हाथ पास आ जाने पर बच्चीके हाथोका हिलना बन्द हो गया और उसके ओठ रुआँसे हो आये।

महिलाने बच्चीके ओठोको अपने ओठोंसे छुआ और कहा, "जा बिट्टू, जायगी ?"

लेकिन बिट्टूके ओठ और रुआँसे हो गये और वह माँके साथ सट गयी।

"पराये आदमीसे डरती है", मैंने खिसियाने स्वरमें कहा और हाथ हटा लिये।

महिलाके ओठ भिंच गये और माथेके मासमें खिचाव आ गया। उसकी आँखें जैसे अतीतमें चली गयी। फिर सहसा वे लौट आयी और वह बोली, "नहीं, डरती नही। इसे असलमें आदत नही है। यह आज तक या मेरे हाथोमें रही है या नौकरानीके हाथोमें . " और वह उसके सिर पर झुक गयी। बच्ची उसके साथ सट कर आँख झपकने लगी। महिला उसे हिलाती हुई थपकियाँ देने लगी। बच्चीने आँखें मूँद ली। महिला उसकी ओर देखती हुई जैसे चूमनेके लिए ओठ बढाये हुए उसे थपकियाँ देती रही। फिर उसने अनायास मुसकराकर उसे चूम लिया।

"बडी अच्छी है मेरी बिट्टू, झटसे सो जाती है", उसने जैसे अपनेसे कहा और मेरी ओर देखा। उसकी आँखोमें उल्लास भर रहा था।

"कितनी बड़ी है यह बच्ची ?" मैंने पूछा।

" दस दिन बाद यह पूरे चार महीनेकी हो जायगी", वह बोली, "पर यह देखनेमें अभी छोटी लगती है। छोटी लगती है न ?"

मैंने आँखोसे उसकी बातका समर्थन किया। उसके चेहरेसे अजब विश्वास और भोलापन झलकता था। मैंने उचक कर सोयी हुई बच्चीके गालको ज़रा सहला दिया। महिलाका चेहरा और वत्सल हो गया।

"लगता है आपको बच्चोसे बहुत प्यार है", वह बोली, "आपके कितने बच्चे हैं ?"

मेरी आँखें उसके चेहरेसे हट गयी। बिजलीकी बत्तीके पास एक कीडा उड रहा था।

"मेरे ?" मैंने मुसकरानेकी कोशिश करते हुए कहा, "अभी तो कोई नही, मगर "

"मतलब ब्याह हुआ है, अभी बच्चे-अच्चे नही हुए", वह मुसकरायी, "आप मर्द लोग तो बच्चोसे बचे रहना चाहते है, है न ?"

मैंने ओठ सिकोड़ लिये और कहा, "नही, यह बात नही . "

"हमारे ये तो बच्चीको छूते भी नही," वह बोली, "कभी दस मिनिट के लिए भी उठाना पड जाय तो झल्ला पड़ते हैं। अब तो खैर वे इस मुसीबत से छूट कर बाहर ही चले गये हैं।" और सहसा उसकी आँखे छलछला आयी। रुलाईकी वजहसे उसके ओठ बिल्कुल उसकी बच्ची जैसे हो गये थे। फिर उसके ओठो पर मुसकराहट आ गयी, जैसा अक्सर सोये हुए बच्चोंके साथ होता है। उसने आँखें झपक कर ठीक कर ली और बोली, "वे डाक्टरेटके लिए इगलैण्ड गये है। मैं उन्हे बबईमें जहाज़ पर चढा कर आ रही हूँ।...वैसे छ आठ महीनेकी ही बात है। फिर मैं भी उनके पास चली जाऊँगी।"

फिर उसने ऐसी नज़रसे मुझे देखा जैसे उसे शिकायत हो कि मैंने उसकी रहस्यकी बात क्यो जान ली ?

"आप बादमें अकेली जायँगी ?" मैंने पूछा, "इससे तो आप अभी साथ चली जाती ।"

उसके ओठ सिकुड गये और आँखें फिर अन्तर्मुख हो गयी । वह कई क्षण अपनेमें डूबी रही और उसी तरह बोली, "साथ तो नही जा सकती थी क्योकि अकेले उनके जानेकी भी सुविधा नही थी । लेकिन उनको मैंने भेज दिया है । मै चाहती थी कि उनकी कोई तो चाह मुझसे पूरी हो जाय । दीशीको बाहर जानेकी बहुत साध थी । अब छ आठ महीने मे अपनी तनख़ाहमेंसे कुछ बचाऊँगी और थोडा बहुत कहीसे उधार लेकर अपने जानेका बदोबस्त भी करूँगी ।"

उसने अपनी कल्पनामें डूबती उतराती आँखोको सहसा सचेत कर लिया और फिर कुछ क्षण शिकायतकी नज़रसे मुझे देखती रही । फिर बोली, "अभी यह बिट्टू भी बहुत छोटी है न ? छ आठ महीनेमें यह बडी हो जायगी । मैं भी तब तक और पढ लूँगी । दीशीकी बहुत चाह है कि मै एम० ए० कर लूँ । मगर मै ऐसी जड और नाकारा हूँ कि उनकी कोई चाह पूरी नही कर पाती । इसलिए मैंने उन्हें भेजनेके लिए अपने सब गहने बेच दिये है । अब मेरे पास मेरी बिट्टू रह गयी है ।" और वह उसके सिर पर हाथ फेरती हुई गर्वपूर्ण दृष्टिसे उसे देखती रही ।

बाहर वही सुनसान अँधेरा था, वही निरन्तर सुनायी देती हुई इजनकी फक् फक् । शीशेसे आँख गडा लेने पर भी दूर तक वीरानगी ही वीरानगी नज़र आती थी ।

परन्तु उस महिलाकी आँखोमें जैसे ससार भरकी वत्सलता सिमट कर आ गयी थी । वह फिर कई क्षण अपनेमें डूबी रही । फिर उसने एक साँस ली और बच्चीको अच्छी तरह कम्बलोमें लपेट कर सीट पर लिटा दिया ।

ऊपरकी सीट पर लेटा हुआ व्यक्ति खुर्राटे भरने लगा था । एक बरा

वह नीचे गिरनेको हुआ, पर सहसा हडबडा कर सँभल गया । कुछ ही देर बाद वह और ज़ोरसे खुर्राटे भरने लगा ।

"लोगोको जाने सफरमे कैसे इतनी गहरी नीद आ जाती है ?" वह बोली, "मुझे दो दो राते सफर करना हो तो भी मै नही सो पाती । अपनी अपनी आदत होती है । क्यो ?"

"हाँ, आदतकी ही बात है" मैने कहा, "कुछ लोग बहुत निश्चिन्त होकर जीते है और कुछ होते है कि "

"बगैर चिन्ताके जी ही नही सकते !" और वह हँस दी । उसकी हँसीका स्वर भी बच्चो जैसा ही था । उसके दाँत बहुत छोटे-छोटे और चमकीले थे । मैने भी उसकी हँसीमें साथ दिया ।

"मेरी बहुत खराब आदत है", वह बोली, "मै बात बेबातके सोचती रहती हूँ । कभी कभी तो मुझे लगता है कि मै सोच-सोच कर पागल हो जाऊँगी । ये मुझसे कहते है कि मुझे लोगोंसे मिलना-जुलना चाहिए, हँसना, बोलना चाहिए, मगर इनके सामने मै ऐसी गुम सुम हो जाती हूँ कि क्या कहूँ ? वैसे अकेलेमें भी मै ज्यादा नही बोलती, लेकिन इनके सामने तो ऐसी चुप्पी छा जाती है जैसे मुँहमे जबान ही न हो । . अब देखिए, यहाँ कैसे लतर लतर बोल रही हूँ !" और वह मुसकरायी । उसके चेहरे पर हल्की-सी सकोचकी रेखा भी आ गयी ।

"रास्ता काटनेके लिए बात करना ज़रूरी हो जाता है", मैने कहा, "खास तौर पर जब नीद न आ रही हो ।"

उसकी आँखें पल भर फैली रही । फिर वह गरदन ज़रा झुका कर बोली, "ये कहते है कि जिसके मुँहमे ज़बान न हो उसके साथ पूरी ज़िंदगी कैसे काटी जा सकती है ? ऐसे इन्सानमें और एक पालतू जानवरमें क्या फर्क है ? मै हज़ार चाहती हूँ कि इन्हें खुश दिखायी दूँ और इनके सामने कोई न कोई बात करती रहूँ, लेकिन मेरी सारी कोशिश बेकार चली जाती है । इन्हे फिर गुस्सा हो आता है और मै रो देती हूँ । इन्हें मेरा रोना बहुत बुरा लगता है ।"

कहते कहते उसकी आँखोमें दो आँसू झलक आये जिन्हें उसने अपनी साडीके पल्लेसे पोछ लिया ।

"मै बहुत पागल हूँ" वह फिर बोली,"ये जितना मुझे रोकते है, मै उतना ही ज्यादा रोती हूँ । दर असल ये मुझे समझ नही पाते । मुझे बात करना नही अच्छा लगता, फिर जाने क्यो ये मुझे बात करनेके लिए मजबूर करते है ?" और फिर माथेको हाथसे दवाये हुए बोली, "आप भी अपनी पत्नीसे जबर्दस्ती बात करनेके लिए कहते है ?"

मैने पीछे टेक लगा कर क धे ज़रा सिकोडे और हाथ बगलोमे दवाये हुए बत्तीके पास उडते हुए कीडेको देखता रहा । फिर मैने सिरको जरा-सा झटक कर उसकी ओर देखा । वह उत्सुक आँखोंसे मेरी ओर देख रही थी ।

"मैं ?" मैने मुसकरानेकी चेष्टा करते हुए कहा, "मुझे यह कहनेका कभी अवसर ही नही मिल पाता । मै बल्कि पाँच सालसे यह चाह रहा हूँ कि वह ज़रा कम बाते किया करे । मै समझता हूँ कि कई बार इसान चुप रह कर ज्यादा बात कह सकता है । ज़बानसे कही हुई बातमें वह रस नही होता जो आँखकी चमकसे, या ओठोके कपनसे या माथेकी एक लकीरसे कही हुई बातमें होता है । मै जब उसे यह समझाना चाहता हूँ तो वह मुझ से पहले विस्तारपूर्वक बता देती है कि ज्यादा बात करना इसानकी निश्छलता का प्रमाण है और कि मै इतने बरसोमें अपने प्रति उसकी सद्भावनाको समझ ही नही सका । वह दर-असल कालेजमें लेक्चरर है और उसे घरमें भी लेक्चर देनेकी आदत है ।"

"ओह !" और वह थोडी देर दोनो हाथोमें मुँह छिपाये रही । फिर बोली, "ऐसा क्यो होता है, यह मेरी समझमें नही आता । मुझे दीशीसे यही शिकायत है कि वे मेरी बात समझ नही पाते । मै कई बार उनके बालोसे अपनी उँगलियोंसे बात करना चाहती हूँ, कई बार उसके घुटनो पर सिर रख कर मुँदी हुई आँखोसे उनसे कितना कुछ कहना चाहती हूँ, लेकिन

उन्हे यह सब अच्छा नही लगता । वे कहते हैं कि यह सब गुडियोका खेल है, उनकी पत्नीको जीता-जागता इसान होना चाहिए। और मैं इसान बननेकी बहुत कोशिश करती हूँ लेकिन नही बन पाती, कभी नही बन पाती। इन्हे मेरी कोई आदत अच्छी नही लगती । मेरा मन होता है कि चाँदनी रातमे खेतोमें घूमूँ, या नदीमे पैर डाल कर घंटो बैठी रहूँ, मगर ये कहते है कि ये सब आइडल मनकी वृत्तियाँ हैं । इन्हे क्लब, संगीत-सभाएँ और डिनर पार्टियाँ अच्छी लगती हैं । मैं इनके साथ वहाँ जाती हूँ तो मेरा दम घुटने लगता है । मुझे वहाँ ज़रा आत्मीयता प्रतीत नही होती । ये कहते हैं कि तू पिछले जन्ममें मेंडकी थी जो तुझे क्लबमे बैठनेकी बजाय खेतोमें मेंडकोकी आवाजें सुनना ज्यादा अच्छा लगता है । मैं कहती हूँ कि मैं इस जन्ममे भी मेंडकी हूँ । मुझे बरसातमें भीगना बहुत अच्छा लगता है और भीग कर मेरा मन गुनगुनानेको होने लगता है, हालाँकि मुझे गाना नही आता । मुझे क्लबमे सिगरेटके धुएँमे घुट कर बैठे रहना नही अच्छा लगता । वहाँ मेरे प्राण गलेको आने लगते हैं ।"

उस थोडेसे समयमें ही मुझे उसके चेहरेका उतार चढ़ाव काफी परिचित लगने लगा था । उसकी बात सुनते हुए मेरे हृदय पर हल्की उदासी छाने लगी थी, हालाँकि मैं जानता था कि वह कोई भी बात मुझे लक्षित करके नही कह रही है– वह अपनेसे बात करना चाह रही है और मेरी उपस्थिति उसके लिए एक बहाना मात्र है । मेरी उदासी भी उसके लिए न होकर अपने लिए ही थी, क्योकि बात उससे करते हुए भी मैं सोच मुख्य रूपसे अपने विषयमे ही रहा था । मैं पाँच सालसे मज़िल दर मज़िल विवाहित जीवनमेंसे गुजरता आ रहा था, रोज़ यही सोचते हुए कि शायद आने वाला कल जिदगीके इस ढांचेको बदल दे । सतही तौर पर हर चीज ठीक थी, कही कुछ गलत नही था, मगर आन्तरिक तौर पर जीवन कितना सकुल और विपमताकी रेखाओसे भरा था । मैंने विवाहके पहले दिनोमें ही जान लिया था कि नलिनी मुझसे विवाह करके सुखी नही हो सकी, क्योकि मैं

जीवनमें उसकी कोई भी महत्वाकाक्षा पूरी करनेमे सहायक नही हो सकता । वह एक भरा पूरा घर चाहती थी, जिसकी वह शासिका हो और ऐसा सामाजिक जीवन चाहती थी जिसमें उसे महत्वका दर्जा प्राप्त हो । वह अपने से स्वतत्र अपने पतिके मानसिक जीवनकी कल्पना नही करती थी । उसे मेरी भटकनेकी वृत्ति और साधारणका मोह मानसिक विकृतियाँ प्रतीत होती थी, जिन्हें वह अपने अधिक स्वस्थ जीवन-दर्शनके बलसे दूर करना चाहती थी । उसने इस विश्वासके साथ जीवन आरम्भ किया था कि वह मेरी त्रुटियोकी क्षतिपूर्ति करती हुई बहुत शीघ्र मुझे सामाजिक दृष्टिसे एक सफल व्यक्ति बननेकी दिशामें प्रेरित करेगी । उसकी दृष्टिमें यह मेरे वशगत सस्कारोका दोष था जो मैं इतना अन्तर्मुख हो रहता था और इधर-उधर मिल जुल कर आगे बढनेका प्रयत्न नही करता था । वह इस परिस्थितिको सुधारना चाहती थी, पर परिस्थिति सुधरनेकी बजाय बिगडती गयी थी । वह जो कुछ चाहती थी, वह मैं नही कर पाता था और जो कुछ मैं चाहता था, वह उससे नही होता था । इस से हममें अक्सर बहस-मुबाहिसा हो जाता था और कई बार दीवारोसे सिर टकरानेकी नौबत आ पहुँचती थी । परन्तु यह सब हो चुकने पर नलिनी बहुत जल्दी स्वस्थ हो जाती थी और उसे फिर मुझसे यह शिकायत होती थी कि मैं दो-दो दिन अपनेको उन साधारण घटनाओके प्रभावसे मुक्त क्यो नही कर पाता । परन्तु मैं दो-दो दिन क्यो, कभी भी उन घटनाओंके प्रभावसे मुक्त नही होता था और रात को जब वह सो जाती थी तो घटो तकियेमें मुँह छिपा कर कराहता रहता था । नलिनी आपसी झगडेको उतना अस्वाभाविक नही समझती थी जितना मेरे रात भर जागनेको और उसके लिए मुझे नर्व टानिक लेनेकी सलाह दिया करती थी । विवाहके पहले दो वर्ष इसी तरह कटे थे और उसके बाद हम लोग अलग अलग जगह काम करने लगे थे । हालाँकि समस्या ज्योकी त्यो वर्तमान थी और जब कभी हम इकट्ठे होते, वही पुरानी ज़िदगी लौट आती थी, फिर भी नलिनीका यह विश्वास अभी कम नहीं हुआ था कि

कभी न कभी मेरे सामाजिक सस्कारोका उद्बोध अवश्य होगा और तब हम साथ रह कर सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत कर सकेंगे ।

"आप कुछ सोच रहे है ?" उस महिलाने अपनी बच्चीके सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा ।

मै सहसा चेतन हुआ और मैने कहा, "हाँ, मै आप ही की बातको लेकर सोच रहा था । कुछ लोग होते है, जिनसे दिखावटी शिष्टाचारके सस्कार आसानीसे नही ओढे जाते । आप भी शायद उन्ही लोगोमेसे है ।"

"मै नही जानती", वह आँखें मूँद कर बोली, "मगर मै इतना जानती हूँ कि मै बहुतसे परिचित लोगोके बीच अपनेको अपरिचित, बेगाना और विजातीय अनुभव करती हूँ । मुझे लगता है कि मुझमें ही कुछ कमी है । मै इतनी बडी हो कर भी वह कुछ नही जान समझ पायी जो लोग छुटपनमें ही सीख जाते है । दीशीका कहना है कि मैं सामाजिक दृष्टिसे बिल्कुल मिसफिट हूँ ।"

"आप भी यही समझती है ?" मैने पूछा ।

"कभी समझती हूँ, कभी नही भी समझती", वह बोली, "एक खास तरहके समाजमें मै ज़रूर अपनेको मिसफिट अनुभव करती हूँ । परन्तु. . . कुछ ऐसे लोग है जिनके बीच जाकर मुझे बहुत अच्छा लगता है । ब्याहसे पहले मैं दो-एक बार कालेजकी पार्टीके साथ पहाडो पर घूमनेके लिए गयी थी । वहाँ सब लोगोको मुझसे यही शिकायत रहती थी कि मै जहाँ बैठ जाती हूँ, वहीकी हो रहती हूँ । मुझे पहाडी बच्चे बहुत अच्छे लगते थे । मै उनके घरके लोगोसे भी बहुत जल्दी दोस्ती कर लेती थी । एक पहाडी परिवारकी मुझे आज तक याद आती है । उस परिवारके बच्चे मुझसे इतना घुल-मिल गये थे कि मै बडी मुश्किलसे उन्हें छोड कर उनके घरसे चल पायी । मै दो घटे उन लोगोके पास रही थी । मैने दो घटेमे उन्हें नहलाया-धुलाया भी और उनके साथ खेलती भी रही । बहुत ही अच्छे बच्चे थे वे । हाय, उनके चेहरे इतने लाल थे कि क्या कहूँ ? मैने उनकी

माँसे कहा कि वह अपने छोटे लडके किशनूको मेरे साथ भेज दे। वह हँस कर बोली कि तुम सभीको ले जाओ, यहाँ कौन इनके लिए तोशे रखे है! यहाँ तो दो बरसमें इनकी हड्डियाँ निकल आयेंगी, वहाँ खा पी कर अच्छे तो रहेंगे। मुझे उसकी बात सुन कर रुलाई आनेको हो गयी। मै अकेली होती तो शायद कई दिनोके लिए उन लोगोके पास रह जाती। ऐसे लोगो में जा कर मुझे बहुत अच्छा लगता है। अब तो आपको भी लग रहा होगा कि कितनी अजीब हूँ मै! ये कहा करते है कि मुझे किसी अच्छे मनोविद्से अपना विश्लेषण कराना चाहिए, नही तो किसी दिन मै पागल होकर पहाडो पर भटकती फिरूँगी!"

"यह तो अपने-अपने निर्माणकी बात है", मैने कहा, "मुझे खुद आदिम सस्कारोके लोगोंके बीच रहना बहुत अच्छा लगता है। मै आज तक एक जगह घर बना कर नही रह सका और न ही आशा है कि कभी रह सकूँगा। मुझे अपनी ज़िदगीकी जो रात सबसे ज़्यादा याद आती है, वह रात मैने एक पहाडी गूजरोकी बस्तीमें बितायी थी। उस रात उस बस्तीमें एक ब्याह था, इसलिए सारी रात वे लोग शराब पीते रहे और नाचते रहे। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ जब मुझे बादमें बताया गया कि वे गूजर दस दस रुपयेके लिए इसानका खून भी कर देते है!"

"आपको सचमुच इस तरहकी ज़िदगी अच्छी लगती है?" उसने कुछ आश्चर्य और अविश्वासके साथ पूछा।

"आपको शायद खुशी हो रही है कि पागल होनेकी उम्मीदवार आप अकेली ही नही है", मैने मुसकरा कर कहा। वह भी मुसकरायी। उसकी आँखें सहसा भावनापूर्ण हो उठी। उस एक क्षणमें मुझे उन आँखोमे न जाने कितना कुछ दिखायी दिया—करुणा, क्षोभ, ममता, आर्द्रता, ग्लानि, भय, असमजस और सौहार्द! उसके ओठ कुछ कहनेके लिए काँपे, लेकिन काँप कर ही रह गये। मैं भी चुपचाप उसे देखता रहा। कुछ क्षणोके लिए मुझे महसूस हुआ कि मेरा मस्तिष्क बिल्कुल खाली है और मुझे पता नही

कि मै क्या कह रहा था और आगे क्या कहना चाहता था। उसकी आँखो मे सहसा सूनापन भरने लगा और आधे क्षणमें वह इतना बढ गया कि मैं ने उसकी ओरसे आँखें हटा ली।

बत्तीके पास उडता हुआ कीडा उसके साथ सट कर झुलस गया था।

बच्ची नीदमें मुसकरा रही थी।

खिडकीके शीशे पर इतनी धुध जमा हो गयी थी कि उसनें अपना चेहरा भी नही दिखायी देता था।

गाडीकी रफ्तार धीमी हो रही थी। कोई स्टेशन आ रहा था। दो एक बत्तियाँ तेज़ीसे निकल गयी। मैंने खिडकीका शीशा थोडा उठा दिया। बाहरसे आती हुई बर्फानी हवाके स्पर्शने जैसे स्नायुओको सहला दिया। गाडी एक बहुत नीचे प्लेट फार्मके बराबर खड़ी हो रही थी।

"यहाँ थोडा पानी मिल जायगा?"

मैंने चौंक कर देखा कि वह अपनी टोकरीमेंसे कॉचका गिलास निकाल कर अनिश्चित भावसे अपने हाथमें लिये हुए है। उसके चेहरेकी रेखाएँ पहलेसे गहरी हो रही थी।

"आपको पानी पीनेके लिए चाहिए?" मैंने पूछा।

"हाँ। कुल्ला करूँगी या पिऊँगी। न जाने क्यो ओठ कुछ चिपक से रहे है। बाहर इतनी ठड है, फिर भी .."

"मै देखता हूँ अगर मिल जाय तो.."

कहकर मैंने गिलास उसके हाथसे ले लिया और जल्दीसे प्लेटफार्म पर उतर गया। न जाने कैसा सुनसान स्टेशन था कि कही भी कोई आकृति दिखायी नही दे रही थी। प्लेटफार्म पर जाते ही हवाके झोकोसे हाथ पैर सुन्न होने लगे। मैंने कोटके कालर खडे कर लिये। प्लेटफार्मके जँगलेके बाहरसे फैलकर ऊपर आये हुए दो एक वृक्ष हवामें सरसरा रहे थे। इजन के भाप छोडनेसे लबी शू-ऊँ की आवाज़ सुनायी दे रही थी। शायद वहाँ गाडी सिग्नल न मिलनेकी वजहसे ही रुक गयी थी।

दूर कई डिब्बे पीछे मुझे एक नल दिखायी दिया और मैं तेज़ीसे उसकी ओर चला। ईंटोके प्लेटफार्म पर अपने जूतेकी एडियोका शब्द मुझे बहुत अपरिचित-सा लग रहा था। मैंने चलते-चलते गाडीकी ओर देखा। किसी खिडकीसे कोई चेहरा नही झाँक रहा था। मै नलके पास जाकर गिलासमे पानी भरने लगा। तभी हल्की-सी सीटी देकर गाड़ी एक झटके के साथ चल पडी। मै भरा हुआ पानीका गिलास लेकर अपने डिब्बेकी ओर दौडा। मुझे दौडते हुए लगा कि मै उस डिब्बे तक नही पहुँच पाऊँगा और विना सामानके सर्दीमें उस अँधेरे और सुनसान प्लेटफार्म पर रात वितानी होगी। यह सोच कर मै और भी तेज़ दौडने लगा। किसी तरह मै अपने डिब्बेके दरवाजेके बराबर पहुँच गया। दरवाज़ा खुला था और वह दरवाज़ेके पास ही खडी थी। उसने हाथ बढाकर गिलास मुझसे पकड लिया। फुटबोर्ड पर चढते हुए एक बार मेरा पैर ज़रा फिसला, पर दूसरे ही क्षण मैं स्थिर होकर खडा हो गया। इजन तेज़ होनेकी चेष्टा में अभी हल्के-हल्के झटके दे रहा था और ईंटोके प्लेटफार्मके स्थान पर अब नीचे अस्पष्ट गहराई दिखायी देने लगी थी।

"अन्दर आ जाइये", उसके ये शब्द सुन कर मुझे अहसास हुआ कि फुट बोर्डसे आगे भी कुछ गन्तव्य है। डिब्बेके अन्दर कदम रखते हुए मेरे घुटने ज़रा ज़रा काँप रहे थे।

अपनी जगह पर आकर मैंने टाँगें सीधी करके पीछेको टेक लगा ली। कुछ क्षण वाद मैंने आँखें खोली तो मुझे लगा कि वह शायद मुँह धोकर आयी है। फिर भी उसके चेहरे पर बहुत मुर्दनी छा रही थी। मेरे भी ओठ सूख रहे थे, फिर भी मै थोडा मुसकराया।

"क्या वात है, आपका चेहरा ऐसा क्यो हो रहा है ?" मैंने पूछा।

"मै कितनी मनहूस हूँ " कहकर उसने अपना निचला ओठ ज़रा-सा काट लिया।

"क्यो ?"

"अभी मेरी वजहसे आपको कुछ हो जाता .."

"यह खूब सोचा आपने !"

"नही। मैं हूँ ही ऐसी ." वह बोली, "जिन्दगी में हर एकको दु ख ही दिया है। अगर कही आप न चढ पाते .."

"तो ?"

"तो ?" उसने ओठ ज़रा सिकोडे, "तो मुझे पता नही पर .."

उसने खामोश रहकर आँखें झुका ली। मैंने लक्षित किया कि उसकी साँस जल्दी जल्दी चल रही है। मैंने उस समय अनुभव किया कि वास्तविक सकटकी अपेक्षा कल्पनाका सकट कितना बडा और खतरनाक होता है। शीशा थोडा उठा रहनेसे खिडकीसे हवा आ रही थी। मैंने खीचकर शीशा नीचे कर दिया।

"आप क्यो गये थे पानी लानेके लिए ? आपने मना क्यो नही कर दिया ?' उसने पूछा।

उसके पूछनेके लहजेसे मुझे हँसी आ गयी।

"आप ही ने तो कहा था "

"मैं तो मूर्ख हूँ, कुछ भी कह देती हूँ। आपको तो सोचना चाहिए था।"

"अच्छा, मैं अपनी गलती माने लेता हूँ।"

इससे उसके मुरझाये हुए ओठो पर भी मुसकराहट फैल गयी।

"आप भी कहेंगे यह कैसी लडकी है", उसने अन्तर्भावसे मुसकराते हुए कहा, "सच कहती हूँ मुझे ज़रा अक्ल नही है। इतनी वडी हो गयी हूँ पर अक्ल अभी बालिश्त भर भी नही है—सच !"

मैं फिर हँस दिया।

"आप हँसते क्यो है ?" उसने फिर शिकायतके स्वरमें पूछा।

"मुझे हँसनेकी आदत है!" मैंने कहा।

"हँसना अच्छी आदत नही है।"

मुझे इस बात पर फिर हँसी आ गयी।

वह शिकायत भरी दृष्टिसे मुझे देखती रही।

गाडीकी रफ्तार फिर बहुत तेज़ हो गयी थी। ऊपरकी बर्थ पर लेटा हुआ व्यक्ति सहसा हडबडा कर उठ बैठा और जोर-ज़ोर से खाँसने लगा। खाँसीका दौरा शान्त होने पर उसने कुछ क्षण छातीको हाथसे दबाये रखा और फिर भारी आवाज़में पूछा, "क्या बजा है ?"

"पौने बारह", मैंने उसकी ओर देख कर उत्तर दिया।

"कुल पौने बारह ?" उसने निराश स्वरमें कहा और फिर लेट गया। कुछ ही देरमे वह फिर खुर्राटे भरने लगा।

"आप भी थोडी देर सो जाइए।" वह पीछे टेक लगाये शायद कुछ सोच रही थी या केवल देख ही रही थी। उसने उसी मुद्रामे अनुरोध किया।

"आपको नीद आ रही है, आप सो जाइए", मैंने कहा।

"मैंने आपसे कहा था न मुझे गाडीमें नीद नही आती। आप सो जाइए।"

मैंने बिस्तर पर लेट कर कम्बल ऊपर ले लिया। मेरी आँखे देर तक शून्य भावसे बत्तीको देखती रही, जिसके साथ झुलसा हुआ कीडा चिपक कर रह गया था।

"रज़ाई भी ले लीजिए, काफी ठड है", उसने कहा।

"नही, अभी ज़रूरत नही है। मै बहुतसे गर्म कपड़े पहने हूँ," मैंने कहा।

"ले लीजिए, नही बादमें ठिठुरते रहिएगा।"

"नही ठिठरूँगा नही", मैंने कम्बल गले तक लपेटते हुए कहा, "और थोडी थोड़ी ठड लगती रहे तो अच्छा रहता है।"

"बत्ती बुझा दूँ ?" कुछ क्षण बाद उसने पूछा।

"नही, रहने दीजिए।"

"नही, बुझा देती हूँ, ठीकसे सो जाइए।" और उसने उठकर बत्ती बुझा दी। मै काफी देर अँधेरेमे छतकी ओर देखता रहा। फिर मुझे नीद आने लगी।

शायद रात आधीसे अधिक बीत चुकी थी जब इजनके भोपूकी आवाज से मेरी नींद खुली। वह आवाज कुछ ऐसी भारी थी कि मेरे सारे शरीरमें एक सिहरन सी भर गयी। पिछले किसी स्टेशन पर इजन बदल गया था।

गाडी धीरे-धीरे चलने लगी तो मैंने सिर थोडा ऊँचा उठाया। सामने की सीट उस समय खाली थी। वह महिला न जाने किस स्टेशन पर उतर गयी थी। वह इसी स्टेशन पर न उतरी हो, यह सोचकर मैंने खिड़कीका शीशा उठाकर बाहर देखा। प्लेटफार्म बहुत पीछे रह गया था और एक बत्तियोकी कतारके अतिरिक्त कुछ स्पष्ट दिखायी नही दे रहा था। मैंने शीशा फिर खीच लिया। अन्दरकी बत्ती अब भी बुझी हुई थी। बिस्तरमें नीचेको सरकते हुए मैंने लक्षित किया कि मै कम्बलके अतिरिक्त अपनी रजाई भी लिये हूँ, जिसे अच्छी तरह कम्बलके साथ मिला दिया गया है। उष्णता की अनेक सिहरनें एक साथ मेरे शरीरमे भर गयी।

ऊपरकी बर्थपर लेटा हुआ व्यक्ति उसी तरह ज़ोर-ज़ोरसे ख़ुर्राटे भर रहा था।

हवामुर्ग़

अप्रैलके महीने में बर्फका पडना अस्वाभविक नहीं था, फिर भी रेस्ट-हाउसका चौकीदार सतराम सवेरेसे कितनी बार अपने मिलनेवालोसे कह चुका था, "देखो जी, कैसी अनहोनी बात हो रही है ? ये कोई बर्फ पडनेके दिन है ? मेरा ख्याल है, इसका आजके इलेक्शन पर ज़रूर असर पडेगा। घरसे निकलना ही मुश्किल है, वोट देने कौन आयगा ?"

वैसे उसे स्वयं विश्वास नही था कि लोग वोट देने नही आयँगे, पर बार-बार यह बात कह कर उसे कुछ सतोषका अनुभव अवश्य होता था। तीन बजेके लगभग एक भारी-भरकम बाबू रेस्ट-हाउसके दो नवर कमरेमें आकर ठहरा, तो उसका सामान खोलते हुए भी उसने कहा, "बाबू जी, आगे कभी अप्रैलके महीनेमें आपने इतनी बर्फ पडती देखी है ?"

पर इससे पहले कि वह बातके उत्तरार्ध तक पहुँच पाता, बाबूने उसे आदेश दिया कि वह भागकर उसके लिए एक गिलास गर्म पानी ले आय, क्योकि उसे दाँत साफ करने है। सतराम 'अभी लाया जी' कहकर चला गया, और जब वह लौटकर आया तो बाबूने उसे चाय बनाकर लानेका आदेश दे दिया।

चाय लाकर प्यालीमें उँडेलते हुए सतरामने दूसरी तरह बात आरभ की, "बाबूजी, आज यहाँ पर म्युनिसिपल कमेटीका इलेक्शन हो रहा है।" और अपनी बातमें बाबूकी रुचि जागृत करनेके लिए उसने तत्परता दिखलाते हुए पूछा, "चीनी एक चम्मच लेंगे, कि दो चम्मच ?"

"डेढ चम्मच !" बाबूने विना ज़रा भी रुचि प्रदर्शित किये कहा।

सतरामने चायमें चीनी मिलायी और प्याली बाबूके हाथमें देते हुए कहा, "इस बार हमारे रेस्ट-हाउसका जमादार भी हरिजन टिकट पर इलेक्शनके लिए खड़ा हुआ है।"

"अच्छा !" बाबूने चायका घूँट भरते हुए कहा, "देखो, वह मेरे जूते रखे हैं, उन पर पालिश कर देना।"

सतराम बैठ कर जूतो पर ब्रशसे पालिश लगाने लगा। पालिश लगाते हुए उसने कहा, "पर जी, न तो यह जमादार ख़ास पढा-लिखा है और न ही यह कभी जेल गया है, वैसे भी जातका भंगी है—भला ऐसे आदमी का कमेटीके लिए चुना जाना कहाँ तक मुनासिब है ?"

बाबू बिना कुछ कहे अपना कम्बल लेकर बिस्तर पर लेट गया और एक पुस्तकके पन्ने पलटने लगा। सतरामने जूतोंके फीते निकाल दिये और एक जूतेको ब्रशसे रगडता हुआ बोला, "वैसे जी, सब मेहतर इसे वोट दें, तो यह चुना भी जा सकता है। सरकारने भी हद कर दी। जमादार कल तक कमेटीकी नालियाँ साफ करते थे, अब जाकर कमेटीकी कुर्सी पर बैठा करेंगे।"

वह जूता चमक गया था। उसे रखकर दूसरा जूता उठाते हुए उसने कहा, "आज अगर यह चुन लिया गया तो मेरे लिए तो बडी मुश्किल हो जायगी। पहले ही हम दोनोकी खटपट चलती रहती है, फिर तो एक दिन भी कटना मुमकिन नही होगा।"

कुछ क्षण वह चुपचाप जूतेको रगडता रहा। फिर उसमें फीता डालते हुए बोला, "अगर आज यह चुना गया तो मैं सोचता हूँ कि मैं नौकरीसे इस्तीफ़ा ही दे दूँ। यह, साहब, अपनी इज़्ज़तका सवाल है। क्या कहते है ?"

और बाबूके फिर कुछ न कहने पर उसने जूते बाबूको दिखलाते हुए पूछा, "क्यो जी, ठीक चमक गये ?"

"हाँ, इधर रख दे," बाबूने कहा, "और जाकर मेरे लिए एक कैप्स्टन की डिबिया ले आ।"

सिगरेट लानेका आदेश पाकर जब वह बाहर निकला तो उसने देखा कि जमादारकी बीवी बतो लॉनके पौधोसे फूल तोड रही है। अभी तीन-चार दिन पहले उसकी बीवी शान्तिने बतोको फूल तोडनेसे रोका था।

सतरामको लगा कि आज बतो जानबूझकर उन्हे चिढाना चाहती है। उसके मनमे क्रोध-मिश्रित खीझका उदय हुआ, पर उससे कुछ कहते नही बना। एक तो आज उसे अपनेमे बतोसे कुछ कहनेका नैतिक साहस नही मिल रहा था, और दूसरे अपने नये रगीन वस्त्रोमे बतो आज और दिनोकी अपेक्षा अधिक सुन्दर लग रही थी। सतरामको जमादार माधोसे इस बात की भी ईर्ष्या थी, कि उसकी पत्नी इतनी सुदर थी और तीन बच्चोकी माँ होते हुए भी अभी लडकी-सी ही दिखायी देती थी। दूसरी ओर उसकी पत्नी शान्ति थी, जो अभी एक ही बच्चेकी माँ थी, पर लगता था कि उसका यौवन दस साल पीछे रह गया है—सुन्दर तो ख़ैर वह कभी थी ही नही। जब शान्ति बतोको कोई आदेश देती तो स्वय सतरामको उसका आदेश देना अस्वाभाविक लगता था, यद्यपि शान्तिके शिकायत करने पर कि बतो बात-बातमे उसकी अवहेलना करती है, वह उसके अधिकारका शाब्दिक समर्थन कर दिया करता था। परन्तु कभी शान्ति बतोकी उपस्थितिमे उसकी शिकायत करती तो वह निष्पक्ष मध्यस्थकी तरह कहता, "अरी, आपसमे झगडती क्यो हो? यह सरकारका काम है और हम सबका साझा फर्ज है। आपसमें मेल-जोलके साथ रहा करो।"

बतोके पाससे निकल कर सतराम अपने क्वार्टरके आगे पहुँचा तो उसने देखा कि वहाँ शान्ति किसी वजहसे बच्चे पर झुँझला रही है। उसके ढीले-ढाले अग, फिर और भी ढीले-ढाले वस्त्र, और उस पर यह झुँझलाहटका भाव देखकर सतरामका अपना हृदय झुँझलाहटसे भर गया। उसका मन हुआ कि उसे डाँट दे, पर फिर कुछ सोचकर वह आगे बढ गया। सडक पर आकर भी उसकी झुँझलाहट शान्त नही हुई। उसने बाबूके लिए कैप्स्टनकी डिबिया ख़रीदी और एक लैंपकी डिबिया अपने लिए ले ली। एक सिगरेट सुलगाये हुए वह रेस्ट-हाउसकी ओर लौटा। चलते हुए उसके मस्तिष्कमे उन दिनोके धूमिल चित्र उभरने लगे, जब वह दिल्लीमे बाबू गनपतलाल की थिएटर कपनीमे नौकर था। वहाँ उसका काम बिजलीकी फिटिंग

करनेका था, पर दो-एक बार बाबू गनपतलालने उसे अभिनय करनेका अवसर भी दे दिया था। उस कपनीमे लगातार छह-छह महीने वेतन नही मिलता था, पर फिर भी जिस दिन कपनी बद हुई थी, उस दिन उसे यही प्रतीत हुआ था कि उसके जीवनका आधार छिन गया है। वेतन तो कही भी काम करनेसे मिल सकता था, पर थिएटर कपनीमें जो कुछ मिलता था वह अन्यत्र मिलना दुर्लभ था। वहाँ मिन्ना थी, रूपी थी, सकीना थी! वह समय अब बारह साल पीछे रह गया था। यह सोचकर उसे एक विचित्र सिहरनका अनुभव हुआ कि मिन्नाकी बेटी चदा, जो तब आठ बरस की गुडिया-सी थी, अब बीस वर्षकी नवयुवती होगी। उसके कदम कुछ तेज़ हो गये और वह इस विश्वासके साथ चलने लगा कि उसका वास्तविक क्षेत्र थिएटर कपनी ही है—वह यूँही रेस्ट-हाउसकी चौकीदारीके दलदलमे फँस कर अपना जीवन नष्ट कर रहा है।

जब उसने दो नबर कमरेमे पहुँचकर कैप्स्टनकी डिबिया बाबूको दी, तब भी उसका मन थिएटर कपनीके वातावरणमे ही खोया हुआ था। दियासलाई जलाकर बाबूका सिगरेट सुलगवाते हुए उसने उससे पूछा, "क्यो बाबूजी, आजकल उधर कही कोई थिएटर कपनी नही चल रही ?"

"मुझे पता नही," बाबूने सिगरेटका कश खीचकर कहा।

"दरअसल बात यह है साहब, कि मेरी असली लाइन वही है," सतराम आवश्यकता न रहने पर भी झाडन उठाकर कुर्सी झाडता हुआ बोला, "चौकीदारीमे तो मै ऐसे ही आ फँसा हूँ, वर्ना पहले मै दिल्लीमे एक थिएटर कपनीमें ही काम करता था।"

"यहाँ तुम कबसे काम कर रहे हो ?" बाबूने पूछा।

"यहाँ जी, मुझे कोई दस-ग्यारह साल हो गये।"

"तब तो तुम यहाँके बहुत पुराने आदमी हो!"

"जी हाँ!" सतरामने ये शब्द स्वभाववश ही कह दिये। वैसे वहाँ का पुराना आदमी कहलाना उस समय उसे रुचिकर नही लगा।

"थिएटर कपनीमें तुम कितने साल रहे हो ?" बावूने दूसरा प्रश्न पूछा। सतराम इस प्रश्नका निश्चित उत्तर अच्छी तरह जानता था। उस 'अपनी लाइन' में उसने कुल एक साल और सात महीने विताये थे, जिनमेंसे वेतन केवल आठ महीनेका ही प्राप्त हुआ था। पर उत्तर देनेसे पहले वह जैसे मन-ही-मन गिनती करनेके लिए कुछ रुका और फिर वोला, "वस जी, यहाँ आनेसे पहले मैं वहीं पर था।" और उसके ओठो पर खिसियानी हँसीकी रेखा प्रकट हो गयी।

कुर्सीको छोडकर अव अलमारीके शीशे झाडनसे साफ करता हुआ सतराम अपने उन दिनोंके अनुभव सुनाने लगा तो वावूने उसे वीचमें ही रोक कर कहा कि वह जल्दी जाकर डाकखानेसे दो लिफाफे और चार पोस्टकार्ड ला दे, उसे कुछ आवश्यक चिट्ठियाँ लिखनी है।

डाकखानेसे लिफाफे और पोस्टकार्ड खरीदते हुए उसने शोर सुना कि जमादार माधो इलेक्शन जीत गया है, और कई लोग उसे फूलोंकी मालाएँ पहनाकर रेस्ट-हाउसकी ओर ला रहे हैं। उसने लैंपका नया सिगरेट सुलगाया और वाहर आकर उस दिशामें देखा, जिधरसे वर्फसे ढके हुए रास्ते पर तीन-चार सौ गज़ दूर कुछ लोग जमादार माधोको घेरे हुए आ रहे थे। उनके रगीन वस्त्र वर्फकी सफेदीके वैपम्यमे और भी रगीन लग रहे थे। वे वाहें उठा-उठाकर उत्साहपूर्वक नारे लगाते आ रहे थे। सतरामने उस ओरसे आते हुए एक नवयुवकसे पूछा, "क्यो भाई, कितने वोटोंसे जीता है हमारा जमादार ?"

"सवा दो सौ वोटोंसे !" और उस नवयुवकने साथ यह भी वताया कि रातको वडे साहवने जमादारको खानेपर वुलाया है।

"अच्छा !" और सतरामकी आँखे विस्मय और ईर्ष्यासे फैलकर रह गयी। उसने पुन उस दिशामें देखा, जिधरसे लोग माधोके साथ आ रहे थे। वह क्षण-भर इस अनिश्चयमें खडा रहा कि उसे वहाँ रुकना चाहिए या रेस्ट-हाउसकी ओर चल देना चाहिए। फिर हाथके कार्डों और लिफाफ़ो

की ओर ध्यान जाने पर वह जैसे बहाना पाकर रेस्ट-हाउसकी ओर चल दिया।

बतो क्वार्टरके बाहर खडी अपने पतिको दूरसे आते देख रही थी। उसके चेहरेकी चमक उस समय और भी बढ रही थी। कुछ और भी मेहतरानियाँ उसके पास खडी थी। सतरामने उसके पाससे निकलते हुए उसे लक्षित करके कहा, "जमादारिन, माधो इलेक्शन जीत गया है। दो सौ वोटोसे जीता है।"

उसने स्वरमे यथासम्भव सौहार्द लानेकी चेष्टा की थी, पर बतोने उसकी बातकी ओर ध्यान नही दिया। वह उपेक्षापूर्ण ढगसे बोली, "हाँ, राजू अभी हमें बता गया है।"

सतराम मन-ही-मन कुछ उलझकर दो नबर कमरेकी ओर चल दिया। जब उसने कार्ड और लिफाफे बाबूको दिये, तो उसे आदेश मिला कि यह वही ठहरे, अभी पत्र पोस्ट करनेके लिए ले जाने होगे। कुछ देर बाद जब वह पत्र लेकर निकला तब तक माधोके साथी, उसे लिये हुए रेस्ट-हाउसके सामने पहुँच गये थे और ज़ोर-जोरसे नारे लगा रहे थे—"हरिजन यूनियन जिंदाबाद!" "माधोराम जमादार जिंदाबाद!"

सतराम डाकखानेकी ओर न जाकर पीछेके रास्तेसे डेरीफार्मके लेटर-बक्सकी ओर चल दिया, हालाँकि वह जानता था कि डेरीफार्मके लेटर-बक्स से दिनकी अन्तिम डाक चार बजे ही निकल जाती है और उस समय साढे चार बज रहे थे।

दूसरे दिन सवेरे सतरामकी पत्नी शान्तिकी सूरत कुछ और-सी हो रही थी—उसकी आँखे सूज रही थी और चेहरे पर झाइयाँ-सी पडी हुई थी। सतराम चाय लेकर दो नबरके कमरेमे आया, तो चाय उँडेलते हुए उसने बाबूसे पूछा, "क्यो साहब, जमादार कमरा साफ कर गया है?"

"उसकी बीवी साफ कर गयी है।" बाबूने उत्तर दिया।

"मेरे बारेमें उसने कोई बात तो नही की ?" उसने कुछ आशकित और खिसियाने स्वरमे पूछा ।

"नही !" बाबूने एक शब्दमे उत्तर देकर चायकी प्याली उठा ली ।

अब सतराम व्याख्या करता हुआ कहने लगा, "साहब आपको पता है न, कि जमादार कल इलेक्शन जीत गया है ? बडे साहबने कल रातको इसे और इसकी बीबीको खाने पर बुलाया था । पता नही, इन लोगोने वहाँ जाकर साहबके सामने मेरी क्या-क्या शिकायत की है ? मैंने सोचा कि शायद आपसे जमादारिनने इस बारेमें कुछ कहा हो ।"

"मुझसे किसीने कोई बात नही की !" बाबूने झिडकनेके स्वरमें कहा ।

सतराम कुछ क्षण चुप खडा रहा । फिर बोला, "साहब, मेरा स्वभाव ऐसा है कि मैं किसीसे लडना-झगडना पसद नही करता । पर मेरी घर वालीका अपनी जबान पर काबू नही है । वही रोज-रोज़ जमादारिनसे लड पडती थी, जिससे जमादारकी भी मेरे साथ नही पटती थी । मैंने इसे कई बार समझाया पर यह समझी ही नही । रातको फिर मुझसे नही रहा गया । मैंने दो-चार हाथ ऐसे लगा दिये है कि अब आगेके लिए सुधरी रहेगी ।"

बाबूने चायकी प्याली ट्रेमें रखते हुए कहा कि वह ट्रे उठाकर ले जाय । सतराम ट्रे उठाता हुआ बोला, "अब तो बडा साहब भी जमादारकी ही सुनेगा, क्यो जी ? उसने साहबके पास मेरी शिकायत कर दी तो बताइए मैं कहाँका रह जाऊँगा ? औरत जात इन चीजोको नहीं समझती । मुसीबत तो अब मेरी हो रही है, जिसकी नौकरीका सवाल है ।"

ट्रे उठाये हुए वह बाहर निकल आया । बरामदेके सिरे पर उसे जमादार माधो झाडू देता हुआ मिला । उसके निकट पहुँच कर सतराम खीसें निपोर कर बोला, "क्यो भई, जीत लिया इलेक्शन माधोराम ? कल सुनकर बहुत

ही खुशी हुई । हम गरीब लोगोकी भी अब कमेटीमें सुनवाई हो जायगी । अब लगता है कि हाँ, सचमुचमे ही आजादी आयी है ।"

और क्षण भर रुककर जब और कुछ कहनेको नही मिला तो वह ट्रे सँभाले हुए अपने क्वार्टरकी ओर बढ गया, जहाँ उस समय शान्ति एक हाथसे बच्चेको पकड़े हुए गालियाँ देती हुई दूसरे हाथसे उसे पीट रही थी ।

•

मरुस्थल

मरुस्थल अर्थात् रेत और गुवारका देश। मगर उससे रूखा एक और भी मरुस्थल है।

मेरे कमरेका वातावरण बहुत रूखा और वोझिल है। घडीमें केवल घटेकी सूई है और जीवन उसीके हिसाबसे चलता है। हर चीज़ जैसे अँगडाइयाँ ले रही है। कितावें शेल्फमे सो जाना चाहती है, दरी फर्श पर वेसुव-सी ऊँघ रही है। वाहर जहाँ तक आँख जाती है, रेत ही रेत फैली है। रेतके ववडर वार-वार खिडकीके किवाडोंसे आ टकराते हैं। हवा हू-हूकी आवाज़ करती हुई वार-वार किवाडोको हिला जाती है।

उवर साथके कमरेमें इन्दु वेताव करवटें ले रही है।

रतनाडा रोडका यह वँगला जोवपुर शहरसे दो मीलके फासले पर है। वँगलेमे हम दस व्यक्ति रहते है और सवका परिचय अपने इस दायरे तक ही सीमित है। काम अलग-अलग होते हुए भी हम सवका पेशा एक है—सव राजस्थान फिल्म कार्पोरेशनमें नौकर हैं। नसीम और सकीना कभी वेश्याएँ थीं, अव अभिनेत्रियाँ कहलाती हैं। घनपत राय कभी थियेटरमें पर्दे खीचता था, आज फिल्म कार्पोरेशनका मैनेजिग डायरेक्टर है। शकर, शर्मा और लतीफ तीनो एक्टर हैं। इन्दु नसीमकी वेटी है। धनपतराय उसका वाप है। सकीना उसकी छोटी माँ अर्थात् माँकी वहन है।

इन्दु छटपटा रही है, नसीम अपने कमरेमे घुट कर रो रही है, सकीना उसे दिलासा दे रही है और धनपतराय अपने कमरेमें शराव पी रहा है। वाकी लोग वडे कमरेमें वैठकर ताश खेल रहे हैं।

जव मै पहले पहल आया तो यह सारा घर नसीम और सकीनाके कहकहोंमें गूँजा करता था। वे दोनो मिलकर ऐसे हँसती थीं, जैसे छोटी

चाँदीके बहुतसे सिक्के एक साथ खनखनाये जा रहे हो। दोनो बहने दिन भर बरामदेमें आवारा घूमती रहती थी। अब कई दिनोसे अपने कमरेके बाहर उनकी सूरत भी नजर नही आती।

इन्दु बिल्कुल मेरे साथके कमरेमें है, इसलिए उसकी हर कराहट मुझे सुनायी दे जाती है। शुरू-शुरूमे वह सारा दिन मेरे कमरेमें आ कर चहकती रहती थी। इस बँगलेमे आने पर, पहले दिनसे वह मुझसे बहुत हिल-मिल गयी थी। हर रोज़ चार-छ' बार आ कर वह मेरा दरवाजा खट-खटाती, "इन्दु बाई अदर आ सकती है ?"

और अपने आप 'हाँ, आ सकती है' कहकर वह अदर आ जाती। फिर वह बैठ कर देर-देर तक बताती रहती थी कि दिल्ली और कलकत्तेमे उसकी कौन-कौन सहेलियाँ है, उसे दिल्ली शहर और शहरोकी अपेक्षा क्यो ज्यादा अच्छा लगता है और जब वह बडी होगी तो अपनी कोठी किस ढगकी बन-वा गी। वह कभी मुझे अपने साथ खेलनेके लिए मजबूर करती। कभी मुझे नाच कर दिखाती और कभी मेरे गलेमें बाँहे डाल कर सौ-सौ तरहके सवाल पूछती। बँगलेके लोगोमें उसे ही मुझमें सबसे ज़्यादा दिल-चस्पी थी और मेरा ज़्यादातर समय उसीके साथ बीतता था।

उस दिन बाहर बहुत ज़ोरके बवडर उठ रहे थे, जब इन्दुने रोज़की तरह दरवाज़ा खटखटाया "इदु बाई अदर आ सकती है ?" और दरवाज़ा खोल कर वह अदर आ गयी। उसके पीछे-पीछे एक अपरिचित युवक भी कमरेमे आ गया। इन्दुने उसका परिचय दिया, "ये गोपाल बाबू है, आपसे मिलने आये है।"

गोपालने पहले सारे कमरेमे नजर दौडा कर देखा, फिर अनुगृहीत करनेके ढगसे मेरी ओर हाथ बढा दिया। मेरे कहने पर वह पल भरके लिए कुर्सी पर बैठ गया और बडे आदमियोकी तरह दो बातें करके, समय कम होनेकी शिकायत करता हुआ चला गया। उसके चले जाने पर इन्दु मेरी गोद-

में आ बैठी और बोली, "इस आदमीसे हमको डर लगता है। यह हमको बहुत घूर-घूर कर देखता है।"

"मैं भी तो तुझे घूर-घूर कर देखता हूँ, तुझे मुझसे डर नही लगता ?" मैंने मुसकरा कर पूछा।

"तुम इसकी तरह थोडे ही देखते हो ?" वह बोली, "यह तो ऐसे देखता है जैसे मैं कोई तसवीर हूँ। यह बाबूजीका दोस्त है और अम्मीके साथ आज कल बहुत घुल घुल कर बातें किया करता है। आज यह अम्मीसे एक बहुत बुरी बात कहता था।"

पहले उसने वह बात नही बतायी। मेरे बहुत पूछने पर बहुत धीरेसे बोली, "अम्मीसे कहता था कि तू क्यो धनपतरायके साथ जिन्दगी खराब करती है ? मैं होटल खोलता हूँ, तू मेरे साथ चलकर काम कर, हम लाखो रुपया कमायँगे। फिर हमारी तरफ देखकर बोला–अच्छा, तू इन्दुको मेरे हवाले कर दे, इसका जो तू चाहे ले ले। मैं तो ऐसी बात पर इसके थप्पड मारती, मगर अम्मी चुपचाप सुनकर हँसती रही।"

मैंने उसके सिरको थपथपाया और कहा, "पगली, वह मजाक करता होगा।"

"नही जी, मजाककी बात और होती है, हमको सब पता है", और फिर आवाज और भी धीमी करके बोली, "अम्मी वैसे तो हमको पीटती है, पर उसके सामने ऐसे तारीफ करती थी जैसे सचमुच हमको बेचना ही हो।"

नौ बरसकी इन्दु सचमुच बहुत कुछ जानती थी। गोपाल वाकई नसीम पर डोरे डाल रहा था और नसीम उनमे उलझ रही थी। गोपालके वायलके कुर्तेकी जेबमें सौ-सौके नोट चमकते रहते थे जिनके बल पर उसे लखपति होनेका दावा था। नसीमके सौदेमें उसकी आँख ज्यादा इन्दु पर ही थी। एक दिन वह खूब पिये हुए मेरे कमरेमे आ गया। नशेकी बहकमे उसने सारी बात मेरे सामने उगल दी। वह बबईमें होटल खोलनेकी सोच रहा था, जिससे उसे लाखोकी आमदनीकी आशा थी। उसने उल्लाससे झूमते

हुए कहा, "देखना, चार दिनमें वह धनपतके मुँह पर थूक कर मेरे साथ चली जायगी। उसने मेरे साथ पक्का वायदा कर लिया है।"

फिर वह काफी देर मिलें और कारखाने चलानेके प्रोग्राम बनाता रहा, और अन्तमे ठडे पानीका गिलास पी कर चला गया।

धनपतराय गोपालकी चाल न समझता हो, ऐसा नही था। वह बहुत खुर्राट आदमी है और अपने आपको बहुत कुछ समझता भी है। वैसे उसके हाथ पैर भी काफी मजबूत है। पचपन बरसका हो कर भी वह बात-बातमे जवानीकी कसम खाकर पुरुषत्वकी डीग मारता है। गोपालसे उसने कुछ नही कहा, लेकिन एक दिन नसीमकी लगामें खीच दी। नसीम दो चार दिन गोपालसे दूर-दूर रही। मगर वास्तवमें इसमे भी गोपालकी योजना ही काम कर रही थी।

एक दिन इन्दु ताशका एक पैकिट मुझे दिखानेके लिए लायी। मेरे कन्धेके साथ सटकर वह धीरेसे बोली, "बाबूजी, आज बाहर गये हुए है न, अम्मीने गोपालको आज फिर बुलाया है। अब वो कमरेमें बैठे धीरे-धीरे बाते कर रहे हैं।"

"तू यह ताश कहाँसे लायी है ?" मैंने बात बदलनेके लिए पूछा।

"वही गोपाल लेकर आया है। हमने पहले नही लिये तो अम्मी हमको डाँटने लगी। फिर हमने ले लिये तो हमसे कहा कि बाहर जाकर खेलो। गोपाल कहता था, कि कल तेरे लिए छोटा पियानो लेकर आऊँगा।"

"अच्छा ?" मैंने कहा, "यह ताश तो वह बहुत बढिया लाया है "

"बढिया हो चाहे कैसा हो, हम यह ताश नही खेलेंगे," इन्दु हठ और तिरस्कारके साथ बोली, "वह पिआनो लायगा तो हम उसका पिआनो भी नही बजाएँगे।"

"क्यो उससे लडाई हो गई है ?"

"अम्मी आज फिर उसके साथ बम्बई जानेकी सलाह बना रही है।"

"सच ?"

"सच नही तो क्या ? अम्मी कहती थी कि बाबू जी हमे पैसा नही देते । वह बोला कि चल कर दो चार साल तू आप कमा ले, फिर तेरी इन्दु लाखोकी हो जायगी ।"

मै उसे बाहोमें लिये हुए चुपचाप उसके बालोके साथ खेलता रहा । कुछ रुककर वह फिर बोली, "मै बडी हो कर डाक्टरी पढूँगी । मेरी सहेली की बडी बहन डाक्टरी पढती है ।"

मैंने उस समय लक्षित किया कि उसका चेहरा पहलेसे कुछ पीला पड गया है और उसके गोरे गालो पर बारीक नीली धारियाँ उभर आयी है । वह उस दिन काफी देर तक मेरे पास बैठ कर मुझसे बाते करती रही । मैं उसे बहलानेके लिए उसे अपना एलबम दिखलाने लगा । एलबममें मेरे एक मित्रके व्याहके समयकी तसवीरको वह देर तक देखती रही । फिर उसने पूछा, "ये कौन है ?"

"यह मेरा दोस्त है और यह उसीकी बीवी है," मैंने कहा ।

"आप भी अपने व्याहके दिन ऐसी फोटो खिंचवायँगे ?" उसने फिर पूछा ।

मै पल भर उसके मासूम चेहरेको देखता रहा । फिर मैंने कहा, "मेरा व्याह पता नही होगा कि नही, पर जिस दिन तेरा व्याह होगा उस दिन तेरी ज़रूर ऐसी तसवीर खिँचेगी ।"

"हिश् !" वह बोली, "हम तो डाक्टरी पढेगे, हम व्याह थोडे ही करवायँगे ?"

कुछ देर वह चुप-चाप एलबमके पन्ने उलटती रही । फिर उसने पूछा, "अच्छा आप बताइए मै हिन्दू हूँ कि मुसलमान ?"

"तेरा नाम क्या है ?" मैं उसे बहलाने लगा ।

"इन्दु ।"

"तो तू हिन्दू है ?"

"नामसे क्या होता है ?" वह बोली, "बाबूजी हिन्दू है और अम्मी मुसलमान है। मै न हिन्दू हूँ न मुसलमान।"

"नही है तो न सही। हिन्दू-मुसलमान होनेसे क्या होता है ?"

"अब तो नही होता, पर जब मै बडी हो जाऊँगी, तब तो होगा।"

"क्या होगा ?"

"यह आप अपने आप समझ ले। हम नही बतायँगे।"

मैंने उसे अपने साथ सटा लिया और कहा, "क्या होगा ? कुछ नही होगा। तू तो बिल्कुल पागल लडकी है।"

और मै देर तक उसके बालोमे हाथ फेरता रहा।

मगर उसी रात नगी वास्तविकता पर्देसे बाहर आ गयी।

रातके साढे ग्यारह या बारह बजे थे। मुझे अभी नीद नही आयी थी। मै बरामदेमे अपनी चारपाई पर करवटे ले रहा था। पासके कमरेमे घडीकी टिक-टिक लगातार सुनायी दे रही थी। अचानक नीरवताकी छातीमें एक नश्तर-सा चुभा। नसीमकी एक लबी चीख वातावरणमें फैल गयी। साथ धनपतरायकी कर्कश आवाज सुनायी देने लगी, "इन्दु को लेकर बम्बई जानेकी तैयारियाँ कर रही है ? तेरी खाल न उधेड दूँ हरामज़ादी ! नौ बरससे उसे पाल रहा हूँ, हज़ारो रुपये उसपर खर्च किये है, अब कमाईके दिन आये तो उसे तेरे साथ भेज दूँ ? तुझे जाना है, जा, अभी निकल जा। उसे हाथ भी लगाया तो तेरा खून पी लूँगा।"

फिर एक घूँसा, एक थप्पड और नसीमके रोनेकी आवाज़ और धनपतरायकी जोर-ज़ोरकी गालियाँ

बरामदेमें सोये हुए प्राय सभी लोग जाग गये थे पर सब दम साधे चारपाइयो पर ही पडे रहे। धनपतराय बडबडाता रहा, "कहती है अपनी बेटीको लेकर जा रही हूँ। बेटी तू बापके घरसे लेकर आयी थी ? आज से उसे हाथ लगायगी तो तेरे हाथ न चीर दूँ तो कहना। बडी बेटी वाली आयी है।"

सारी रात नसीम सुबक-सुबककर रोती रही । इन्दु सहमी हुई रात भर अपनी चारपाईपर सीधी लेटी रही । शकर शर्मा और लतीफ ऐसे सिर मुंह ओढकर पडे रहे जैसे वे इस घटनासे बिल्कुल बेखबर हो । मै सुवह तक न जाने कितनी बार सोया और कितनी बार जागा ।

मगर सुबह सब लोग दबे-दबे उसी विषयको लेकर बात करते रहे । हर एकको धनपतरायसे किसी न किसी तरहकी शिकायत थी इसलिए नसीमके साथ सबको सहानुभूति थी । शकरने मुझे बतलाया कि थिएटर में धनपतराय इसीतरह थप्पड मार-मारकर अपने कलाकारोको सवाद याद कराया करता था । मगर नसीम पर उसका हाथ कल पहली बार ही उठा था ।

इस घटनाके बाद गोपालको सख्त निराशावादने घेर लिया । वह दूसरे दिन थोडी देरके लिए आया और मेरे पास बैठकर अध्यात्मवादसे लेकर साम्यवाद तककी चर्चा करता रहा । उस निराशाकी बहकमें वह नसीम और सकीनाके विषयमे न जाने क्या-क्या कह गया । अन्तमे बेमतलब बकते रहनेके लिए क्षमा माँगकर वह जाता हुआ उस घरमें कभी न आनेकी कसम खा गया ।

उस रातकी घटनाके बादसे ही नसीमका लापरवाहीसे घूमना बद हो गया । तबसे वह बहुत तत्परताके साथ धनपतरायके हर आदेशका पालन करने लगी । आप उसका खाना लगाती, और जब उसकी बुलाहट होती तो शराबकी बोतल लेकर चुपचाप उसके कमरेमें चली जाती । उसका चेहरा भी पहलेसे बदलने लगा । चेहरेकी सुर्खी धोनेपर ऐसे लगता जैसे उसे यरकान हो रहा हो । लिपस्टिकके नीचे उसके ओठोकी पपडियाँ छिप नही पाती । वह दिनभर कमरेमें बन्द रहती और शामको कभी-कभी बँगलेसे दूर टहलने चली जाती ।

उस घटनाके कुछ ही दिन बाद एक दिन धनपतरायने दो बडे-बडे सेठो को चायपर बुलाया । चायकी टेबुल पर नसीम और सकीना मेज़बान थी ।

दोनो सेठ सफेद खद्दरमे सजे हुए पान चबाते हुए बैठे थे। इन्दु भडकीली फ्राक पहने धनपतरायकी गोदमे बैठी हुई गुडियाकी तरह उन लोगोकी तरफ देख रही थी। सुना गया था कि वे सेठ कम्पनीमें दो लाख रुपया लगायँगे।

बात चलते-चलते इन्दुपर आ गयी और धनपतराय सेठोको उसकी मार्केट वेल्यू समझाने लगा। वह इन्दुका इसतरह बखान करने लगा जैसे एक जीवित बच्चीकी नही, एक पुतलीकी बात कर रहा हो और कह रहा हो कि मै इस पुतलीको जैसे चाहूँ नचा सकता हूँ, इसे नचानेके लिए किसी तार की जरूरत नही, मेरे हाथमे तिजुर्बा है, चौबीस सालका तिजुर्बा। सेठ लोग इन्दुको देखते हुए सिर हिलाते रहे। धनपतरायने उन्हे विदा करते समय शीघ्र ही एकदिन वेरायटी शो रखने और उन्हे इन्दुकी कला दिखानेका वायदा किया।

सेठोकी सुविधाको देखते हुए इसके लिए इतवारका दिन निश्चित हुआ। बँगलेके वातावरणमे उस एक दिनके लिए काफी हलचल भर गयी।

इन्दु पैरमे घुँघरू बाँधे हुए बरामदेमे घूम रही थी। मै उसकी बाँह पकड़कर उसे बरामदेसे अपने कमरेमे ले आया। वह खुशबूसे महक रही थी। आसमानी रग के रेशमी फ्राकके साथ उसके बालोमें बँधा हुआ सुनहरा रिबन बहुत खिल रहा था। मगर उसकी बडी-बडी आँखे जैसे बरसनेको हो रही थी। मैने उसे हाथोमे उठा लिया और कहा, "इन्दु, आज तो तू बिल्कुल परी लग रही है।"

दो आँसू ढलककर इन्दुके गालोपर आ गये। मै उसे सोफेपर बिठाकर उसके पास बैठ गया। वह सोफेकी बाँहपर सिर रखकर सुबकने लगी। मैने उसे थपथपा कर कहा, "क्या बात है पगली, रोती क्यो है?"

इन्दुने सोफेकी बाँहसे सिर हटाकर मेरी छातीमें मुँह छिपा लिया और उसी तरह सुबकती हुई बोली, "आप आज मुझे दिल्ली ले चलिये। मेरी वहाँ एक सहेली है, मुझे उसके घर छोड आइए।"

"कौन सहेली है तेरी वहाँ ?"

"कमलाका घर वहाँ है। मै कमलाके घर रहूँगी। मै यहाँ नही नाचूँगी।"

"क्यो नाचनेमें क्या है ?" मैने चुमकारकर उसके गालोको थपथपाया और कहा, "तुझे इतना अच्छा तो नाचना आता है। आज इतने बडे-बडे लोग तेरा नाच देखने आयँगे। आज तो तुझे कितने ही इनाम मिलेगे।"

इन्दुने सिर उठाकर मेरी ओर देखा और बोली, "हमने लोगोसे इनाम लेनेके लिए थोडे ही नाचना सीखा है? कमलाको भी नाचना आता है। पर वह तो अपने घरमें ही नाचती है। मै कोई तमाशा हूँ ?" उसके ओठ कॉपने लगे और आँखे जल्दी-जल्दी झपकती रही।

"तू आज अकेली थोडे ही नाचेगी ?" मैने रूमालसे उसकी आॅखे पोछते हुए कहा, "तेरी अम्मी भी तो नाचेगी।"

"अम्मी तो थिएटरमें भी नाचती थी," वह बोली, "पता है, लोग उन को क्या-क्या कहते है ? मै नाचूँगी तो वही बातें मुझको भी कहेंगे।"

"नही, नही, तुझको कैसे कहेगे ? इन्दु रानीको भला कोई कुछ कह सकता है ?"

"क्यो नही कह सकता ?" वह उसी तरह काँपते हुए ओठोसे बोली, "शकर अभी-अभी शर्मासे कह रहा था कि यह लडकी बडी होकर अपनी माॅको भी मात करेगी।"

"शकर यह कह रहा था ?"

"हाँ, शकर शर्मासे कह रहा था और शर्मा उससे बोला कि हाँ, रडी की औलाद है, रडियोके तो खूनमें नखरा होता है।"

और कुछ क्षण चुपचाप आँखें झपकाकर उसने पूछा, "आप बताइए, मै रडी हूँ ?"

मैने उसकी ठुड्ढी हाथसे उठाकर उसका माथा चूम लिया और कहा, "जो ऐसी बात कहता है, उसकी अपनी ज़बान गदी होती है। तू ऐसी बात सुनती ही क्यो है ?" और मैने फिर रूमालसे उसकी आँखें पोछ दी।

उस रात काफी देरतक चहल-पहल रही। खाना हो चुकनेपर पहले धनपतरायने एक गीत गाया। फिर नसीम और सकीनाके गीत और नसीम का एक नाच हुआ। उसके बाद इन्दुने बादलमे चमकती हुई बिजलीका नृत्य किया। वह थिरकती हुई जब बाहें फैलाती तो नेपथ्यमे बादलका गर्जन सुनायी देता। फिर वह सहमी सी सिमटने लगती। जब उसने वह नृत्य समाप्त किया तो बहुत देरतक तालियोका शोर सुनायी देता रहा।

मैंने मेक-अपके कमरेमे जाकर उसे शाबाश दी और पूछा, "बता, तुझे इसके लिए क्या इनाम दूँ?"

"कुछ नही, तुम यहाँ हमारे पास बैठो, बस!" वह बोली, "हमसे कही कुछ खराब तो नही हुआ?"

"नही। क्यो?" मैंने देखा कि उसकी आँखोका भाव कुछ और सा हो रहा है।

"हमसे रिहर्सलमे थोडा बिगड गया था तो बाबूजी ने थप्पड मारा था।" उसने पुतलियोको फैलाकर और पलके जल्दी-जल्दी झपकाकर उमडते हुए आँसुओको वापस लौटा देनेकी चेष्टा की और उस चेष्टाको कामयाब बनानेके लिए हँसने लगी।

दूसरी बार वह फूलोकी रानी बनकर आयी। उसे सिरसे पैर तक फूलोसे लादा गया था। वह एक हाथमे एक फूलोसे भरी हुई डाली लिये थी और दूसरे हाथमें फूलोके गजरे। उसे उस रूपमे देखकर सेठ लोगोके सिर जरा-जरा हिले। धनपतरायके चेहरे पर चमक आ गयी। इन्दुने नाचना आरम्भ किया।

धीरे-धीरे तबलेके साथ उसके पैरोकी तेजी बढने लगी। उसके पैर तालके अनुसार ठीक पड तो रहे थे, मगर शायद उससे फूलोका बोझ सँभाला नही जा रहा था, या शायद उसका ध्यान कही और हट गया था. मैंने लक्षित किया कि वह दो एक जगह बीचमें थोडा उखड गयी है। अगले ही क्षण यह निश्चय करना कठिन हो गया कि वह डगमगा रही है या नाच

रही है बस उसकी बाहें हिल रही थी और कदम चल रहे थे। आखिर उसके पैर उखड गये और फूलोकी डाली और गजरे उसके हाथसे गिर गये। इन्दु गिरनेको हुई लेकिन सँभल गयी, मगर सँभलती-सँभलती फिसलकर गिर गयी।

साज़ रुक गये। पलभरके लिए खामोशी छायी रही।

ऐसे अवसर पर धनपतरायका तिजुर्बा काम आ गया। वह उसी क्षण मचपर पहुँच गया और गिरी हुई इन्दुको बाहोमें उठाकर मुसकराता हुआ उपस्थित लोगोको सलाम देने लगा। साज़ बजने लगे और लोग ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ पीटने लगे जैसे इन्दुका गिरना भी तमाशा ही था। जैसे तालियोके शोरसे गुदगुदायी जाकर भी वह धनपतरायकी बाहो पर पडी हुई अपना अभिनय ही पूरा कर रही थी। धनपतराय बाहे हिला हिलाकर सलाम देता रहा और लोग तालियाँ पीट-पीटकर उसका अभिनन्दन करते रहे ।

आज उस बातको आठ दिन हो गये है। इन्दुकी बेहोशी तो दूसरे दिन दूर हो गयी थी, मगर उसका बुखार अभीतक नही उतरा। सात दिनमें उसके शरीरकी हड्डियाँ निकल आयी है। बुखारके दबावमे जब वह आँखे उघाडकर देखती है तो उसकी आँखें देखी नही जाती। उसके सामने से हट जानेपर भी वे आँखे बार-बार सामने आकर यह सवाल पूछती है, "मै रडी हूँ ? आप बताइए, मै रंडी हूँ ?"

धनपतरायके कमरेमे उसका दौर अभी तक चल रहा है सकीना नसीमके पाससे उठकर धनपतरायके कमरेमे चली गयी है।

उधर बडे कमरेमें शकर और लतीफ ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे है। उन्होने शायद ताशकी बाज़ी जीत ली है।

भूखे

पहली बार उस महिलाको मैंने शिमलेकी मालरोड पर देखा था।

तब वह शिमलेमें नयी ही आयी थी। शिमलेमें नये आनेवाले लोग, यदि उनमें कुछ भी विशेषता हो, तो बहुत जल्दी पहचाने जाते हैं, और मेरे दोस्त सतीश जैसे लोग चार छ दिनोमें ही उनकी आर्थिक, पारिवारिक और सामाजिक स्थितिका पूरा ब्यौरा भी ढूँढ निकालते है। सतीश यह सब पता किस प्रकार पा लेता था यह मै नही कह सकता, अलबत्ता इतना जरूर है कि उसकी बात कभी गलत नही निकलती थी। इसीलिए हम उसे चलता फिरता एन्साइक्लोपीडिया कहा करते थे। जिस समय हमने उस महिलाको पहली बार देखा उसी समय मैंने सोच लिया था कि सतीश ज़रूर उसकी खोज खबर निकालेगा। वह सुन्दर तो थी ही पर उससे भी बडी बात यह थी कि भारतीय न होनेपर भी उसके शरीरपर सलवार कमीज़ बहुत खिल रही थी। वैसे तो मालरोड पर कोई न कोई अग्रेज या एग्लो-इण्डियन लडकी गाहे बगाहे सलवार कमीज पहने नज़र आ ज ती थी, पर अक्सर उसके शरीर पर वे वस्त्र पराये-से लगते थे। शायद उनके कन्धोकी बनावट जरा भिन्न होती है या शायद उनका बाहें हिलानेका अन्दाज ज़रा और सा होता है। पर वह उन वस्त्रोमें उसी स्वाभाविक ढगसे चल रही थी जैसे पजाबी लडकियाँ चलती हैं। उसकी उम्र तीस-बत्तीस वर्षके लगभग होगी पर उसका शरीर जरा भी नही ढला था और पहली नजरमें तो वह बीस-बाईस वर्षकी ही प्रतीत होती थी। उसकी आँखे नीली थी और बाल घुँघराले और सुनहरे थे। उसका पाँच-छ वर्षका बच्चा उसके साथ था जो खूब गोरा चिट्टा था और लाल और सफेद ऊनके वस्त्रोमें और भी सुन्दर लगता था। वह माँसे अग्रेज़ीमें पूछ रहा था, "ममी, शिमला कौनसी जगहका नाम है?"

और वह उसे समझा रही थी कि वह सारा शहर ही शिमला है, उनके घरसे बहुत आगे तक।

"यह सडक भी शिमला है?"

"हाँ, यह भी शिमला है।"

"और यह वर्फवाला पहाड भी?"

"नही, वह शिमला नही है।"

"वह शिमला क्यो नही है?"

और वह उसे समझाने लगी कि वह पहाड वहाँसे बहुत दूर है और शिमलाका विस्तार उतनी दूरतक नहीं है।

"खूब चीज़ है!" उसके पाससे निकल जानेपर सतीशने कहा।

और मुझे उसी समय निश्चय हो गया कि सतीश उसका इतिहास जाननेमे जरूर दिलचस्पी लेगा।

और सचमुच कुछ दिन वाद रिज से ऊपर 'दो पैसा बेंच' पर बैठे हुए उसने मुझे उसका पूरा इतिहास सुना दिया।

लगभग सात वर्ष पहले सत्यपाल नामक एक पजावी युवक, जे० जे० स्कूल आव् आर्ट से चित्रकलामे डिप्लोमा लेकर, आगे और विशेष अध्ययन करनेके उद्देश्य से, अपने मित्रोंसे डेढ हज़ार रुपया उधार लेकर फ्रास चला गया था। वहाँ रहकर छ महीने उसने किसी तरह निकाल लिये, परन्तु उसके वाद गुज़ारा करना कठिन हो गया तो वह काम करके कुछ पैसे बनाने के इरादेसे इगलैण्ड चला आया। वहाँ वह एक जूता वनानेके कारखानेमें कुछ दिन चमडा साफ करनेका काम करता रहा। वहाँ काम करते हुए ही उसका एवलीन वार्करसे परिचय हुआ जो कारखानेके एक क्लर्क फ्रेड वार्कर की चचेरी वहन थी और कभी-कभी उससे मिलने आया करती थी। फ्रेड वार्करको भी चित्रकलाका थोडा शौक था और वह उसे अपने पेंसिलके खाके दिखानेके लिए आया करती थी। सत्यपालके वनाये हुए कुछ खाके और चित्र देखनेके वाद वह अपने खाके उसके पास भी ले जाने लगी और

धीरे-धीरे उनका परिचय प्रेममे बदल गया और उन्होने विवाह कर लिया। एवलीनके पास अपनी चारसौ पाउण्ड की पूँजी थी। उन्होने निश्चय किया कि उस पूँजीकी सहायतासे सालभर फ्रासमे रहकर सत्यपाल अपना अध्ययन पूरा कर ले, फिर वे भारतमे जा रहेगे। साल भर बाद जब वे भारत पहुँचे तो एवलीन एक बच्चेकी माँ बन चुकी थी। भारत आकर उन लोगोको एक नयी आर्थिक समस्याका सामना करना पडा। सत्यपालका ख्याल था कि वह बम्बईमे अपना छोटा-सा स्टुडियो बना लेगा, पर बम्बईमे बगैर अच्छी पगडी दिये जगह मिलना असम्भव था। वह अकेला होता तो चार छ महीने इधर-उधर धक्के खा लेता, पर एवलीन और बच्चेके साथ होनेसे उसके लिए तुरन्त आयका कोई न कोई ज़रिया पा लेना आवश्यक था। बम्बईमे रहकर वह ज्याद से ज्यादा किसी कमर्शियल स्टुडियोमे नौकरी कर सकता था जो उसे पसन्द नही था। पर क्योकि और कोई चारा नही था, इसलिए उसने वही काम आरम्भ कर दिया और तीन साढे तीन साल उस चक्करमे फँसा रहा। इस बीच उसने कई दूसरे चित्र भी बनाये जिन्हे चित्रकारोंके सर्कलमे काफी पसन्द किया गया, पर ऊँची कीमतके समझे जाने पर भी उसके चित्र उसके लिए आयका ज़रिया नही बन सके। अन्तमे वह बम्बईसे दिल्ली चला आया और छ आठ महीने वहाँ भटकता रहा। लगातार चिन्ता और सघर्षके कारण उसका स्वास्थ्य काफी गिर गया था और तभी एक डाक्टरसे उसे पता चला कि उसे टी० बी० हो गया है।

एवलीन अपना सब कुछ बेच-बाचकर उसे शिमले ले आयी थी। हालाँकि पहाडपर रहकर भी उसके रोगमुक्त हो जानेकी आशा नही थी, फिर भी वह उसे अपने पास एकान्तमे रखना चाहती थी। उसने समर-हिलमे एक छोटासा खस्ताहाल घर किरायेपर लिया था। वह खुद घरकी सफाई करती थी, खाना बनाती थी, अस्पतालसे दवाई लाती थी और एक ओर पतिकी और दूसरी ओर बच्चे की देखभाल करती थी। बच्चेको पतिसे दूर रखनेके लिए उसे जो चेष्टा करनी पडी थी वह कई बार उसे रुला देती थी।

पर वह यथासम्भव आत्मवश रहकर बच्चेको टहलाने भी ले आती थी और उसे गुब्बारे भी खरीद देती थी।

कहानी पूरी करनेतक सतीश काफी भावुक हो गया। उसने सामने दूरकी पहाडियोपर दृष्टि गडाये हुए कहा, "इसे प्यार कहते हैं दोस्त ! है न एक मिसाल ? फिर लोग कहते हैं कि जिन्दगीमें पैसा ही सब कुछ है। क्या चीज है पैसा ? इन्सानकी भूख पैसेसे नही मिटती, प्यारसे मिटती है।"

और वह आँखे मूँदकर सिगरेटके लम्बे-लम्बे कश खीचने लगा।

कुछ दिन बाद मैंने एक होटलमें छ सात तैलचित्र लगे हुए देखे जिनके साथ यह नोटिस लगा था कि वे बिकाऊ है। साथ पूछताछ के लिए एवलीन कपूरका समरहिल पता दिया हुआ था।

दिनके दस ग्यारह बजेका समय था जब कि होटलोमें प्राय सभी सीटें खाली होती हैं। उस समय सारे हालमे मैं अकेला ही था। होटलकी शीशे वाली खिडकियोंसे छन कर धूप उन चित्रो पर आकर पड रही थी। उन चित्रोमें धूमिलसे लाल और मटमैले रगका विशेष प्रयोग किया गया था। मै काफी देर तक उन चित्रोको देखता रहा। मुझे चित्रोकी ज्यादा समझ नही है, फिर भी मेरे हृदय पर उनका कुछ ऐसा प्रभाव पडा जैसे कोई मेरी ओर देखकर दीवानावार प्रलाप कर रहा हो और आसपास हर चीज़को ठोकर लगानेकी चेष्टा कर रहा हो। एक चित्रका शीर्षक था 'गिद्ध'। उसमे गिद्धोकी आँखे कुछ ऐसी थी जैसे वह दुनियाकी हर चीज़का मजाक उडा रही हो और चोचें कुछ इस तरह खुली थी जैसे वे हर चीज़को निगल जाना चाहती हो। चोचो और पजो पर पुराने जमे हुए लहूके निशान थे। वह एक ऐसा चित्र था जिसे देखकर आँखें हटा लेनेको मन होता था और आँखे हटा लेने पर फिर देखनेकी कामना होती थी। 'दाता' शीर्षक चित्र भी कुछ ऐसा ही था। उसमे एक हड्डियोका ढाँचा एक ठूँठके नीचे बैठा हाथका खाली कटोरा शून्यकी ओर उठाये था। वे ऐसे चित्र थे जो

डरावनी छायाओंकी तरह दिमागमें घर कर जाते थे। मैंने होटलके मैने-जरके पास जाकर उससे पूछ आया उन चित्रोंमेंसे कोई बिका भी है या नहीं।

"इन भूतोंकी तसवीरोंको कौन खरीदेगा ?" उसने बिल बुक खोलकर पेंसिलसे बिल बनाते हुए कहा, "मैंने उस औरतका दिल रखनेके लिए यहाँ पर लगा दी थी, अब चार छ: दिनमें उतार कर भेज दूँगा।"

"कोई तुम्हारे पास कीमत पूछनेके लिए भी नहीं आया ?" मैंने उससे पूछा।

"क़ीमत तो लोग शौकिया पूछ लेते हैं," वह बोला, "पर किसीका दिमाग बिगड़ा है कि हज़ार-हज़ार रुपया देकर इन तसवीरोंको खरीदेगा ? मैं तो कहता हूँ कि कोई दस-दस रुपयेमें भी खरीदनेको तैयार हो जाय, तो बहुत मेहरबानी करेगा। मगर वह जाने इन्हें क्या समझती है ?"

"कितने दिन हो गये इन तसवीरोंको यहाँ लगे हुए ?"

"चौदह पन्द्रह दिन हो गये हैं।"

"इतने दिनोंमें कोई भी उससे बात करने नहीं गया ?"

"अरे यार," वह ओठोंको ज़रा सिकोड़ कर बोला, "बात करनेके लिए तो पचास आदमी जाते हैं मगर उनका बात करनेका मकसद तसवीरें खरीदना थोड़े ही होता है ? वे तो इसलिए जाते हैं कि दस मिनट बातका लुत्फ ले लें। तुम भी हो आओ। पहले तो तीन चार दिन वह खुद ही यहाँ आती रही है, मगर अब नहीं आती। समरहिलसे दिनमें दो-दो बार यहाँ तक पैदल आती थी और पैदल वापस जाती थी। एक सरदार तो उस पर बुरी तरहसे रीझ गया था।" और वह बिल मेरी ओर बढाता हुआ दाँत निकाल कर मुसकरा दिया।

दूसरी बार जब मैंने उसे देखा तब उसके पति की मृत्यु हो चुकी थी।

लोअर बाज़ारके आरम्भमें ही तीन चार ढाबे हैं जिनमें मज़दूर, छोटे मोटे दुकानदार और दफ्तरोंके बाबू रोटी खाते हैं। उन्हींमें से एक ढाबेमें एक रात मैं खाना खा रहा था, जब वह बच्चेकी उँगली पकड़े हुए ढाबेके पास

से निकल कर आगे चली गयी। बच्चा चलता हुआ किसी चीजकी ज़िद कर रहा था और वह उसे मनानेकी कोशिश कर रही थी। थोडी ही देर बाद वह लौट कर आयी और इस वार ढावेके सामने रुक गयी। बच्चा उसका हाथ पकड कर उसे ढावेकी ओर खीचने लगा। होटलके लाला, नौकरो और वहाँ बैठकर खाना खाने वाले सब लोगोकी नज़रे उस पर केन्द्रित हो गयी। उसने क्षणभर दुविधामें इधर-उधर देखा और फिर बच्चेको साथ लिये हुए ढावेके अन्दर आ गयी। अन्दर बैठे हुए लोग आँखो ही आँखोमें एक दूसरेकी ओर इशारे करके मुसकराये। एक सरकारी दफ्तरका क्लर्क स्वरके साथ उँगलियाँ चाटने लगा। एक नौकरके हाथसे दालकी कटोरी गिर गयी। वह बच्चेको लिये हुए कोनेमें बने हुए लकडीके केबिनमें चली गयी और महीनोका मैला पर्दा उसने आगे खीच लिया। नौकर उधर आर्डर लेने जाने लगा तो लालाने उसे इशारेसे रोक दिया और स्वय उठ कर आर्डर लेने पहुँच गया। पीछेसे एक बाबूने फबती कसी "हम भी बैठे है सूद साहब।"

लाला आर्डर लेकर मुसकराता हुआ अपनी गद्दी पर लौट आया और नौकरसे बोला कि अन्दर एक आलूकी टिकिया दे आये।

लोगोकी बातचीत प्राय बन्द हो गयी थी और खामोशीमें खाना खाया जा रहा था। लोगोकी आँखें, नासिकाएँ और ओठ मुसकरा रहे थे। जो बाते कही नही जा सकती थी उनका चटखारा लोग इशारोमें ले रहे थे। नौकर जब आलूकी टिकिया प्लेटमें डालकर अन्दर ले गया तो सहसा अन्दरसे बच्चेके रुँआसे स्वरमें चिल्लानेका शब्द सुनायी दिया, "मै अण्डे खाऊँगा, मै अण्डे खाऊँगा।"

"मै तुझे अण्डे खिलाऊँगी, ज़रूर खिलाऊँगी," उसकी माँका सयत स्वर सुनायी दिया, "पर इस समय नही, फिर कभी आयेंगे।"

"मै अभी खाऊँगा, अभी।" बच्चा फिर उसी तरह रोया।

"तुझसे कहा अभी नही," माँ बोली, "मैं तुझे रोज़ अण्डे खिलाया करूँगी, थोड़े दिन ठहर जा।"

बाहर ख़ामोशी और गहरी हो गयी थी। इशारेबाज़ी भी बन्द हो गयी थी। लोगोंके चेहरो पर हल्का खिसियानापन दिखायी दे रहा था।

"मैं रोज नही खाऊँगा, मैं सिर्फ आज ही खाऊँगा !" बच्चा मचल रहा था।

"आज तुम टिकिया खाओगे! खाओ!"

"नही, मैं सिर्फ टिकिया नही खाऊँगा।"

लाला अपनी जगहसे फिर उठा और एक प्लेटमें दो उबले हुए अण्डे रखकर अन्दर ले चला। लोगोकी दृष्टियोका भाव फिर बदल गया और एक आदमी थोडा खाँस दिया।

"यह बच्चेको दे दीजिए", उसने अन्दर जाकर कहा।

"आपसे किसने लानेको कहा है ?"

"कहा तो किसीने नही, ये मैं अपनी तरफ से .. ।"

"इन्हे वापस ले जाइए।"

वह बुदबुदाता हुआ वापस लौट आया।

एक आवाज सुनायी दी, "सूद साहब, अण्डे घरकी मुर्गियोके है या बाज़ार की ?"

लालाने एक बार आग्नेय दृष्टिसे कहने वालेकी ओर देखा और फिर हिसाबकी कापीके पन्ने पलटने लगा।

अन्दरसे बच्चेके सुबकनेका स्वर सुनायी दे रहा था।

"तू यह खायगा या नही ?" माँने उससे तीखे स्वरमें पूछा।

बच्चा कुछ उत्तर न देकर सुबकता रहा।

"तो उठ चल यहाँसे।" उसने और भी सख्त स्वरमें कहा, और वह बच्चेको लगभग घसीटती हुई बाहर निकल आयी।

उसके बाहर आने पर मैंने उसे गौरसे देखा। वह पहले से काफी बदली हुई थी। उसकी नीली आँखोंके नीचे हल्के हल्के काले दायरे बन गये थे। उसके ओठो पर पपडियाँ जम रही थी और गालो पर खुश्क सफेदी झलक आयी थी। यद्यपि उसके शरीरका कसाव पहले जैसा ही था, फिर भी चेहरे पर अधिक प्रौढता आ गयी थी। पजाबी वस्त्र उस समय उसके शरीर पर उतने स्वाभाविक नही लग रहे थे। उसका बच्चा भी पहलेसे कुछ दुबला हो गया था और उसके ओठ लगातार रोने वाले बच्चेके-से लग रहे थे। उसके नरम बाल सिर पर उलझ रहे थे और पलकोमें आँसुओकी दो बूँदे अटकी हुई थी। वह केबिनके बाहर आते ही तेजीसे अपना हाथ झटक कर माँसे पहले ढाबेके बाहर चला गया। एवलीनने गद्दीके पास रुककर पैसोके विषयमें पूछा तो लालाने तेवरी चढाये हुए उत्तर दिया, "चार आने।"

वह जानती थी कि एक टिकियाके उसे दो आन माँगने चाहिएँ, इसलिए उसने तीखी नज़रसे लालाको देखा मगर बिना कुछ कहे दो दुअन्नियाँ उसकी गद्दी पर फेक कर बाहर चली गयी।

"आज रेट बढा दिये है सूद साहब ?" उसके चले जाने पर एक आवाज़ सुनायी दी।

"बडा दिमाग दिखा रही थी," लाला सब खाने वालोको लक्षित करके बोला, "अब सारा दिमाग निकल गया कि नही ?"

और फिर सब कुछ पहलेकी तरह चलने लगा--बातें, कहकहे और दाल सब्ज़ीके लिए ज़ोर-ज़ोरकी पुकार। थोडी देरके लिए जो विराम आया था उसने शायद लोगोकी भूख और बढा दी थी क्योकि तन्दूरमे रोटी लगाने वाला बहुत फुर्ती करता हुआ भी लोगोकी माँग पूरी नही कर पा रहा था।

तीसरी बार मैंने उसे काफी दिनोमें देखा।

सतीश और मैं शामको बालरूमकी तरफ जा रहे थे। महीनेके पहले सप्ताहमें हमलोग एकाध बार यह ऐयाशी कर लिया करते थे। हमें खुद नाचना नही आता था, और न ही वहाँ हमारा किन्ही लोगोसे परिचय

था । मगर अपने लिए इतना ही बहुत था कि कोनेमे बैठकर वहाँ नाचती हुई आकृतियोको देख लेते थे । सतीश उनमेंसे कइयोके इतिहास भी सुनाया करता था । शिमलेकी प्राय सभी सोसाइटी गर्ल्ज़ वहाँ आती थी । उनका मेक अप और उनकी मुसकराहटे दूरसे बहुत सुन्दर लगती थी । वहाँ मित्रताके नाम पर वे सौदे आसानीसे हो जाते थे जिन्हें सरे आम करना अपराध था ।

वह हमें बालरूमसे थोडी दूर कच्चे रास्ते पर दिखायी दी । वह अपने बच्चेको साथ लिये इलीजियम होटलकी तरफसे आ रही थी । उसने साधारण छीटका फ्राक पहन रखा था । उसके बच्चेने वही लाल और सफेद ऊनके कपडे पहन रखे थे जो अब मैले हो रहे थे । वह बच्चेकी उँगली पकडे ऐसी सूनी नजरसे सामने देखती चल रही थी जैसे उसे आसपास किसी वस्तुकी स्थितिका आभास ही न हो । उसे देखकर मेरे हृदय पर उस समय कुछ वैसी ही छाप पडी जैसी कि उसके पतिके बनाये हुए चित्रोको देखकर पडी थी । उसके चेहरेके सौन्दर्यमे विशेष अन्तर नही आया था परन्तु चेहरेका भाव इतना बदल रहा था कि मै उसे शिमलेमे न देखकर और कही देखता तो शायद पहचान भी नही पाता । वह जैसे अपने स्वाभाविक रूपसे एक व्यग्याकृतिमे बदल गयी थी ।

सडकके मोडके पास आकर वह मूँगफली वालेके पास रुक गयी । वह दो पैसे निकाल कर मूँगफली वालेको देने लगी तो बच्चेने उसका हाथ पकडकर मचलकर कहा, "नही, मै नही लूँगा ।"

उसने बच्चेकी ठुड्डीको छूकर उसे पुचकारा और कहा, "तू मेरा कितना अच्छा बेटा है ! ममीकी हर बात मानता है । देख न कितनी अच्छी मूँगफली है ।"

"नही मै यह नही खाऊँगा," लडका हठ पकडकर बोला, "मैं कबाब खाऊँगा, मैं आलूकी टिकिया खाऊँगा ।"

"नही बेटे", वह फिर समझाती हुई बोली, "मैमीकी तू इतनी बात नही मानता ? मै तुझे आलूकी टिकिया भी खिलाऊँगी, सब कुछ खिलाऊँगी, मगर कुछ दिन ठहर जा । समझा न ? इस वक्त तू यह मूँगफली ले ले, बहुत अच्छी भुनी हुई मूँगफली है ।"

"नही, मै कुछ नही खाऊँगा । कुछ नही खाऊँगा !" लडका और अधिक मचलकर उसका हाथ छोडकर आगे-आगे चल दिया । वह क्षण भर मूँगफली वालेके पास रुकी रही । फिर वह भी चल दी ।

"इसके पास इसके पतिकी बनायी हुई बहुत-सी तसवीरे है", सतीश मुझसे बोला ।

"मुझे पता है !' मैंने कहा ।

"यह समझती है कि किसी दिन वे तसवीरें अच्छी कीमत पर बिक जायँगी । यहाँ अक्सर लोग इससे तसवीर खरीदनेकी बात करते है, मगर फिर आपसमे इसका मजाक उडाते हैं। असलमें वे चाहते कुछ और ही है ।

"मुझे पता है !' मैंने कहा ।

हम सब लोग बालरूमके सामने पहुँच गये थे । बालरूमकी खिडकियोसे छन कर आती हुई रोशनी बहुत सुन्दर लग रही थी । ऊपरसे आर्केस्ट्राकी मीठी धुन सुनायी दे रही थी । बालरूमके समाजकी दो सुन्दर लडकियाँ चहकती हुई बालरूमकी सीढियाँ चढ रही थी ।

एवलीनका लडका सडक पर मुँह फुलाये खडा था । एवलीनने एक नजर ऊपर जाती हुई लडकियो पर डाली और बाल रूमकी रोशनीसे चमकती हुई पर्देदार खिडकियो पर से फिसलती हुई उसकी दृष्टि हमसे मिली, फिर एकदम बच्चेके कन्धे पर हाथ रखकर उसे पुचकारती हुई वह आगे चल दी ।

सीढियो पर चढते हुए हमने ऊपर तालियोका शब्द सुना । शायद तभी कोई धुन बजकर समाप्त हुई थी ।

०

शिकार

दादर, बाँदरा, सैंटाक्रुज, अँधेरी—अँधेरी, सैंटाक्रुज, बाँदरा, दादर, वही स्टेशन बार-बार आते और निकल जाते। पटवर्द्धन दरवाजेके पास खडा-खडा चर्चगेटसे अँधेरी तक गया था, अँधेरीसे ग्राट रोड तक आया था, ग्राट रोडसे फिर अँधेरी तक गया था और अब दूसरी बार अँधेरीसे लौट रहा था। आज कुछ न कुछ प्राप्त करना उसके लिए आवश्यक था। बृहस्पति, शुक्र और सनीचर तीन दिन खाली निकल गये थे। पैसे हाथ मे रहते दस दिन भी अवसरकी प्रतीक्षा करनी पडती तो उसे उतावली न होती। वह व्यर्थ अपनेको सकटमें डालनेके पक्षमे नही था। परन्तु बुधवारको पद्रह रुपये जुएमे हारकर उसके पास कुल डेढ रुपया बच रहा था, जिससे उसने किसी तरह अब तक का काम चलाया था। इस समय उस के पास केवल दो इकन्नियाँ थी। रातकी रोटीके लिए कुछ न कुछ पैदा करना आवश्यक था।

पिछली दादरफास्ट गाडीमे उसका काम बनते-बनते रह गया था। ग्राट रोडसे उस गाडीमे बहुतसे लोग चढे थे और दरवाजेके पास इतनी भीड हो गई थी कि कधा हिलाना भी कठिन था। उस भीड़में एक पारसी की जेब उसकी बाँहके साथ सट गई थी। पटवर्द्धनने त्वचाके स्पर्शसे जान लिया था कि उसकी जेबमे चालीस पचास रुपयेके नोट है। यदि वह तेज गाडी न होती तो सैंट्रल स्टेशन पर ही वह पारसीकी जेबकी सफाई करके उतर गया होता। केवल बाहर निकलनेके एक हल्लेकी आवश्यकता थी। परन्तु गाडी सात स्टेशन छोड कर बाँदरा जा कर रुकी, और इस बीच न जाने क्यो पारसीको कुछ सदेह-सा हो गया जिससे स्टेशन आने पर वह सतर्कता-पूर्वक पैसो वाली जेबपर हाथ रखे हुए गाडीसे उतरा। पटवर्द्धन

उसी तरह गाडीके दरवाज़ेसे टेक लगाये खडा रह गया जैसे वह ग्राट रोड से बाँदरा तक आया था

इस बार अँधेरी स्टेशन पर पटवर्द्धनने गाडी बदली तो उसे अपनी टाँगोमें थकान महसूस हो रही थी। उसे खडे-खडे यात्रा करते तीन घण्टे से अधिक समय हो चुका था। अब भी उसे खडे रहना था क्योकि उसका काम गाडीके दरवाज़ेके पास ही बन सकता था। कामका अवसर वे कुछ क्षण ही होते थे जब अदर आने और बाहर निकलने वालोमे सघर्ष होता था। थकानके कारण पटवर्द्धनने निश्चय किया कि वह दादर स्टेशन पर चाय पी कर कोई दूसरी गाडी पकडेगा।

सैंटाक्रूज़ पर दरवाज़ेके पास भीड हो गई। पटवर्द्धनकी आँखें नवागन्तुको में से एक नवयुवकके चेहरेपर कुछ क्षणोके लिए रुकी। वह नवयुवक उसके बहुत पास खडा था। पटवर्द्धनको नवयवकके चेहरेकी रेखाएँ बहुत आकर्षक लगी। उसके अस्तव्यस्त घुँघराले बालो और विस्मित-सी बडी-बडी आंखोमें उसे कुछ विशेषता लगी। वह उन व्यक्तियोमें से था जिनके साथ अनायास बात करने को मन हो आता है। उसे जैसे अपने चारो ओर हर चीज़ अच्छी लग रही थी। पटवर्द्धन चेष्टापूर्वक उसके चेहरेसे आँखें हटा कर बाहर फैली हुई रेलकी पटरियोको देखने लगा।

बाँदरा निकल गया। जब गाडी माहिम स्टेशन पर रुकने लगी तो नवयुवकने पास खडे एक व्यक्तिकी बाँह छूकर उससे पूछा कि माटुगा जानेके लिए उसे दादरसे कौन-सी बस पकडनी चाहिए। पटवर्द्धनको उस व्यक्तिका बात करनेका लहजा भी आकर्षक लगा। उसे ईर्ष्या भी हुई कि नवयुवक उससे न पूछकर दूसरे व्यक्तिसे पूछ रहा है। उससे पूछता तो वह स्वय जाकर उसे बस स्टाप तक छोड आता।

नवयुवकने जिस व्यक्तिसे प्रश्न किया था उसे स्वय पता नही था कि दादरसे माटुगाके लिए कौन-सी बस मिलती है। उस व्यक्तिने पटवर्द्धनसे पूछा। पटवर्द्धनने सीधे नवयुवकको लक्षित कर के उत्तर दिया कि उसे

स्टेशनसे निकल कर 'जे' रूट बस पकडनी चाहिए । फिर कुछ क्षण रुककर उसने नवयुवकसे पूछा, "आप बम्बईमे नये ही आये है ?"

"जी हाँ, कल ही आया हूँ", नवयुवकने उत्तर दिया ।

"कामसे आये है या घूमनेके लिए ?" पटवर्द्धनने पूछा ।

"कामकी तलाशमे आया हूँ", कहते हुए नवयुवकने अपना निचला ओठ जरा-सा काट लिया । फिर उसने पटवर्द्धनसे पूछा, "आप यही रहते है ?"

"मै पिछले पाँच सालसे यहाँ रह रहा हूँ ।" कहते हुए पटवर्द्धन थोड़ा कुण्ठित हो गया ।

"क्या काम करते है ?" नवयुवकने पूछा ।

"ग्राट रोड पर मेरी जुरावोकी फैक्टरी है ।" यह उन अनेक उत्तरोमेंसे एक था जो इस प्रश्नके पूछे जाने पर वह लोगोको दिया करता था । उसे इसके लिए कुछ सोचना नहीं होता था । अनायास ही कभी वह कह देता कि वह एक दवाई कम्पनीका सेल्ज़मैन है । कभी कह देता कि वह जूते वनानेवालोको चमडा सप्लाई करता है । हर वात वह बहुत स्वाभाविक ढगसे कह जाता था । परन्तु उस समय उसे अपना स्वर कुछ अस्वाभाविक लगा । उसकी आँखे नवयुवकके चेहरेसे हट गई ।

पास ही एक पाँच छ वर्षकी बच्ची अपने पिताका हाथ पकडे खडी थी । वह पटवर्द्धनके मैले कपडोके स्पर्शसे अपनी वायलकी नई फ्राकको वचानेके लिए अपने पितासे सटी जा रही थी । वच्चीके ओठ वहुत पतले और सुन्दर थे । उसकी गरदनकी हल्की-हल्की रेखाएँ जीवित शखोका स्मरण कराती थी । नवयुवक भी वच्चीको देख रहा था । वच्चीसे आँख मिलने पर एक वार उसने प्यारसे उसकी ठुड्डीको सहला दिया । वच्ची मुसकराई । पट-वर्द्धनकी कुण्ठा वढ गई । वह चेतन था कि वच्ची उसके स्पर्शसे दूर रहनेकी चेष्टा कर रही है । वह अन्दरके वातावरणसे आँखें हटाकर पुन वाहर की ओर देखने लगा । दूसरी ओरसे आती हुई एक लोकल गाडी घडघडाती पाससे निकल गई । रेलकी पटरियाँ तेज़ीसे विपरीत दिशामें जा रही थी ।

कही-कही पटरियोमें बत्तियोके प्रतिबिम्ब दिखाई दे जाते थे। एक पुल तेज़ीसे निकल गया जिस पर दुनिया और ही दिशामे और ही गतिसे जा रही थी। गाडीकी चाल धीमी हो गई। दादर स्टेशन आ गया था।

गाडीके स्टेशन पर रुकते ही भीडका दबाव बढ गया। उतरनेकी चेष्टा-में नवयुवकका शरीर पटवर्द्धनके शरीरके साथ सट गया। स्पर्शके पहले ही क्षणमे पटवर्द्धनने जान लिया कि नवयुवककी जेबमे चमडेका बटुवा है, जिसमें दस दसके या पाँच पाँचके बारह तेरह नोट हैं। बाहरसे आने वालोकी उतावलीके कारण गाडीसे उतर पाना कठिन हो रहा था। नव-युवक वच्चीको हाथका सहारा दिये हुए था। कुछ व्यक्तियोके टोकरियाँ लिये हुए अन्दर आ जानेसे सकुलता और भी बढ गई। पटवर्द्धनकी चेतना उसके हाथमें चली गई। नवयुवकका शरीर सरकने लगा। पटवर्द्धनका हाथ भी सरकने लगा। पटवर्द्धन नवयुवकसे पहले प्लेटफार्म पर उतर गया। नवयुवक वच्चीको हाथोमे उठाये हुए उतरा। वच्चीको उसके पिताके सरक्षणमें देकर वह उससे बात करता हुआ पुलकी ओर चलने लगा।

उस समय पटवर्द्धन चायके स्टालकी ओटमे खडा था। उसकी दृष्टि नवयुवकका अनुसरण कर रही थी। गाडी झटके साथ चल पडी। पटवर्द्धनके पैर गाडीकी ओर वढे, पर फुटबोर्डो पर इतने लोग खडे थे कि भागते हुए कही स्थान बना लेना सभव नही था। गाडीकी घडघडाहट वातावरणमें फैलकर विलीन हो गई। पटवर्द्धनकी दृष्टि पुलकी ओर गई। नवयुवक पुल पार कर रहा था। कुछ ही क्षण वाद भीडके रेलेमें नवयुवक का चेहरा अदृश्य हो गया।

पटवर्द्धनकी दृष्टि चायके स्टाल पर रुकी। एक आदमी जल्दी-जल्दी चायकी प्यालियाँ भरकर पत्थरके सफेद काउण्टर पर रखता जा रहा था। पटवर्द्धनको लगा जैसे वातावरणमें आवश्यकतासे अधिक खामोशी आ गई है। सहसा दूरसे एक गाडीके आनेका शब्द सुनाई देने लगा। एक दादर फास्ट गाडी तेजीसे निकल गई। गाडीके निकल जाने पर पटवर्द्धनको लगा

कि वह वातावरणमे निरन्तर गाडीके चलनेकी घडघडाहट चाहता है, साथ अपने चारो ओर भीडका दबाव चाहता है और ।

ग्राट रोड जाने वाली दूसरी गाडीके आनेमें छ· सात मिनिटकी देर थी। पटवर्द्धन पतलूनकी जेबोमे हाथ डाले खडा था। उसका बायाँ हाथ दो इकन्नियोको सहला रहा था और दायाँ हाथ चमडेके बटुवेको जिसमे अनुमानत दस दसके या पाँच पाँचके बारह तेरह नोट थे।

सिग्नलोकी रगीन रोशनियाँ जैसे एकटक उसीकी ओर देख रही थी। वातावरणमे मनुष्योके स्वरकी गूँज भी जैसे उसीके चारो ओर मँडरा रही थी। उसे यह चीज़ अच्छी लग रही थी कि स्टाल वाला लगातार चायकी प्यालियाँ भरकर काउण्टर पर रखता जा रहा है, जिससे उँडेली जा रही चायमे से निकलती हुई भापके हल्के-हल्के कुण्डल बार बार प्रकट होकर ओझल हो जाते है और सफेद पत्थरसे प्यालियोंके टकरानेका शब्द निरन्तर सुनाई देता रहता है।

बत्तियोकी रोशनीमे प्लेटफार्मके पत्थर चमक रहे थे। पाससे निकलते हुए मनुष्योकी ठिगनी तिरछी छायाएँ पत्थरोंके अन्दर चलती प्रतीत होती थी। पटवर्द्धनके मस्तिष्कमे भी कुछ छायाएँ चल-फिर रही थी

बिजलीके खभेके नीचे फुटपाथके पत्थर चमक रहे थे। उस फुटपाथ पर वह सोमके साथ लेटा हुआ है। सोमकी त्वचा कसी हुई है, उसके माथे पर गहरी लकीरे है और उसके बाल रूखे तथा अस्तव्यस्त हैं। सोम उससे कह रहा है, "बाबू, बबई मे चाँदीकी ईंटे बाज़ारोमें बिखरी रहती है। यहाँ आकर आदमी दिनोमें कुछ का कुछ बन जाता है—लखपति, करोडपति, एक्टर, डायरेक्टर "

वह सोमकी बात ध्यानसे सुन रहा है। उसका वह बबईमे पहला दिन है। वह वहाँ देवलालीसे भागकर आया है जहाँ वह अपने मामाके घरमें रहता था और जहाँ उसे दिनरात मामाके हाथो पिटना पडता था। कल्पना मे अब वह अपनेको तरह-तरहके वस्त्रोमे देखता है, गुजराती सेठके,

पारसी युवकके, वसके कण्डक्टरके और फुटपाथपर वैठने वाले पान वाले के .

सवेरे उठकर वह देखता है कि सोम उसके उठनेसे पहले ही वहाँसे चला गया है। वह अँगड़ाई लेकर अपनी जेवमें हाथ डालता है। उसके सब पैसे भी उसकी जेवमेंसे चले गये हैं

वडी-वडी इमारते, वसें, ट्रामें, इन्सान और शीशेके शो-केसो में वन्द डवल रोटियाँ

फैली हुई सडकें और गाडियोके घूमते हुए पहिये

रातको फुटपाथपर इकट्ठे होते हुए लोग—मज़दूर, भिखमगे, जेवकतरे, वेश्याओके दलाल—पुरुष, स्त्रियाँ और वच्चे ..

एक वच्चा रो रहा है . .

एक व्यक्ति जिसके चेहरेका मास सूख गया है और जिसकी आँखें गोल गोल दिखाई देती हैं, खभेसे टेक लगाये वीडी पी रहा है . .

एक किश्तीनुमा कार पाससे फिसलती हुई निकल जाती है

वीडी पीने वाला विस्फारित नेत्रोंसे कारकी गतिका अनुसरण करता है और आधी पी हुई वीडीको वुझाकर जेवमें रख लेता है।

"मज़दूर !" कोई आवाज़ देता है।

फुटपाथ परसे दस पन्द्रह आदमी उठकर दौड पडते हैं।

"आज कुछ काम मिला ?" एक नवयुवक उससे पूछ रहा है।

"नही। तुझे कुछ मिला ?"

"नही, मुझे भी नही मिला।"

एक स्त्री जिसकी आयुका कुछ अनुमान नही होता, लेटी हुई कराह रही है ..

एक युवक जिसकी वनियानमें जगह-जगह सूराख हो रहे है, वाँह खुजलाता हुआ कह रहा है, "मधुवाला मधुवाला है प्यारे ! उसका एक क्लोज़अप देखकर पैसे वसूल हो जाते है "

एक ओरसे शोर सुनाई दे रहा है—महमूदने निंबोलकरके चाकू मार दिया है ...।

"ये लोग वहशी है" कोई किसीसे कह रहा है।

एक पत्थर ट्रामकी खिडकीसे टकराता है...

पुलिसका सिपाही उसे घसीटकर ले जा रहा है। वह चिल्ला रहा है, "नही, मैं नही था ! नही, मैं नही था !"

गाड़ीमें भीड़का दबाव बढ रहा है। घुँघराले बालो वाले नवयुवक का शरीर उसके शरीरके साथ सट रहा है। नवयुवक हाथसे बच्चीको सहारा दिये हुए है। उसका हाथ नवयुवककी जेबकी ओर सरक रहा है।

सिग्नलकी बत्तीका रग बदल गया।

पटवर्द्धनका ध्यान फिर चायके स्टालकी ओर चला गया। स्टालवाला उसी तरह चायकी प्यालियाँ भर-भरकर काउण्टर पर रखता जा रहा था। उँडेली जा रही चायसे निकलती हुई भापके हल्के-हल्के कुण्डल बार-बार दिखाई देते और ओझल हो जाते थे।

गाड़ी आ रही थी।

पटवर्द्धनका हाथ बाईं जेबमें पड़े हुए बटुएको सहला रहा था। उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि वह पटवर्द्धन नही सोम है, और उसने अभी-अभी पटवर्द्धनकी जेब काटी है।

गाडी प्लेटफार्म पर आ गई।

गाड़ीका जो डिब्बा पटवर्द्धनके सामने रुका, उसके बाहर लटकते हुए एक नवयुवकने पटवर्द्धनकी ओर देखकर एक प्रश्नात्मक संकेत किया जिसका अर्थ था कि कोई शिकार हाथ लगा कि नही ?

पटवर्द्धन उसके सकेतका कोई उत्तर नही दे सका।

उस नवयुवकने ओठ ज़रा-सा विचका कर फिर आँखसे सकेत किया ।का अर्थ था कि वह स्वयं अभी तक खाली हाथ है।

पटवर्द्धन केवल स्थिर दृष्टिसे उसकी ओर देखता रहा।

गाडीने सीटी दी और चल पडी ।

पटवर्द्धनका अन्तर्मन उस समय व्याकुलता-पूर्वक चाह रहा था कि जीवन लौटकर कुछ मिनिट पीछे उस स्थिति पर चला जाय जब उसके चारो ओर भीडका दवाव वढ रहा था पर उसका हाथ अभी नवयुवककी जेव तक नही पहुँचा था ।

गाडीके आधे डिब्बे निकल गये थे ।

तभी उसने देखा कि घुँघराले वालो वाला नवयुवक पुलकी सीढ़ियाँ उतर रहा है । नवयुवकका चेहरा उस समय वहुत विकृत हो रहा था ।

गाडीका अन्तिम डिब्वा निकल रहा था ।

सहसा पटवर्द्धनकी टाँगोमें गति आ गई । वह भागा और गाडीके अन्तिम डिब्बेका डडा पकड कर फुटवोर्डके साथ लटक गया । क्षण भर में पुल दूर हो गया, प्लेटफार्म पीछे रह गया और नवयुवकका चेहरा आँखोसे ओझल हो गया ।

अब फिर रेलकी पटरियाँ तेजीसे विपरीत दिशाकी ओर जाती दिखाई दे रही थी । गाडीकी एक बत्तीका पटरी पर पडता हुआ प्रकाश गाडीके साथ-साथ चल रहा था । पटवर्द्धन दायें हाथसे डडेको पकडे था और वायें हाथसे जेवमे पडे वटुएको ।

परन्तु अब उसका अन्तर्मन व्याकुलतापूर्वक चाह रहा था कि जीवन लौटकर उस स्थिति पर चला जाय जव गाडीका अन्तिम डिब्वा निकल रहा था और वह अभी प्लेटफार्म पर ही था ।

अन्दर कोई किसीसे कह रहा था कि वह तेज गाडी है और चार स्टेशन छोडकर सीधी ग्राट रोड जा कर रुकेगी ।

●

उलझते धागे

घटाघरकी घडीने अभी-अभी नौ बजाये है।

थोड़ी देर पहले तक रिजपर काफी चहल-पहल थी। सैर करनेवालों के झुण्ड के झुण्ड नीचे मालरोडकी तरफ जा रहे थे और उधरसे ऊपरकी तरफ आ रहे थे। अब यहाँ खामोशी छा गई है। किनारेकी बेंचो पर बैठकर इस लोकसे उस लोक तककी चर्चा करनेवाली बूढोकी मण्डली भी उठकर चली गई है। वह अफगानी टोपी वाला डाक्टर जो रेलिगके सहारे खडा होकर सिगरेटके कश खीच रहा था, अब बडे अस्पतालकी गोरी नर्सके साथ बातें करता हुआ कैथूके रास्ते पर चला गया है।

मालरोड सुनसान हो गयी है। वैसे मालरोड इसका पुराना नाम है। अब सरकारने इसका नाम बदलकर लाजपतराय रोड कर दिया है। परन्तु नया नाम पाकर भी इस सडकका रग-ढग वही पुराना है। वही लोग आते है और रोज़ उसी तरह चहलकदमी करके चले जाते है। पर खैर, मालरोड अब सुनसान हो गयी है। रिजपर विरानी छा गई है। थोडी देर पहले घटाघरकी घडीकी सूइयाँ बहुत तेज़-तेज़ चल रही थी मगर अब जैसे एक ही जगहपर जम गयी है। ऊपरके सिनेमाघरसे आवाज़े आ रही है, जैसे पहाडकी चोटीपर कोई भटकी हुई रूह ज़ोर-जोरसे चिल्ला रही हो।

हवाघरके बाहर इस वक्त हम चार आदमियोंके सिवा और कोई नही है। हमारे आगे हमारा खाली रिक्शा है और फिर दूरतक कोलतार की लम्बी सड़क है। हमे यहाँ बैठे सवा डेढ घटा हो गया है। आज सारा दिन कोई भी सवारी नही मिली। अड्डेसे सजौली और सजौलीसे यहाँ तक बस खाली रिक्शा ही खीचा है। अब तो नौ बज गये है, अब सवारी

मिलनेको कोई उम्मीद भी नही है। फिर भी बैठकर इतजार तो करेगे ही। कहते है सवारी और मौतका कोई पता नही होता। सवारी और मौत। . मेरा बाप फेफडोके बुखारमे मरा था। अब तो उसे मरे भी पाँच साल हो गये। पाँच सालसे मै सवारियाँ खीच रहा हूँ। मेरा बाप सत्रह बरसका था जब वह इस काममें लगा था। मै जब लगा तो मै पूरे चौदह का भी नही था। हमारा यह पुश्तैनी धधा है। लेकिन एक बात मेरी समझमें नही आती—हम सवारियाँ ढोते है कि पेट भरे और पेट भरते है कि सवारियाँ ढोयें—बडी अजीब बात लगती है।

हम चारोने बीडियाँ सुलगा रखी है। बीडीका लबा कश खीचना मुझे बहुत अच्छा लगता है। बीडीका आगेका हिस्सा एकदमसे चमक उठता है, जैसे उसमें जान आ जाती है। मुँहसे हटाते ही बीडी फिर बेजान हो जाती है। बहुत-सी बातें है जो मेरी समझमें नही आर्त । कभी कोई बात समझमें आ जाती है और फिर एक दमसे निकल जाती है। . रिक्शा खीचनेमें मुझे एक बात अच्छी लगती है। आदमी दिनभर एक जगहसे दूसरी जगहकी तरफ चलता रहता है। एक जगह टिक कर मजा नही आता। मगर जब कभी भरी हुई घासपर लेटनेको मन हो या चीड़की टहनियाँ तोडने को मन हो तो भी रिक्शेके आगे जुते रहो, यह बुरा लगता है। जब मेंह बरसता है या ओले पडते है और बरफ गिरती है तो गाँवकी दुकानके अँधेरेकी याद करके बडा हिरख होता है। मन होता है कि घर जाकर एक कोनेमें दुबक जायँ और तम्बाकू पीते हुए आग तापते रहें। मगर कहाँ? घर बैठे रहें तो धधा कौन करेगा और रोटी कौन कमा.गा? कभी-कभी तो पैर बरफसे सुन्न हो जाते है, नीचेसे पैरोमें पत्थर गडते है, एक-एक कदम उठाना मुश्किल हो जाता है, फिर भी रिक्शा लिये हुए भागते रहते है—आखिर रोटीका मामला है, काम नही करे तो खाना कहाँसे खायें?

हवाघरके अन्दर एक बाबू बीबीके साथ बैठा है। लगता है कि दोनो का नया-नया व्याह हुआ है। दोनो एक दूसरेसे सटकर बैठे है, पर बिल्कुल

नावाकिफोकी तरह कभी कभार ही एकाध बात कर लेते है। कभी दोनों की आँखे मिली रहती है और कभी हाथ। दोनो बडे मग्न होकर बैठे है।

"ठड हो गई है!" बीबी ज़रा काँपकर कह रही है।

बाबू ओठोमें से सिर्फ चूमनेकी सी आवाज़ निकालकर चुप हो गया है। उसका ध्यान शायद दूसरी तरफ है।

"देखो मेरे पैरके तलुवेपर कितना बडा छाला हो गया है!" बीबी अपना सैडल उतारकर बाबूको अपना पैर दिखा रही है, "मुझे पैदल चलने की जरा आदत नही है।"

मगर बाबूका ध्यान कही और है—शायद मालरोडपर, या वहाँसे भी दूर, बहुत दूर, न जाने पहाडोसे भी आगे—वह जाने किस सोचमे पडा हुआ है

यहाँ पैरोमें कितने ही सूराख हो रहे है। पैरोको छूकर मुझे वैसी ही झुरझुरी होती है जैसे दीमक खायी लकडीको छूकर होता है। यह अगूठेके नीचे एक बड़ा सूराख है, इसके आस-पास कितने ही छोटे-छोटे सूराख और है। अब तो पैरोकी चमड़ी बिल्कुल मर गयी है। बर्फ और पत्थरको छोड कर और किसी चीज़का पैरोके नीचे पता ही नही चलता। शिव्बी मेरे पैरो के सूराखोपर उँगलियाँ फेरती है तो उन उँगलियोका भी कुछ पता नही चलता। मगर जब वह देरतक हाथ फेरती रहती है तो जैसे इन सूराखोमे जान आ जाती है और हल्की-हल्की सिहरन महसूस होने ल ती है। शिव्बी की उँगलियोको अपने हाथोमें लेकर मलना मुझे बहुत अच्छा लगता है। पहले उसकी उँगलियाँ बडी मुलायम थी। अब तो रोज़-रोज़ घास छीलनेसे उसकी उँगलियाँ भी कड़ी हो गयी है और उसका माँस फटा फटा-सा रहने लगा है। उसके पैरोमें भी अब सूराख हो गये है। बेचारी रोज़ एक गट्ठर घास काटती है और ऊपर मडीमें बेचनेके लिए लाती है। उसका बाप बड़ा हरामखोर है। बुड्ढा आप हाथ तक नही हिलाता और सारा काम उसीसे कराता है। शिव्बी कही मेरे घरमे आ जाय तो मैं कभी उसे घास

वेचनेके लिए न आने दूँ । मडी वालोकी बद नज़र कौन-रोक सकता है ? मगर उसके बापको तो उसका सौ रुपया चाहिए, इतना रुपया कहाँसे आय ? और जवतक रुपया नही, उससे व्याह भी नही हो सकता । मै कहता हूँ बुड्ढेको छोड, हम यहाँसे और कही चले चलते हैं, मर उसकी समझमें बात आती ही नही । मूरख बुड्ढेको रोटियाँ खिला-खिलाकर परान दे देगी ।

रातको गाँव भी पहुँचना है । शिब्बीने कहा था आज रात वह तिरशूल वाले शिखरके नीचे मिलेगी । गाँव है तो अड्डे से दो ही मील मगर रास्ता बडा वेढव है । हम तीन आदमी अक्सर साथ ही जाते हैं इसलिए रास्ता जरा ठीकसे कट जाता है । लौटते हुए कभी आधी रात हो जाती है । उस वक्त तो हम चलते नही, पत्थरोपर लुढकते जाते है । मगर गाँव पहुँचकर सारी थकान दूर हो जाती है । गाँवकी मिट्टीकी खुशबू कुछ और-सी है । घरके पाससे ही जो झरना बहता है उसके पानीकी छलछल सारे शरीरको थपकियाँ-सी देती है । घरकी दहलीज़के वाहर दूरतक घुप अँधेरा फैला होता है । उसमें भटकते हुए कीडोकी आवाज़ें ऐसे आती है जैसे कोई पानी में डुवकियाँ लगा रहा हो । कालू और दयालू झरनेकी ढलानके पास वैठ कर देर-देर तक गीत गाते रहते हैं । वह झरना गीतोका घर-सा है, अड्डेपर या और कही वैठकर वही गीत गाये तो वहुत वेगाना-सा लगता है ।

"कियाँ वोलदाऽ ओ ऽऽऽऽ कियाँ वोलदा ऽऽ ?

किया वोलदाऽ मेरी जाऽन भाबो कुक्कू कियाँ वोलदा ?"

"यह पहाडी गीत कितना अच्छा है ?" हवाघरमें वैठी हुई वीवी कह रही है ।

वावू मुँहसे सिर्फ 'पिच्' की आवाज़ पैदा करके कोटका कालर ऊँचा कर रहा है ।

"भूख तो नही लगी ?" वह पूछता है ।

"नही, अभी नही ।" और वह हवा के झोंके से सिहर कर उसके साथ और सट गयी है ।

सामने घाटीके पार तारादेवीका मन्दिर है। उसकी दो बत्तियाँ सुनहरी कबूतरियोंकी तरह काँप रही है। पहाड़ीके पीछेसे गहरा बादल उठ रहा है। जब बिजली चमकती है तो घाटीमे दूर दूर तक बिखरे हुए कितने ही घर दिखायी दे जाते है।

एक लम्बे कानोवाला कुत्ता हवाघरकी तरफ मुँह करके भौंक रहा है। एक बार हवाघरका चक्कर लगाकर वह बाहर निकल आया और लगातार भौंके जा रहा है। बाबू अपनी बीबीके कोटके बालोपर हाथ फेर रहा है। उसके कोटके बाल बडे मुलायम लगते हैं। और यह कालू यहाँ अपने रीछ जैसे बालोको खुजला रहा है। सामने स्कैंडल पाइटकी नीली बत्ती धुँधली होती जा रही है। तारादेवीकी तरफसे उठता हुआ बादल हमारे आस-पास घिर आया है। इधर यह घटाघर कैसा भूत-सा लगने लगा है? सामने होटलकी चिमनी और खिड़कियाँ बादलमें घिरकर ओझल हुई जा रही है। सब तरफ बादल ही बादल घिर आया है। असमान पर भी बादल है और चारो तरफ घाटियोमें भी। बत्तियोकी रोशनी छोटे-छोटे दायरोमें बद हो गयी है। कोलतारकी सडक दो तीन गज दूर तक दिखाई देती है, बस। बादल गहरा होकर धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा है। हल्की-हल्की बूँदें टीनकी छतोंसे टकराने लगी है।

"ओ कियाँ बोलदा ऽऽ मेरी जान भावीऽ
कुक्कू कियाँ ऽऽऽ बोलदाऽऽऽ ?
मंडियाँ सुकेताँ भाबी सोणे साणे राऽजे, ओऽऽऽऽ
मंडियाँ सुकेताँ भाबी..."

रिजकी खामोशी टूट गयी है। नीचे वाले सिनीमाकी खड्डसे एक औरत और मर्द भागते हुए आ रहे हैं। औरत बहुत भारी भरकम है और छोटा-सा रेशमी छाता लिये हुए आगे-आगे आ रही है। मर्द भी मोटा और नाटा है और तेज़ भागकर उसके बराबर आनेकी कोशिश कर रहा है। ज्यो-ज्यो बादल ऊपर उठता जाता है, कोलतारकी सडक दूरतक निकलती

आती है। पानी भी ज़ोर पकड रहा है। बृहस्पतकी झडी है, शायत पूरे सातदिन बरसेगी।

औरत और मर्द कैसे तेज भागे आ रहे है ?

"रिक्शा सा'ब ?"

"रिक्शा मेम सा'ब ?"

वे बिना बोले भागते ही जा रहे है। औरत बडी तेज़-तेज़ अंगरेज़ी बोल रही है—वट एट इट फिट फिट फिट टू मच। वेल गिट गिट चैंग चिंग होम आल राइट !

उसी तरफसे ये दो नौजवान लडके बाँहमें बाँह डाले आ रहे है। इनके पास छाता या बरसाती कोट कुछ नही है फिर भी वे कैसे आरामसे बात करते आ रहे है ? दोनो दुबले-पतले है, सिर्फ एक जरा छुटकू है और दूसरा लम्बू है। छुटकू बड़ा झूम-झूमकर चल रहा है और कोई शेर सुना रहा है-

"—जब खलाओमें उभरती हो अबाबील कोई...

आय हाय हाय, हुस्न देखा, उडती नहीं, तैरती नहीं, उभरती हो अबाबील कोई—"

लबू वाह वाह कर रहा है। जाने किस बात पर दोनो ज़ोर से ठहाका लगा उठे है ?

"रिक्शा सा'ब ?"

"रिक्शा माँगता है सा'ब ?'

वे विना इधर की ओर देखे ही आगे जा रहे है। कोलतारकी सडक पर उनके जूते तपन् तपत् की आवाज कर रहे है।

"इन बेचारोकी भी क्या ज़िंदगी है ?" छुटकू कह रहा है।

"मज़दूर की ज़िंदगी हो ही क्या सकती है ?"

"हम भी तो मज़दूर है।"

"हमारी भी क्या ज़िंदगी है ?"

"चार आदमी मिल कर एक आदमीको खीचें, यह हैवानियत है ।"

"तेरे पास सिगरेटके लिए एक आना है ?"

"नही । तेरे पास ?"

"नही ।"

"इस मुल्कमें आर्ट इस तरह भूखा मरता है ।"

और वह फिर गुनगुना रहा है—जब खलाओंमें उभरती हो अबाबील कोई..."

आगे पता नही वह क्या कह रहा है, मै तेरे कालुको रुख्सारमें क़ि काकुलो सुख्तार में क्या हो जाता हूँ ..

कुछ लडकियाँ दोपट्टोमें सिर और मुँह लपेटे और हाथो से अपनी सलवार उठाये लक्कड़मंडीकी तरफ़ भागी जा रही हैं ।

पानी बहुत ज़ोरसे पड रहा है । रिज पर नाख़ून भर का दरिया बह रहा है । पानीके पर्देके उस तरफ तारादेवीकी पहाड़ी पर दो सुनहरी कबूतरियाँ फिर दिखायी देने लगी हैं ।

"पानी इतने ज़ोरसे बरस रहा है, आज घर कैसे पहुँचेंगे ?" हवाघर में बैठी हुई बीबी कह रही है, मुझे पता होता तो मैं यह साडी पहन कर कभी न आती । आज रास्तेमें इसका सारा बार्डर ख़राब हो जायगा ।"

"रिक्शा सा'ब ?"

बाबूने सिर हिला दिया है । बेचारे के पास शायत पैसे नही होंगे ।

"थोडी देर बाद ?"

बाबूने फिर सिर हिला दिया है । बेचारा बाबू !

बारिश कुछ हल्की हो रही है । अब शायत कोई सवारी नही मिलेगी । रिक्शाको चल कर शेडमें छोड दें । वहाँ से मैं घंटे भर में गाँव पहुँच जाऊँगा । कालू और दयालू तो शायत आज शेडमें ही सोयेंगे । गाँव पहुँचने तक बारिश भी रुक जायगी । शिब्बी तिरशूल वाले शिखर

के नीचे ज़रूर मिलेगी। वह शायत कुछ भुने हुए दाने लेकर आय। बारिशकी रातमें गुड़के साथ भुने हुए दाने मिल जायँ, तो बस .

"कालुआ !"

"हो।"

"चलना है कि अभी बैठे रहना है ?"

"चलो।"

कालूके दाँत कटकटा रहे हैं। इसे ज़रा सी सर्दीसे बुखार हो जाता है। शैडमें इसके पास कुछ ओढनेको भी नही है। पिछली रात घरमेकी लोई-के साथ सटकर सो रहा था, सुबह उठते ही कहता था कि सारा शरीर टूट रहा है। आज दिनभर दौडना नही पड़ा, नही तो यह तो उलटा हो जाता। अब इसके दाँत कटकटा रहे हैं, रातको इसे फिर बुखार हो आया तो .

"ए रिक्शा !"

"लाया मेम सा'व !"

फिर वही बूढी मेम ! कही न कही, किसी न किसी चढाई या उतराई पर यह रोज़ दिखाई दे जाती है। इसका घर शिमलेकी खड्डमे है—अब इसे लेकर छोटे शिमले जाना पड़ेगा।

रिक्शाके पहिये तेज़ीसे घूम रहे हैं। हमारे पैर कोलतार की सडकपर धमक पैदा कर रहे हैं

हवाघर पीछे छूट रहा है। लम्बे कानोवाला कुत्ता फिर हवाघर की तरफ मुँह करके भौंक रहा है। नालेमे बहुत पानी आ गया है, वह आज फुफकारता हुआ बह रहा है। दूर किसी घरसे हल्की-हल्की वसरी की आवाज़ सुनाई पड रही है।

क्लारक होटल .

मरीना होटल . .

पटियाला हौस. . .

मेम रिक्शेमें बहुत अकड़कर बैठी है। मगर यह बैठी-बैठी मानक मुसकराती रहती है। रिक्शेमें बैठती है तो मुसकराती है, उतरती है तो मुसकराती है। रास्तेमें कोई वाकिफ दिखाई दे जाय तो उसकी तरफ देखकर मुसकराती है और सिर हिलाती है। इसकी मुसकराहट जैसे ओठोंमें से ही पैदा हो जाती है।

सामने कच्ची उतराई है। अगले मोड़पर गहरी ढलान है। अगर हमलोग रिक्शा छोड़कर हट जायँ और रिक्शाको अपने आप ढलानपर लुढ़कने दें तो .... ? रिक्शा लुढ़कता हुआ सामनेकी चट्टानसे जा टकरायगा और मेम रिक्शासे उछल कर खड्डमें जा गिरेगी। खड्डमें गिरकर भी क्या वह एक बार इसी तरह मुसकरायगी...?

पैरके नीचे शायद केंचुआ दब गया है। एक ही पलमें मरकर वह शायद परलोक चला गया। अब वह वहाँसे नयी जून लेकर आयगा। हो सकता है अब यह आदमी बनकर जनम ले। आदमीके रूपमें जनम लेकर इसको भी रोटीके लिए काम करना पड़ेगा। यह क्या काम करेगा? शायद यह भी बड़ा होकर हमारी तरह मेमका रिक्शा खींचेगा। फिर ढलानपर आकर इसका भी मन करेगा कि मेमका रिक्शा लुढ़कनेके लिए छोड़ दे। यह भी हो सकता है कि यह मरकर मेमकी जूनमें पड़े, और हमें इसे रिक्शेमें बिठाकर खींचना पड़े। फिर यह भी मेमकी तरह तनकर बैठेगा और मेमकी तरह ही मुसकरायगा।

यह मेमकी कोठी आ गयी। मेमका कुत्ता जीभ लपलपाता हुआ अन्दर से भागा आ रहा है। मेम कुत्तेकी तरफ देखकर मुसकरा रही है। मगर इसकी यह मुसकराहट काफी लम्बी है और ओठोंमें से ही पैदा हुई नहीं लगती।

"कालुआ।"

"हो।"

"तेरे दाँतोंकी फिर किटकिटी बज रही है?"

"ठड लगती है ।"

"बुखार तो नही ?"

"क्या मालूम ? पता नही बुखार ही हो . . ।"

अब तू अड्डेमें जाते ही सो जा । आज घरमेकी लोईमे इसके साथ सो जाना । बाहर नही पडा रहना । समझा ?"

"घरमे पर है, घरमा अगर सुला ले तो "

"क्यो घरमे ?"

"सो जाय, रात ही काटनी है । मुझे इसकी कुछ गरमी ही रहेगी ।"

सामने वापसीकी लम्बी चढाई है । कच्ची सडककी चढाई चढते हुए वहुत ज़ोर लगता है । पक्की सडक आ जाय तो दूसरी तरफ से गाँव चला जाऊँ । ये लोग रात शेडमें ही काटेंगे । बारिश बिल्कुल रुक गयी है । शिब्बी ज़रूर तिरशूल वाले शिखरके नीचे पहुँच गयी होगी । तेज़ चलूँगा तो पौन घटेमे पहुँच जाऊँगा । आज शिब्बीसे फिर कहूँगा कि उस बुड्ढे का कज़िया छोड दे । वह कही बात मान ले और मेरे साथ चली चले तो .

"रिक्शा ।"

"बैठिए सा'ब ।"

"बालूर गज ।"

मनीजर सा'वको आज फिर बालूरगज जाना है । बालूरगजमे इसकी एक रखेल रहती है । पैंर कोलतारकी फिसलनी सडक पर आकर वहुत धमक पैदा करते हैं । पहले यह शायत अपने होटलमें रुककर शराब पीएगा । घटा पौन घटा रिक्शा होटलके बाहर खडा रहेगा । फिर बालूरगज पहुँचकर लाल कोठीके बाहर घटा दो घटा रुकना पडेगा । आधी रातको कही यह वापस लौटकर आयगा । कालू आज रातको जरूर दाँत कटकटा कर मर जायगा ।

अपने पैरोकी धमककी आवाज भी कभी-कभी अच्छी लगती है ।

छप्छप् छप् छप् पप् छप्। हवाके झकोरे दमाकेसे गुच्छे बीच-बीचमें बूँदें बरसा देते हैं। आजकी हवा बहुत जालिम है ..

हाँ—ओ ! पैर उल्टा पड़ जानेसे गारोंकी सारी नाड़ियाँ खिंच गईं। ह-हा ! एड़ी एक कदम भी सीधी नहीं पड़ी जाती। अभी इस होटलसे काफी दूर जाना है। पंजोंके बल उतनी दूर तक कैसे भागा जा सकता है ? मगर...

"तेज चलाओ !"

'अच्छा सा'ब !"

मनीजर सा'ब को शायद नशेकी टोंट आ गयी है। इस समय एड़ी लगाकर भागते चलना ही ठीक है। भागते-भागते पैर अपने आप ठीक हो जायगा। अभी चार मील दौड़ना है, ऐसे पैर दबाकर कैसे दौड़ा जा सकता है ?

कालूको खाँसी उठ रही है। दौड़ते-दौड़ते उसकी जबान बाहरको निकल आती है। बूँदें फिर पड़ने लगी हैं ..

नीचेकी खाली सड़क पर जगुआ फागन और हरिया अपना अपना रिक्शा लेकर आ रहे हैं। ये लोग शायद घर वापस जा रहे हैं। जगुआको इस वक्त क्या गानेकी मस्ती सूझी है ?

कियां बोलदा ऽऽ मेरी जान भायो ऽऽ कुक्कू कियां बोलदा ऽऽ ?

ओ ऽऽऽ, कियाँ बोलदा ऽ ..."

"ए और तेज चलाओ।"

"अच्छा सा'ब !"

कोलतारकी सड़क पर पैर बहुत जोरसे धमक पैदा कर रहे हैं—छप् छप् छप् छप् छप्...

छोटी-सी चीज़

यह नन्हें यशवीरके जीवनमें एक ऐतिहासिक परिवर्तन था कि उसे समतल नागरिक वातावरणसे छ हज़ार फुट ऊँचे पहाड पर ले आया गया, और घरके समरस जीवनसे निकालकर इग्लिश पब्लिक स्कूलके खुले और अपरिचित जीवनमें छोड दिया गया।

स्कूलमें देखने और सीखनेकी कई नयी चीज़ें थी। पहली चीज़ जो उसने सीखी, वह थी हर काले गाऊनवाले व्यक्तिको देखकर हाथ पीठ-पीछे करके कहना, 'गुड आफ्टरनून, सर।' जब उसने ये शब्द ठीकसे ज़बानपर चढा लिये तब उसे लगा कि जो उसने सीखा है, वह गलत है, क्योकि और लड़के अब 'गुड आफ्टरनून, सर' नही 'गुड ईवनिंग, सर' कह रहे थे। उसने अपने आपको सुधारा और अब उस नये वाक्यको कहनेका अभ्यास करने लगा।

शब्द उसने अच्छी तरह रट लिये। रातको हाऊस-मास्टर मिस्टर बर्टन ने उसके पलंगके पास आकर जब उसे थपथपाया तो अपनी सद्य:-ग्राहिणी प्रतिभाका परिचय देनेके लिए उसने बडे उत्साहके साथ उनसे कहा, "गुड ईवनिंग, सर।"

कमरेके और लडके इसपर हँस दिये। यशवीरने महसूस किया कि उसने गलत चीज़ सीख ली है। यह प्रकट करनेके लिए कि उसे ठीक चीज़ भी आती है, उसने आत्म-संशोधनके रूपमें फिर कहा, "गुड आफ्टरनून, सर"

लडके पुन हँस दिये तो यशवीर अपनी अल्पज्ञताकी अनुभूतिसे लज्जित हो गया और अपना सिर-मुँह उसने कम्बलमें ढाँप लिया।

सवेरे उठकर उसने निश्चय किया कि वह पूरी तरह जाने बिना कोई बात मुँहसे नही निकालेगा। खान-पानके विषयमे भी उसके हृदयमें कई तरहके सन्देह थे। खानेकी मेज़के पास खडे होकर एक मास्टरके कहे

उस लडकेने अब कुछ नही कहा । अपना स्लाइस समाप्त करके वह जैमका डब्बा लिये हुए उठा, और दूसरी टेबलके एक बडे लडकेके पास जाकर उसे जैम देने लगा । यशवीरके हृदयमे स्पर्धा जाग्रत हुई । क्या जैम बिस्कुटोसे अधिक रसनीय है ? उसने अपना बिस्कुटोका डिब्बा उठाया, और उसी बडे लडकेके पास जाकर बोला, "एक बिस्कुट ले लो ।"

"मुझे नही चाहिए," उस लडकेने भी उपेक्षाके साथ कहा ।

"नही, एक ले लो," यशवीरने आग्रह किया, क्योकि बिना बिस्कुट दिये लौट जानेमें उसकी पराजय थी ।

उस लडकेने डिब्बेमें हाथ डालनेसे पहले डिब्बेका पतला कागज आधा फाड दिया । उसकी यह मर्म-विदारक चेष्टा यशवीरने सही । फिर लडके ने हाथ डालकर डिब्बेके सारे अस्तित्वको हिला दिया । जब उसका हाथ बाहर निकला तो उसमें एककी बजाय पाँच-छ. बिस्कुट थे । अपने बिस्कुटो के साथ यह बलात्कार यशवीरसे नही देखा गया । उसने झटपट उस लडके का हाथ पकड लिया और रोष तथा रुदन-मिश्रित स्वर में कहा, "इतने नही, एक ।"

"एक ?" उस लडकेने विचित्र भावके साथ पूछा ।

यशवीरने सिरके कम्पनसे अनुमति देनेका भी काम लिया और रुलाई रोकने का भी ।

लडकेने अपने हाथको एक वार ज़रा-सा भीचा और सारे बिस्कुट चूरा करके तिरस्कारके साथ उसके डिब्बेमे डाल दिये और कहा, "जाओ ।"

ब्रेकफास्टके वाद कमरेमें आकर यशवीर खिडकीसे वाहरकी ओर देखता हुआ देरतक आँसुओको रोकनेकी चेष्टा करता रहा । कलसे अब तक एक भी घटना ऐसी नही हुई थी, जिसमें उसे ठीक समय पर ठीक वात कर पानेका सन्तोष होता । जिस समय इन्सपेक्शनकी घण्टी बजी, वह अभी तैयार नही हुआ था । जल्दी-जल्दी उसने कपडे ठीक किये और टाईके साथ सघर्ष करने लगा । टाईकी गाँठ तो ठीक हो गयी पर नीचेका सिरा ऊपर

के सिरेसे दुगुना बड़ा निकल आया। इतना उसका ध्यान पैरोंकी ओर चला गया। मोजेका उसने अभी एक ही पैर पहना था और जूतेके तो दोनों ही पैर पहनने रहते थे। टाईको छोड़कर वह मोजेकी ओर झुका। उसी समय मिस्टर बर्टन इंस्पेक्शन करते हुए पास आ गये और वह तुरन्त उसी तरह हाथ पीठ-पीछे करके, (जैसा कि उसे समझाया गया था) इंस्पेक्शनके लिए तैयार हो गया। पतलूनके बटनोंकी ओर उसका ध्यान अकड़ कर खड़े होनेके बाद गया। इससे वह इतना अव्यवस्थित हो गया कि मिस्टर बर्टन से 'गुड मॉर्निंग सर' कहना भी भूल गया, हालाँकि ये शब्द उसने निश्चयके साथ सीखे थे, और तय कर लिया था कि दिनके बारह बजे तक उनका प्रयोग किया जा सकता है।

मिस्टर बर्टनने रुककर उसे सिरसे पाँव तक देखा और यह कहकर कि शामको पाँच बजे मेरी स्टडीमें आना, आगे चले गये। एक दूसरे लड़केसे वे कह गये कि वह उसे उनका स्टडीका कमरा दिखला दे।

जब उस लड़केने सवेरेसे गरासिमको उनका स्टडीका कमरा दिखलाया तो उसने आशंकित स्वरमें पूछा, "यहाँ क्या होता है?"

"मिस्टर बर्टनसे स्टिक मिलती है," उस लड़केने मुस्करा कर उत्तर दिया।

कुछ मिलता है, इस विचारसे गरासिमको थोड़ा सन्तोष हुआ। क्या मिलता है, इस जिज्ञासाकी पूर्तिके लिए उसने पूछा, "स्टिक क्या होती है?"

"बेंतकी छड़ी।"

गरासिमको अपने पिताकी बेंतकी छड़ी याद आई, जिसके रखनेका उन्हें बहुत शौक हुआ करता था। उसने वैसी ही रखनेकी वस्तुकी कल्पना करते कहा, "हर लड़केको यह मिलती है?"

उस लड़केने जब इस बातकी व्याख्या कर दी कि किन लड़कोंको 'स्टिक' मिलती है, और किस तरह दोहरे होकर निकरों पर उसकी मार सहनी होती है, तो गरासिमके सारे उमंगमें एक करारी चोट लगी।

बेंतकी छडी खेलनेके लिए ही नही, मार खानेके लिए भी होती है, यह सामान्य ज्ञान उसे पहली बार प्राप्त हुआ ।

"फिर क्या होता है ?" उसने पूरी जानकारी लेनेके लिए पूछा ।

"कुछ नही । बस 'थैंक यू, सर' कहकर लौट आते हैं ।"

थैंक यू, सर—यशवीर इन नये शब्दोको याद करने लगा । नितम्बो पर बेंत खानेकी बात पीछे चली गयी और जिह्वा पर तथा मस्तिष्कमें बार-बार वही शब्द उभरने लगे—थैंक यू, सर ! थैंक यू, सर ! थैंक यू, सर !

डिग डाग, डिग डाग, गिरजेकी घण्टियाँ बजने लगी थी । लडकोकी पक्तिमे चलता हुआ वह यह उत्सुकता लिये कि गिरजेका ईश्वर कैसा होगा, गिरजेके अन्दर चला गया ।

गिरजेमे सामूहिक प्रार्थना आरम्भ हुई ।

यशवीरको प्रार्थनाके शब्द नही आते थे । उसकी इच्छा हो रही थी कि वह शब्दोकी लयके साथ-साथ टाँगें पीछेकी ओर हिलाये, परन्तु यह सोचकर कि कही ऐसा करनेसे ईश्वर नाराज न हो जाय, वह किसी तरह अपनी टाँगोको वशमें किये रहा ।

आसपासके लडके निश्चल भावसे प्रार्थना कर रहे थे । सबने आँखोंके आगे हाथ रख रखे थे । फिर भी, न जाने कैसे, सब-के-सब शब्दोको एक साथ मिलाकर बोल लेते थे । न किसीका कोई शब्द दूसरोंसे पीछे रहता था, न आगे जाता था । यशवीर आँखो पर हाथ रखे हुए यह भी सोच रहा था कि इस तरह हाथ रखनेका क्या अर्थ है ? क्या ईश्वर खुली आँखोसे की गयी प्रार्थनाको नही सुनता ? और ईश्वर है कहाँ ? सामने लगी हुई मोमबत्तियोंके बीचमें, या काले चोगेवाले पादरीके अन्दर ? उसने निश्चय करनेके लिए आँखोंसे थोडा हाथ हटाया । फिर यह सोचकर कि कही ईश्वर उसे ऐसा करते देख न ले, उसने आँखें पूर्ववत् बन्द कर ली ।

दोपहरके खानेके समय मिसे और मास्टर भी उनके साथ ही खाना खाने के लिए बैठे । इस समय उसने लक्षित किया कि सब लडके रोटी छुरीके साथ

परन्तु मिस्टर बर्टनने न तो उसे झुकनेके लिए ही कहा और न स्टिक ही उठायी । केवल इतना पूछकर कि उसे स्कूल कैसा लग रहा है, उन्होने उसके सिर पर हाथ फेरा, और दो टाफियाँ उसे देकर कहा, "जा, छोटी-सी चीज़, उदास मत होना ।"

यशवीरने एक बार कोनेमें पड़ी हुई स्टिककी ओर देखा, और एक बार मिस्टर बर्टनकी ओर और फिर बाहर चला आया । उसे हार्दिक खेद हो रहा था कि उसे 'थैंक यू, सर' कहने का अवसर नही मिला । उसे लग रहा था कि दूसरा अवसर आने तक वह अवश्य इन शब्दोको भूल जायगा ।

सहसा उसने रुककर मिस्टर बर्टनकी स्टडीकी ओर मुँह किया और ज़ोर से कहा, "थैंक यू, सर !" और अपने कमरेकी ओर भाग आया । अपराध करनेका अनुभव तो उसके हृदयमे था, पर यह विश्वास भी था कि मिस्टर बर्टन उसे फिर बुलायेगे तो दो टाफियाँ अवश्य देगे ।

सीमाएँ

इतना बडा घर था, खाने पहनने और हर तरहकी सुविधा थी, फिर भी उमाके जीवनमें एक बहुत बडा अभाव था जिसे कोई चीज नही भर सकती थी ।

उसे लगता था कि वह देखनेमे सुन्दर नही है । वह जब भी शीशेके सामने खडी होती तो उसके मनमे झुँझलाहट भर आती । उसका मन होता कि उसकी नाक लबी हो, गाल ज़रा हल्के हो, ठोडी आगेकी ओर निकली हो और आँखे थोडा और बडी हो । परन्तु अब यह परिवर्तन कैसे होता ? उसे लगता कि उसके प्राण एक गलत शरीरमे फँसे गये है जिससे निस्तारका कोई चारा नही, और वह खीझकर शीशेके सामनेसे हट जाती ।

उसकी माँ हर रोज़ गीताका पाठ करती थी । वह बैठकर गीता सुना करती थी । कभी माँ कथा सुनने जाती तो वह साथ चली जाती थी । रोज़-रोज़ पण्डितकी एक ही तरहकी कथा होती थी—'नाना प्रकार कर करके नारद जी कहते भये हे राजन्' पण्डित जो कुछ सुनाता था, उसमे उसकी ज़रा भी रुचि नही रहती थी । उसकी माँ कथा सुनते-सुनते ऊँघने लगती थी । वह दरी पर बिखरे हुए फूलोको हाथोमे लेकर मसलती रहती थी ।

घरमे माँने ठाकुरजीकी मूर्ति रख रखी थी जिसकी दोनो समय आरती होती थी । उसके पिता रातको रोटी खानेके बाद चौरासी वैष्णवोकी वार्तामेंसे कोई वार्ता सुनाया करते थे । वार्ताके अतिरिक्त जो चर्चा होती, उसमें सतियोके चरित्र और दाल आटेका हिसाब, निराकारकी महिमा और सोने-चाँदीके भाव, सभी तरहके विषय आ जाते । वह पिता द्वारा दी गयी जानकारी पर कई बार आश्चर्य प्रकट करती, पर उस आश्चर्यमें उत्साह नही होता ।

उसे मिडल पास किये चार साल हो गये थे। तबसे अब तक वह उस सन्धि कालमेंसे ही गुज़र रही थी जब सिवा विवाहकी प्रतीक्षा करनेके जीवन-का और कोई ध्येय नही होता। माता-पिता जिस दिन भी विवाह कर दें, उस दिन उसे पत्नी बन कर दूसरे घरमें चली जाना था। यह महीने दो महीनेमे भी सभव हो सकता था,और दो तीन साल और भी प्रतीक्षामे निकल जा सकते थे।

उमा कुछ कर नही रही थी, फिर भी अपनेमें व्यस्त थी। बैठी थी, लेट गयी। फिर उठकर कमरेमें टहलने लगी। फिर खिडकीके पास खडी होकर गलीकी ओर देखने लगी और काफी देर तक देखती रही।

सबेरे रक्षा उसे सरलाके ब्याहका बुलावा दे गयी थी। वह कह गयी थी कि वह साढे पाँच बजे तैयार रहे, वह उसे आकर ले जायगी। पहले रक्षाने ही उसे बतलाया था कि सरलाका किसी लडकेसे प्रेम चल रहा है जो उसे चिट्ठियोमें कविता लिखकर भेजता है और जलती दोपहरमें कालेज-के गेटके पास उसकी प्रतीक्षामे खडा रहता है। आज वह प्रेम फलीभूत होने जा रहा था।

प्रेम   यह शब्द उसे गुदगुदा देता था। राधा और कृष्णके प्रेमकी चर्चा तो रोज़ ही घरमे हुआ करती थी। परन्तु उस दिव्य और अलौकिक प्रेमके बखानसे वह विभोर नही होती थी। परन्तु यह प्रेम   उसकी सहेली का किसी लडकेसे प्रेम   यह और चीज़ थी। इस प्रेमकी चर्चा होने पर मलमलके जामे-सा हल्का आवरण स्नायुओको छू लेता था।

"उम्मी!" माँ खिडकीमे उसके पास आकर खडी हो गयी।

उमाने ज़रा चौंककर माँकी ओर देखा।

"तुझे अभी तैयार नही होना?" माँने पूछा।

"अभी तैयार हो जाऊँगी, ऐसी क्या जल्दी है?" और उमाकी आँखें गलीकी ओर ही लगी रहीं।

"जाना है तो अब कपडे-अपडे बदल ले," माँने कहा, "बता साडी निकाल दूँ कि सूट ?"

"जो चाहे, निकाल दो ." उमा अन्यमनस्क भावसे बोली ।

"तेरी अपनी कोई मर्ज़ी नही ?"

"उसमे मर्जीका क्या है ? जो निकाल दोगी पहन लूँगी ।"

उसे अपने शरीरपर साडी और सूट दोनोमे से कोई चीज़ अच्छी नही लगती थी । कीमतीसे कीमती कपडे उसके अगोको छूकर जैसे मुरझा जाते थे । रक्षा सवेरे साधारण खादीके कपडे पहन कर आयी थी, फिर भी बहुत सुन्दर लग रही थी । उमा खिडकीसे हटकर शीशेके सामने चली गयी । मनमें फिर वही झुँझलाहट उठी । आज वह इतने लोगोंके बीच जाकर कैसी लगेगी ? माँने सुबह मना कर दिया होता तो कितना अच्छा था ? अब भी यदि वह रक्षासे ज्वरका या सिर दर्दका बहाना कर दे .?

वह अपने मनकी दुर्बलताको तरह-तरहसे सहारा दे रही थी । कभी चाहती कि रक्षा उसे लेने आना ही भूल जाय । कभी सोचती कि शायद यह सपना ही हो और आँख खुलने पर उसे लगे कि वह यूँ ही डर रही थी । मगर सपना होता तो कहीसे टूटता या बदलता । सुबहसे अब तक इतना एकतार सपना कैसे हो सकता था ?

माँने सफेद साटिनका सूट लाकर उसके हाथमें दे दिया । उमाने उसे शरीरसे लगाकर देखा । उसे अच्छा नही लगा । मगर उसका नया सूट वही था । उसने सोचा कि एक बार पहनकर देख ले, पहननेमें क्या हर्ज है ?

सूटकी फिटिग बिल्कुल ठीक थी । उसे लगा कि उससे उसके गोका भद्दापन और व्यक्त हो आया है । यदि उसकी कमर कुछ पतली और नीचेका हिस्सा ज़रा भारी होता तो ठीक था । यदि उसकी होशमें ही उसका पुनर्जन्म हो जाय और उसे रक्षा जैसा शरीर मिले, तो वह इस सूटमे कितनी अच्छी लगे ?

माँ वह लकडीका डिब्बा ले आयी जो कभी उसकी फूफीने उपहारमे दिया था। उसमें पाउडर, क्रीम, लिपस्टिक और नेलपालिश, कितनी ही चीज़े थी। उसने उन्हे कई-बार सूँघा तो था पर अपने शरीर पर उनके प्रयोगकी कल्पना नही की थी। उसने माँकी ओर देखा। माँ मुसकरा रही थी।

"यह किसके लिए लायी हो ?" उमाने पूछा।

"तेरे लिए और किसके लिए ?" माँ बोली, "ब्याह वाले घर नही जायगी ?"

"तो उसके लिए इस सबकी क्या ज़रूरत है ?"

"वैसे जाना लोगोमे बुरा लगेगा। घडी दो घडीकी ही तो बात है।"

"लालाजीने देख लिया तो ?"

"वे देरसे घर आयँगे। तू लौटकर साबुनसे मुँह धो लेना।"

"परन्तु।"

उसके मनका 'परन्तु' नही निकला। पर वह मना भी नही कर सकी। उसकी इच्छा न हो, ऐसी बात नही थी, पर मनमें आशका भी थी। वह उन चीज़ोको अनिश्चित-सी देखती रही। माँ दूसरे कमरेमे चली गयी।

लिपस्टिक उसने होठोके पास रखकर देखी। फिर मन हुआ कि हल्का-सा रंग चढाकर देख ले। चाहेगी तो पल भरमे तौलियेसे पोछ देगी।

ज्यो-ज्यो ओठोका रग बदलने लगा, उसके मनकी उत्सुकता बढने लगी। तौलियेसे ओठ छिपाये हुए वह जाकर खिडकीके किवाड बद कर आयी। फिर शीशेके सामने आकर वह तौलियेसे ओठोको रगडने लगी। उससे रग कुछ फीका तो हो गया पर पूरी तरह नही उतरा। फिर तौलिया रखकर उसने पाउडरकी डिबिया उठा ली। मनने प्रेरणा दी कि तौलिया है, पानी है, एक मिनिटमे चेहरा साफ हो सकता है, और वह पफसे चेहरे पर पाउडर लगाने लगी।

पफ रखकर जब उसने चेहरेको हाथसे मलना आरम्भ किया तभी सीढियो पर पैरोकी खट्-खट् सुनायी दी। इससे पहले कि वह तौलियेमें

मुँह छिपा पाती, रक्षा दरवाज़ा खोलकर कमरेमें आ गयी। उमाके लिए अपना आप भारी हो गया।

"तैयार हो गयी, परी रानी?" रक्षाने मुसकरा कर पूछा।

परी रानी शब्द उमाको खटक गया। उसे लगा कि उस शब्दमें चुभती हुई चोट है।

"साढे पाँच बज गये?" उसने कुण्ठित स्वरमे पूछा।

"अभी दस बारह मिनिट बाकी है," रक्षाने कहा।

"मैं समझ रही थी अभी पाँच भी नही बजे," उमाने किसी तरह मुसकरा कर कहा। उसकी आँखे रक्षाके शरीर पर स्थिर हो रही थी। आसमानी साडीके साथ हीरेके टाप्स और सोनेकी चूडियाँ पहन कर रक्षा बहुत सुन्दर लग रही थी।

माँने अन्दरसे पुकारा तो उमाको जैसे वहाँसे हटनेका बहाना मिल गया। अन्दर गयी तो माँ वह मखमली डिबिया लिये खडी थी जिसमे सोनेकी ज़ंजीर रखी रहती थी। वह ज़ंजीर माँके ब्याहमे आयी थी और उमाके ब्याहमें ी जानेके लिए सदूकमें सभालकर रखी हुई थी। माँने जंजीर उसके गलेमें पहना दी तो उमाको बहुत अजीब लगने लगा। रक्षा उधर आवाज़ दे रही थी इस लिए वह माँके साथ बाहर कमरेमें आ गयी। उसके बाहर आते ही रक्षाने चलनेकी जल्दी मचा दी।

जब वह चलने लगी तो माँने पीछे से कहा, "रातको मन्दिरमें उत्सव भी है। हो सके तो आती हुई दर्शन करती आना।"

वह सीढियोसे उतर कर रक्षाके साथ गलीमे चलने लगी।

ब्याह वाले घरमे पहुँच कर रक्षा बहुत जल्दी इधर-उधर लोगोमे उलझ गई। वह यहाँसे वहाँ जाती, वहाँसे उसके पास और उसके पाससे और किसीके पास। उमा सोफेके एक कोनेमे सिमट कर बैठ रही। जब उसकी रक्षासे आँख मिल जाती तो रक्षा मुसकरा कर उसे उत्साहित कर देती। जब रक्षा दूर चली जाती तो उमा बहुत अकेली पडने लगती।

वह बत्तियोंसे जगमगाता हुआ घर उसके लिए 'बहुत पराया' था। वहाँ फैली हुई महक अपनी दीवारोकी गन्धसे बहुत भिन्न थी। खामोश अकेले-पनके स्थान पर चारो ओर खिलखिलाता हुआ शोर सुनायी दे रहा था। वह एक प्रवाह था जिसमें निरन्तर लहरें उठ रही थी। पर वह लहरोमें लहर नही, एक तिनकेकी तरह थी—अकेली और एक ओरको हटी हुई।

रक्षा कुछ और लडकियोको लिये हुए बाहरसे आयी और उसने उन्हें उसका परिचय दिया, "यह हमारी उमा रानी है, तुम लोगो की तरह चट नही है, बहुत सीधी लडकी है।"

उमाको इस तरह अपना परिचय दिया जाना अच्छा नही लगा, फिर भी वह मुसकरा दी। रक्षा दूसरी लडकियोका परिचय कराने लगी, "यह कान्ता है, इण्टरमें पढती है। अभी-अभी इसने कॉलेजके नाटकमें जूलिएटका अभिनय किया था, बहुत अच्छा अभिनय रहा। यह कचन है, आजकल कला भवन मे नृत्य सीख रही है। और मनोरमा यह कॉलेजके बैडमिंटन क्लबकी सेक्रेटरी है, बैडमिंटनमें कॉलेजके किसी भी लडकेको मात दे सकती है

परिचय पा कर उमा अपने को उनसे और भी दूर अनुभव करने लगी। उन सबके पास करनेके लिए अपनी बाते थी। 'वह' 'उस दिन', 'वह बात' आदि सकेतोसे वे बरबस हँस देती थी। उमाके विचार कभी फरश पर अटक जाते, कभी छतसे टकराने लगते और कभी सफेद सूट पर आ कर सिमट जाते।

रक्षा कान्ताको एक फोटो दिखा रही थी। और कह रही थी, कि इस लडकेसे ललिताकी शादी हो रही है।

"अच्छी लाटरी है!" कान्ता तसवीर हाथमें लेकर बोली, "एक दिनकी भी जान-पहचान नही, और कलको ये पतिदेव होगें और ललिताजी 'हमारे वे' कहकर इनकी बात करेगी—धन्य पतिदेव!"

कान्ताकी बात पर और सबके साथ उमा भी हँस दी । पर वह बेमतलब की हँसी थी, उसे हँसनेके लिए आन्तरिक गुदगुदीका जरा भी अनुभव नही हुआ था । उसके स्नायु जैसे जकड गये थे । खुलना चाहते थे, लेकिन खुल नही पा रहे थे ।

बातमें से बात निकल रही थी । कभी कोई बात स्पष्ट कही जाती और कभी सांकेतिक भाषामें । सहसा बात बीचमे ही छोडकर रक्षा एक नवयुवकको लक्षित करके बोली, "आइए, भाई साहब ! लाये है आप हमारी चीज़ ?"

"भई, माफ कर दो," नवयुवक पास आता हुआ बोला, "तुम्हारी चीज मुझसे गुम हो गयी ।"

"हाँ, गुम हो गयी ! साथ आप नही गुम हो गये ?" रक्षा धृष्टताके साथ बोली ।

"अपना भी क्या पता है ?" नवयुवक ने कहा, "इसानको गुम होते देर लगती है ?"

नवयुवक लबा और दुबला पतला था और देखनेमें काफी अच्छा लग रहा था । उमाने एक नजर देखकर आँखे हटा ली ।

"चलो उधर सरला बुला रही है" नवयुवकने फिर रक्षासे कहा ।

"उससे कहो, मै अभी आती हूँ," रक्षा बोली ।

"चलो भी, अभी आती हूँ ।" कहकर उसने रक्षाका हाथ पकडकर खीचा । रक्षा उसके साथ चली गयी । कान्ता कचनको बताने लगी कि उस लडकेका नाम मोहन है और वह सरलाका चचेरा भाई है । एम् ए फाइनलमे पढ रहा है । उमाने इससे अधिक कुछ सुननेकी आशा की । पर कान्ता वह बात छोडकर मनोके फीतेकी प्रशसा करने लगी ।

मनोका फीता बहुत सुन्दर था । उसके बालोमें सोनेका क्लिप और नीले रगके फूल भी बहुत अच्छे लग रहे थे । उसके ब्लाउजका पारदर्शक कपडा बिजलीके प्रकाशमे किरणे छोड रहा था । कंचन मनोके कधे पर

झुककर उसके कानमें कुछ फुसफुसाने लगी। उमाकी आँखे झट दूसरी ओरको हट गयी।

उसके सामने जो दो स्त्रियाँ बैठी थी, वे उसीकी ओर देखकर कोई बात कर रही थी। उमाको लगा कि वे उसीकी बात कर रही हैं—शायद उसके कपडोकी आलोचना कर रही है। उमने बाँहें समेट ली और हाथसे गलेकी जजीरको सहलाने लगी।

"बाहर चल रही हो ?" मनोने उससे पूछा।

"रक्षा किधर गयी है ?" यह पूछकर उमा और सकुचित हो गयी।

'बाहर ही गयी है, अभी देखकर भेजती हूँ," कहकर मनो कचन और कान्ताके साथ उठ खडी हुई और वे सब बाहर चली गयी।

उमा फिर बिल्कुल अकेली पड गयी तो उसके मनका बोझ बढने लगा। वहाँ इतने अपरिचित लोगोकी उपस्थिति, चहलपहल और सजावट, सब कुछ उसे बेगाना लग रहा था। यदि सहसा उसे सुनसान अँधेरे जगलमें पहुँचा दिया जाता, जहाँ चारो ओर बिल्कुल नीरवता होती तो उसे निश्चय ही अबसे अच्छा लगता। परन्तु वहाँ उस चुलबुलाहट, छेडछाड और दौड-धूपमे उसकी तबीयत उखड रही थी।

सहसा कमरा कहकहोसे गूँज उठा। उमा चौंक गयी। कोई ऐसी बात हुई थी जिसपर सब लोग हँस रहे थे। उसने सोचा कि वह भी हँस दे परन्तु वह चुप रही कि हो सकता है उसीके बारेमे कोई बात हुई हो। लेकिन जब हँसीका स्वर बैठ गया तो उसे अपने चुप रहनेके लिए खेद हुआ क्योकि उसकी चुप्पी सबने लक्षित की थी। वह पश्चात्तापसे भर गयी।

बाजोका स्वर दूरसे पास आ रहा था, इससे लोगोने अनुमान लगाया कि बारात आ रही है। कमरेकी हलचल बढ गयी। उमाको उस समय बहुत ही व्यर्थ-सा प्रतीत होने लगा। उसके कानोमे बाजेका स्वर गूँज रहा था और आसपास कुछ वाक्योंके टुकडे मँडरा रहे थे।

—आओ बाहर ।

—माधवी, ओ माधवी !

—हाय, मेरा लाल रूमाल !

—रोती है तो रोने दे ।

—नीना रानी, ले बिस्कुट ।

—मौली मिल गयी, पण्डित जी ?

—देख, पीछे कितने लोग हैं ?

—रूई, फूल, धूप, मेवा ।

—मोहनलाल ! मोहनलाल ।

—देखा, कैसा है ?

—कुछ लबा लगता है ।

—आ मिट्ठू,आ बेटा ।

—जान ले ले तू बाबूजी की !

एक एक करके सब लोग कमरेसे बाहर चले गये । कुछ अपने आप आग्रहसे चले गये और कुछको दूसरे आ कर अनुरोधके साथ ले गये । केवल उमा अपने अकेलेपनमें घिरी हुई वहाँ बैठी रह गयी ।

पहले क्षण तो उसे अकेली रह जानेमे अच्छा लगा । दूसरे क्षण उपेक्षित होनेकी टीसका अनुभव हुआ । फिर आत्मीयता दीप्त हुई कि उसे भी बाहर जाना चाहिए । परन्तु अगले क्षण वह इस अनुभूतिसे मुरझा गयी कि बाहर जा कर भी वह अकेली होगी. .उस भीड़मे उसके होने-न-होनेसे कोई अन्तर नही पड़ता ।

बैंडका स्वर बहुत पास आ गया था और बाहर कोलाहल बढ रहा था । अदर उमाके लिए समयके क्षण लम्बे होते जा रहे थे और उसके हृदयकी धडकन मद्धम पड रही थी । तभी अचानक रक्षा बाहरसे वहाँ आ गयी ।

"क्यो रानी, रूठ गयी है क्या ?" रक्षाने आते ही पूछा ।

"नही, मै ." उमाने सिरदर्दका वहाना करना चाहा, लेकिन उसकी वात पूरी होने से पहले ही रक्षाने उसका हाथ पकड कर उठा दिया ।

"बाहर चल, यहाँ क्या बैठी है ?" वह बोली, "वाहर अभी हम लोग दूल्हाके साथ एक तमाशा करने जा रही है ।"

और कुछ कह सकनेसे पहले ही उमा वाहर भीडमें पहुँच गयी । वहाँ कचन, मनो और कान्ता मिल गयी । वे सब उसे साथ सरलाके कमरेमे ले गयी । सरला दुलहिनके वेशमें बिल्कुल और ही लग रही थी । फूलदार जारजेटकी साडीके साथ मोतियोंके गहने उसकी गुलाब-सी त्वचा पर बहुत खिल रहे थे । सरला उस की ओर देखकर मुसकरायी तो वह उसके ओठोकी सलवटे देखती रह गयी । सरलाने साथ कुछ शब्द भी कहे, परन्तु वे शव्द कोलाहलमें उसे सुनायी नही दिये । वह उत्तरमे यूँही मुसकरा दी हालाँ कि अपनी वह व्यर्थकी मुसकराहट उसके हृदयमें चुभ-सी गयी

दो घटे वाद जब रक्षा उसे उसके घरकी गलीके बाहर छोडकर आगे चली गयी तब भी उमाके हृदयमें वह चुभता हुआ अनुभव उसी तरह था, जैसे कोई काँटा अन्दर टूट कर रह गया हो । वह अपनी स्थितिका निर्णय नही कर पा रही थी । एक तरफ जैसे रक्षा, सरला, कान्ता, कचन और मनोरमा खिलखिलाकर हँस रही थी । दूसरी तरफ वे दीवारे थी, जिन में सटी हुई खिडकीके पास सवेरे धूप आती थी और दोपहर ढलते ही अँधेरा होने लगता था और जिनके सायेमें पूर्णिमा और एकादशीके व्रत रखने होते थे । वह जैसे दोनो ओरसे दव रही थी और टूट रही थी ।

गलीमे आकर उसने मन्दिरकी घटियाँ सुनी तो उसे माँकी वात याद हो आयी कि आज मन्दिरमे उत्सव है । उसके पैर अनायास मन्दिरकी सीढियोकी ओर वढ गये । वह अदर पहुँचकर स्त्रियोकी पक्तिमे हाथ बाँधकर खडी हो गयी ।

आरती समाप्त होनेपर स्तोत्र पाठ आरम्भ हुआ। उमा भी आँखे मूँदकर लयमें शब्दोका अनुकरण करने लगी, **जय सीतावर वर सुन्दर, जय जग सुख दाता। जय जय जग सुखदाता**

परन्तु मूँदी हुई आँखोके आगे रक्षाका खिलखिलाता हुआ चेहरा आ गया, फिर मोहनकी बडी-बडी आँखे, और फिर एक एक के ब द कितनी ही आकृतियाँ सामने आने लगी, व्यग्यपूर्ण मु कराहटें, उपेक्षा-भरी भौंहे, सोफे का खाली कोना, जोर ज़ोरसे बजता हुआ बाजा । उसने अपने आपको झटका दिया । **दीनबधु करुणामय, सब जगके त्राता।** फिर हिलता हुआ पर्दा, पर्देके पीछे बिजलियाँ, बिजलियोके प्रकाशमे रक्षा, मोहन, सरला और दूल्हाके खिलखिलाते हुए चेहरे ।

उमाने आँखे खोल ली। स्तोत्रका स्वर चारो ओर गूँज रहा था। बरसोसे वह इस स्वरको सुनती आयी थी, लेकिन फिर भी आज उसे यह स्वर कुछ अपरिचित-सा लग रहा था। जैसे उसके अन्तरकी गहराईमे कही कुछ थोड़ा बदल गया था।

सहसा उसकी आँखे एक जगह टकराकर लौट आयी। भीडमे एक नवयुवक उसकी ओर देख रहा था।

उमाके शरीरमें लहूका दबाव बढ गया। हृदयकी गति बहुत तेज हो गयी। उसकी आँखे केलेके खभोपर से हटकर सजी हुई सामग्रीपर से फिसलती हुई फिर वही टकरायी। वह अब भी उसी तरह देख रहा था।

उमाके लिए पैरोका सतुलन बनाये रखना कठिन हो गया। उसकी आँखें ठाकुरजीकी मूर्ति पर पडी और जल्दीसे हट गयी। उसके पाससे कुछ लोग चलने लगे तो वह भी साथ चल दी। पुजारीसे चरणामृत लेकर वह ड्योढीकी ओर बढी। सहसा भीडमे किसीका हाथ उससे छुआ। उमाने घूमकर देखा। वही दो आँखें थी काली डोरेदार आँखें।

स्तोत्रका स्वर मशीनके घरघर स्वर जैसा हो गया। आस-पासकी भीड, पत्थरकी गोपियाँ, मिट्टीके आम और कपडेके तोते, हर चीज़ धुँधली

होने लगी। आकाश बोझिल हो गया और धरती समतल नहीं रही। दिशाएँ एक दूसरीमें मिलकर ओझल होने लगी। प्रकाश रग वदलने लगा। वह भीडमें कुछ यूँ हो गयी जैसे रुके हुए पानीमे अस्तव्यस्त हाथ-पैर मार रही हो। उसे केवल एक ज्ञान था कि एक हाथ उसे छू रहा है। यहाँ बाजूके पास, यहाँ कधेके पास, यहाँ ।

वह बाहरसे आती हुई दो स्त्रियोंके साथ उलझ गयी। किसी तरह सँभलकर जब वह बाहर पहुँची तो उसे हवाका स्पर्श कुछ विचित्र-सा लगा। लहू जो तेजीके साथ नाडियोमें सरसरा रहा था, वह अब कुछ ठडा पडने लगा तो शरीरमें सिहरन भर गई। उसके कधेके पास उस हाथका स्पर्श जैसे अभी तक सजीव था।

उसका मन हुआ कि वह जल्दीसे घर पहुँच जाय और एक बार खिलखिला कर हँस दे। वे असाधारण क्षण बिल्कुल नयी-सी अनुभूति छोड़ गये थे। यदि रक्षा उस समय उसके पास होती तो वह हँसती हुई उसके गलेमें बाहें डाल देती और उसे घसीटती हुई अपने साथ घर ले जाती।

उस स्पर्शको एक बार छू लेनेके लिए उमाका हाथ अपने कधेके उसी भागकी ओर उठ गया। वह स्पर्श जैसे वहाँ अपनी निश्चित छाप छोड़ गया था।

अचानक उसका पैर लडखडा गया और वह रुक गयी। उसका शरीर पसीनेसे भीग गया। अधेरेमें गहरे-गहरे रग फैल गये।

उस स्पर्शका आभास तो वहाँ था, पर सोनेकी जजीर गलेमें नही थी।

ऊर्मिल जीवन

कल नीरा सात बरसकी थी, आज वह सत्रह बरसकी है। दस बरसका समय एक लहरकी तरह उसे साथ बहा लाया। हवाने पानीके रूख बदल दिये, समयने जीवनके।

दस बरसमें कितना परिवर्तन हो गया। दस बरस पहले नन्ही टाँगें जिन परिधियोको लाँघ लेती थी, आज उनके बाहर झाँकना भी उसके लिए सम्भव नही। पहले वह नासमझ बालिका थी आज समझदार नवयुवती है। जीवन यही है। व्यग्य भी यही है।

उसकी चंचलता गम्भीरतामें बदल गयी है। उसकी मुखरताने खामोश रहना सीख लिया है। सोचने लगती है तो वर्तमानसे बहुत पीछे रह जाती है। वहाँसे लौटे तो बहुत आगे निकल जाती है। वर्तमानके केन्द्रपर विचारधारा भ्रान्त होकर घूमती है।

नीराने अपनेको देखा। शारीरिक विकास उसके और नन्ही नीराके अस्तित्वमे एक युगका अन्तर बतलाता है। तब चाहती थी जल्दी-जल्दी बड़ा होना। आज चाहती है पहलेकी तरह बालिका बन जाना। शैशवकी चाह पूरी हो चुकी है। आजकी चाह कभी पूरी नही होने की। वह यह सब समझती है, फिर भी विचार वशसे बाहर होकर चलते हैं।

नीरा कमरेमे टहलने लगी। उसे अनुभव हो रहा था कि सारा वातावरण ही विषैला हो गया है। एक-एक चीजमें तर्जना है। सजावटका सामान सूनेपनकी विडम्बनाको महत्त्व देता है। वह कमरेमें अकेली थी और अकेलापन धीरे-धीरे विश्वमय होता जा रहा था।

कल रातको उसका विवाह हुआ था। वह रात, जो जीवनकी मधुरतम कल्पना थी, एक विभीषिका बनकर छायी रही। सुहागरात आज होगी। इस समय संध्या है। सध्याके बाद तारे निकलेंगे। फिर रात आ जायगी।

उसे लगा जैसे जीवन-तत्त्व ही नि शेष हो रहा है । आजकी रात जीवनमे घातक कटुता घोल देगी । सम्भव हो, तो वह रातदिनके मनकोंसे बनी जीवन-मालाका यह काला मनका तोडकर फेंक दे । मगर जानती है एक मनका तोडनेसे माला ही टूट जायगी । उसमें इतना साहस नही है. ।

पलग पर बैठकर नीराने चारो ओर देखा । दस बरसमें आँखें इस घरकी दीवारोंसे परिचित हो गयी है । रग कई बार बदले गये । पलगसे चादरें भी उतरती रही । उसकी आशा जीजी घरकी रानी थी । एक महीना पहले जीजीने भी आँखें मूँद ली और उनके स्थानपर आज वह स्वय वहाँ आ गयी है ।

देह काँप उठी । दस बरस पहले एक अपरिचित व्यक्तिको जीजाके रूपमें देखा था । आजसे उसीको पतिके रूपमें पहचानना है और जीजाका वह प्यार-भरा सम्बोधन, "नीरो रानी !"

'नीरो रानी' का आजसे तात्पर्य बदल जायगा । नया अर्थ होगा और नयी ही व्याख्या होगी । उसके साथ-साथ

हृदय भारी होता गया । विवाह हो चुका । आगकी साक्षीमें वाग्दान करके माँने आँसू पोछ लिये । घरका गाछ जला तो उसकी राखमें नया अकुर रोप दिया गया । पानीके कुछ छीटोमें राख सदाके लिए दब गयी ।

बाहर आकाश फैला है । शून्य ! शून्य पर अन्तर्वेदनाकी छाप नही पडती । शैशवके चित्र कही इस आकाशमें अकित होते, तो उन पर काली तूलिकासे दाग कर देती ।

चररमरर बैलगाडी सडक पर चल रही थी । नीराको बहुत पुरानी बात याद आयी । पिताने कभी कहा था, "जीवन एक बैलगाडी है । एक हिचकोलेसे इसके तख्ते हिल जाते हैं । एक कील टूट जाय तो पहिये निकल जाते है ।" तब केवल सुना था । आज ठीक समझ रही है । पिताकी मृत्यु हुई । कील टूट गयी, पहिये निकल गये, गाडी बैठ गयी ।

नन्ही कृष्णाने उसका दुपट्टा खीचा । नीरा एकदम सचेत हुई । पलभर कृष्णाकी भोली आँखोको देखती रही । फिर गोदीमे लेकर उसका मुँह निहारा । उसके बालोको सहलाया । फिर गोदीसे उतार दिया ।

कलतक वह कृष्णाकी मौसी थी । आजसे उसकी सौतेली माँ है ।

"मौछी," कृष्णाने कहा, "तू माँको लेकल क्यो नईं आयी ?"

नीरा मन-ही-मन रो दी । कृष्णा आज भी अपनी माँकी प्रतीक्षा करती है । क्या वह कभी उसे माँके रूपमें स्वीकार करेगी । 'नीरो रानी' का अर्थ बदल सकता है, पर कृष्णाका कोश बहुत छोटा है । वह अपने शब्दो का एक ही अर्थ जानती है । वह उसे कहती है, "मौछी" ।

कृष्णाके लिए वह मौसी ही रहेगी । उसका शैशव जानता है—लहू और पानीका विवेक ।

बच्चीके प्रश्नका उत्तर न देकर नीराने कहा, "जा उधर जाकर खेल मुन्नी ! मीरा वहाँ अकेली होगी ।"

"नईं, मौछी, पैंले बता माँ कल बी आएगी कि नईं ?"

नीराने उसे अपने साथ सटा लिया । स्वरको सहेजकर कहा, "तू मीराको जिसदिन नही मारेगी, उसीदिन आयगी, अच्छा ! जा, मीराके साथ खेल बाहर ।"

कृष्णा सन्तुष्ट हो गयी । नीराके गलेमें बाँहे डालकर नाचने लगी । फिर उसे छोड़कर भाग गयी ।

नीराने सामने देखा। आँखे दीवार पर लगे हुए चित्र पर अटक गयी । कसाई मरी हुई बकरीको भून रहा है। हरी घासके पास बँधी हुई दूसरी बकरी घासमें मुँह मार रही है । कसाई देख रहा है । घासकी ओटमे वह छुरी है जिस पर अब भी लहूके दाग है ।

नीराकी आँखोके आगे श्मशानका वह दृश्य आया, जब आशा जीजीकी चितासे चिनगारियाँ निकली थी । चिनगारियोकी ओटमे कितना रोयी थी वह ? कितना सिसके थे वे—उसके जीजा ?

और महीनाभर बाद ?

वैसी ही आगके चारो ओर जीजाने उसके साथ फेरे लिये। उसे लगा जैसे बहनकी चिताके चारो ओर घूम रही है। चटकती हुई चिनगारियाँ और बोले जा रहे वेद-मत्र—दोनो एक-से ही थे। विवाह हो गया। बिना सजधज और चहल-पहलके। समयके सकेतने उसे सौभाग्यवती बना दिया। लाल चूडियाँ और लाल सिन्दूर ।

नीराने फिर देखा। छुरीपर लहू गीला-सा लगता था। कसाई, आग, बकरी और घास—यह एक परम्परा है। वह भी इसी परम्पराको निवाह रही है। उसने आँखे मूँदनेकी चेष्टा की। मनका भारीपन धीरे-धीरे पलको पर फैल गया।

नन्ही-नन्ही नीरा। छोटा-सा घर। माता और पिता। असाधारण चहल-पहल। बाजे-बारात और जीजीका विवाह। किनारीदारी कपड़े पहनकर जीजी कैसे बदल गयी ? मिठाइयाँ और बताशे। केलेके खम्भे, गोली और हवनकुण्ड। सेहरा बाँधें एक अपरिचित व्यक्ति। सहज आत्मीयता। माँने कहा, "नीरो, तेरे जीजा, जा जीजाके पास।"

जीजाने बाहे फैलायी। कहा, "आ, नीरो रानी, तुझे खिलौना देगे, मेले ले जायँगे।" नीरा पास नही गयी। दूर भाग गयी।

रोती हुई जीजी डोलीमें बैठी। माँने कच्ची लस्सीमें पैर डाले। फिर जीजी लौट कर आयी—गुडिया, जैसे लाल ओठ, और झाँकियोकी सीता जैसे कपडे। नीरा हँसी और तालियाँ पीटने लगी।

फिर वही अपरिचित व्यक्ति—जीजा। माँने कहा, "जा पूछ, दूध कब पियेंगे ?"

नीरा पास गयी, सिमटी और सकुचित-सी। जीजाने उसे दोनो बाहोमें पकड लिया और पास खीचा।

दो मोटे-मोटे ओठ, नाकके लम्बे बाल और विचित्र-सी गध। नीरा हिचकिचायी, पीछे हटी और फिर उसने उस व्यक्तिके गालपर एक थप्पड़ लगा दिया . ।

चौंककर नीराने आँखे खोली। वही शून्य आकाश! दूर-दूरतक कालिमामे ओझल होते हुए धरतीके चित्र। शैशव कहाँ है? पीछे, बहुत पीछे। बीचमे दस बरसकी दीवार है।

झींगुर बोलने लगे। अभी रात होनेवाली है। गोधूलिके गहरे पृष्ठ-पटपर एक तारा झिलमिलाने लगा।

नीराकी आँखें से दो आँसू टपक पड़े। उसने झटसे आँखें पोछ ली। यह कैसा अपशकुन है? आज तो सुहागरात है। पहले इसी कमरेमें जीजी की सुहागरात हुई थी। और वह साथका कमरा? उस कमरेमें जीजीके प्राण निकले थे। वहाँका वातावरण अब भी जैसे कराह रहा है। अव्यक्त और मद्धम-सा स्वर · "नीरा! ओ माँ! हाय! ओ माँ!"

विचारोको उसने झटका दिया। उठकर फिर टहलने लगी। फूल-दानके फूल ठीक किये। सिंगार-मेजके पास जाकर शीशेमें चेहरा देखा। बाहोमें मासलता है और गालो पर गुलाबीपन .

जीजीके गाल पिचक गये थे। बाहें सूखकर कैसी हो गयी थी—पतली हड्डियो जैसी? रूखेसे मुँहमे दाँत कैसे लगते थे? बड़ी-बड़ी आँखे कितनी डरावनी थी! और वे उसे देखकर अन्तिम दिन भी कहती रही, 'नीरा, तेरा ब्याह तो देख लेती। बाबूजीकी तरह मैं भी तेरे ब्याहसे पहले ही .

नीराकी आत्मा चीख उठी, "देखो जीजी, देखो! तुम्हारी नीराका ब्याह हो गया! आज उसकी सुहागरात है! देखो—"

और उसपर शिथिलता छा गयी। निढाल-सी वह पलंगपर बैठ रही। फिर लेट गयी। छतकी कड़ियोमें मकड़ीका जाला था। जाला धीरे-धीरे फैलने लगा। फैलकर इतना बड़ा हो गया कि नीरा उसमें उलझ गयी—बिल्कुल अवसन्न और निश्चेष्ट ..

पृथ्वीकी धुँधली रेखाएँ आकाशकी कालिमामें खो गयी। तारे निकल आये। रात हो गयी।

गरम साँसके स्पर्शने नीराकी पलकोको खोल दिया। दो उत्सुक ओठ उसके ओठोके बहुत निकट आ रहे थे। नीरा सहमी और सिमटने लगी। दो हाथोने उसकी बाहोको पकड लिया। बाहर अधकार था। उसे मनमें लगा कि आकाशने भी आँखें मूँद ली हैं

दो मोटे-मोटे ओठ, नाकके लम्बे बाल और विचित्र-सी गन्ध! निकट और निकट! आखोके दो गहरे गड्ढे! नीरा हिचकियायी। चाहा बाहें झटक दें और जोरसे तमाचा लगाये, जिससे सारा वातावरण झन्ना उठे ..

मगर हाथ नही उठ सका। आज वह नासमझ बालिका नही, समझदार नवयुवती है।

●

एक पंख युक्त ट्रेजेडी

कई घरोका वातावरण प्रेमके लिए बहुत अनुकूल होता है। प्रोफेसर चोपड़ाका घर ऐसे ही घरोमेंसे है। उन्हीके बरामदेमे बेंतकी कुर्सियो पर बैठकर चाय पीते हुए प्रगतिवादी सतिन्दरका प्रतिक्रियावादी प्रकाशकौरसे प्रेम हो गया था। दोनोके विचारोने एक दूसरेको इतना प्रभावित किया कि थोडे ही दिनोमें सतिन्दर प्रतिक्रियावादी हो गया और प्रकाशकौर प्रगतिवादी, जिससे दोनोका विवाह नही हो सका। फिर उन्हीके ड्राइगरूममे उनके जन्मदिन पर ज्ञानको एक साथ रूपा और रानीसे प्रेम हो गया। पर इससे पहले कि वह यह निश्चय कर सकता कि किससे प्रस्ताव करे, उन दोनोका विवाह हो गया।

और अब के प्रेमकी घटना उनके घरके लॉनमे हुई। प्रोफेसर चोपडा सबेरे सैरसे लौटते हुए कहीसे भूरे और नीले पखो वाली एक सुन्दर-सी मुर्गी लेते आये, और उसके आते ही प्रोफेसर साहबके काले मुर्गेको उससे प्रेम हो गया।

काला मुर्गा खानदानी मुर्गा था। उसकी माँ प्रोफेसर साहबके घर मे कई बार अण्डो पर बैठी थी, और उन अण्डोंसे जिस परिवारकी स्थापना हुई, वह उस समय उसका एकमात्र अवशेष था। सबेरेकी बाँग देनेके समयसे वह प्रोफेसर साहबके लॉनमे चहलकदमी आरम्भ करता, और चीटे या मटर जो कुछ भी मिल जाता दिन भर निगलता रहता। उसका स्वास्थ्य असाधारण रूपसे अच्छा था और उसके पखोके नीचे, गरदनके चारो ओर तथा टाँगोके ऊपरी भागमें मासकी मोटी-मोटी तहे थी। उसे अपने शरीर-की पुष्टताका अभिमान था, जिसके कारण वह वाहरके किसी मुर्गेको प्रोफेसर साहबके लॉनमें प्रवेश नही करने देता था। साथके घरका सफेद

मुर्गा तीन चार बार वहाँ मटर चुगने आ चुका था, पर हर बार ही काले मुर्गेने उसे चोच मार-मारकर भगा दिया था।

जब प्रोफेसर साहब मुर्गीको लेकर आये, तो पहले तो उनके हाथमें उस जीवको देखकर काले मुर्गेका हृदय जलनसे भर गया और उसने जोरसे पख फडफडा कर अपने रोषका परिचय दिया। पर जब प्रोफेसर साहब मुर्गीको बिल्कुल उसके निकट लाकर छोड गये तो सहसा उसकी एक टाँग ऊपर उठ गयी और कलग़ीदार गर्दन आह्लादसे हिलने लगी। पहले उसने एक बडे घेरेमें मुर्गीकी परिक्रमा ली। फिर दूसरी परिक्रमामे उसने घेरा पहलेसे छोटा कर दिया। तीसरी परिक्रमा उसने बहुत निकटसे ली। परिक्रमाकी समाप्ति पर जब उसने मुर्गीकी ओर अपनी चोच बढाई तो मुर्गी ने उपेक्षापूर्वक अपनी चोच फिरा ली और उडकर कई गज़ दूर चली गयी।

मुर्गेको मुर्गीकी यह अदा बहुत पसद आई। वह पैरोको एक केन्द्रम रखकर चारो दिशाओंमें गोल घूम गया। फिर उसने मटरका एक दाना मुँह में लिया और लयके साथ गर्दन हिलाता हुआ मुर्गीकी ओर बढा। मुर्गीके निकट पहुँचकर जब उसने मटरका दाना उसकी ओर बढाया तो मुर्गीने फिर विपरीत दिशामे मुँह फेर लिया और अपनी निश्चित गतिसे उसी दिशामे चलने लगी।

अबकी बार मुर्गीके इस व्यवहारसे मुर्गेने अपनेको अपमानित अनुभव किया। उसका खानदानी गर्वसे उठा हुआ सिर यह तौहीन सहन नही कर सका। उसने दो-तीन बार अपनी चोच आधी खोली और बद की। वह इस भावसे मुर्गीकी ओर बढा कि अब उसे अपने मोटे-मोटे पुट्ठोके बलसे-पराजित करेगा। मुर्गीको मनानेके लिए अब वह अपने वे चचुप्रहार प्रयोग में लाने लगा, जिनसे वह आसपासके मुर्गोको भगाया करता था। उसका यह उद्दण्ड भाव काम कर गया और उसके दो प्रहारोंके अनन्तर ही मुर्गी उसकी वशवदा होकर उसकी चोचसे चोच भिडाने लगी।
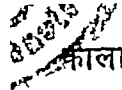
४८१३ काला मुर्गा उस क्रीड़ामे अधिकाधिक प्रगल्भ होता जा रहा था, जब उस की पीठ पर किसी तीसरी चोंचका आघात पडा। वह सफेद मुर्गा जो कई बार उससे मार खाकर भागा था, आज उसे फिर चुनौती देने आया था। पर आज पहलेकी तरह उसकी आँखोमे भीरुता-मिली धृष्टताका भाव नही था, बल्कि एक मिटने और मिटा देने वाली चमक थी। आज वह मटरके दानोके लिए छेंडखानी करने नही आया था बल्कि अपने पौरुष और जीवन-का दाँव खेलने आया था।

अपने बढते हुए उन्मादमें व्याघात पाकर काले मुर्गेका लहू गर्म हो उठा। उसने झपट कर सफेद मुर्गेकी उठी हुई गर्दन पर प्रहार किया और एक ही आवेशमय आक्रमणमे उसे खदेड़ता हुआ लॉनके बाहर ले गया। लॉनकी परिधिसे बाहर निकलकर सफेद मुर्गेका आत्मविश्वास भी जाग उठा, और उसने दुगुने आवेशके साथ ऐसा प्रत्याक्रमण किया कि दोनो प्रोफेसर चोपडा की कोठीसे दूर कच्ची सडक पर पहुँच गये।

कच्ची सडक पर आकर काले मुर्गेने फिर से अपनी शक्तियोका सचय किया। सफेद मुर्गेने भी पख फडफड़ाकर अपने को आने वाले घात-प्रतिघात के लिए तैयार कर लिया। अब दोनोमें एक निर्णायक लडाई छिड गयी।

लगातार दो घण्टे तक लडाई चलती रही। कभी काला मुर्गा एक टाँग पर उछलता हुआ अपने विपक्षीसे जा उलझता तो कभी सफेद मुर्गा गर्दन ऐंठता हुआ उसे नोचने आ पहुँचता। बीच-बीचमें जब दोनो थक जाते थे तो आगे-पीछे एक घेरेमे घूमने लगते। फिर, जो भी जल्दी सँभल जाता वह अवसर देखकर दूसरे पर आक्रमण कर देता। दो घटेकी लडाईमे उन दोनोके पख पूरे-पूरे झड गये। कलगियाँ साफ हो गयी। ग नो से लहू फूटने लगा। फिर भी वे दोनो लडैत आपसमे भिडते ही रहे .. लडते ही रहे।

दो घण्टे तक इस तरह लड़ चुकनेके वाद सफेद मुर्गा हल्का पडने लगा। उसने अपनी ओरसे जूझना बद कर दिया और काले मुर्गेके वढ

आने पर केवल उसे रोकनेकी चेष्टामे ही रहने लगा। काले मुर्गेने उसकी थकावटको भाँप लिया और एक बार बढ कर उसके शरीरको इस बुरी तरहसे छलनी कर दिया कि सफेद मुर्गा बिल्कुल निढाल हो गया। जब सफेद मुर्गेमे चोच उठानेकी भी शक्ति नही रही, तो काला मुर्गा उसे छोड कर वापस लौटा। उस समय उसकी अपनी अवस्था भी शोचनीय हो रही थी। पर उसके हृदयमें एक गर्वमिश्रित आह्लाद था। वह अपनी छिली हुई घायल गर्दनको अदाके साथ हिलाता हुआ चल रहा था तथा सिरको एक ऐसा कप दे रहा था मानो उसकी लाल कलगी अभी तक सिर पर मौजूद हो।

लॉनके निकट पहुँचकर उसने बाहरसे ही बाँग दी कुकड़ूँ-कूँ।

और उसने लॉनमें प्रवेश किया। प्रवेश करते ही उसने विजयगर्वके साथ चारो ओर दृष्टि घुमाकर देखा। मुर्गी कही दिखाई नही दी। उसने बरामदेके पास पहुँचकर फिरसे इधर-उधर झाँका और पुन बाँग लगायी—"कुकड़ूँ-कूँ!"

परन्तु मुर्गी घरके किसी कोनेसे निकल कर नही आयी।

वास्तवमें मिस्टर चोपडाके घर लचके लिए कुछ मेहमान आ गये थे और मुर्गी उस समय खानेकी मेज़ पर मेहमानोकी प्लेटोको चिकना कर रही थी।

ज्ञानपीठके सुरुचिपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

दार्शनिक, आध्यात्मिक

१ भारतीय विचारधारा २)
२ अध्यात्म-पदावली ४॥)
३. वैदिक साहित्य ६)

कहानियाँ

४ सघर्षके बाद ३)
५ गहरे पानी पैठ २॥)
६. आकाशकेके तारे धरतीके फूल २)
७ पहला कहानीकार २॥)
८ खेल-खिलौने २)
९ अतीतके कपन ३)
१०. जिन खोजा तिन पाइयाँ २॥)
११ नये बादल २॥)
१२ कुछ मोती कुछ सीप २॥)

कविता

१३. वर्द्धमान [महाकव्य] ६)
१४ मिलन यामिनी ४)
१५ धूपके धान ३)
१६. मेरे बापू २॥)
१७ पचप्रदीप २)

सस्मरण, रेखाचित्र

१८ हमारे आराध्य ३)
१९ सस्मरण ३)
२० रेखा-चित्र ४)
२१ जैन जागरणके अग्रदूत ५)

उर्दू-शायरी

२२. शेरो-शायरी [द्वि. सं.] ८)
२३ शेरो-सुखन [पाँचो भाग] २०)

राजनीति

२४ एशिया की राजनीति ६)

ऐतिहासिक

२५ खण्डहरोका वैभव ६)
२६. खोजकी पगडण्डियाँ ४)
२७ चौलुक्य कुमारपाल ४)
२८ कालिदासका भारत [१-२] ८)
२९ हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन [भाग १,२] ५)

ज्योतिष

३० भारतीय ज्योतिष ६)
३१ केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि ४)
३२ करलक्खण [द्वि०स०] ॥)

नाटक

३३ रजतरश्मि २॥)
३४. रेडियो-नाट्य-शिल्प २॥)
३५ पचपनका फेर ३)
३६ और खाई बढती गई २॥)

उपन्यास, सूक्तियाँ

३७. मुक्तिदूत ५)
३८ तीसरा नेत्र २॥)
३९. रक्तराग ३)
४० ज्ञानगगा [सूक्तियाँ] ६)

निबन्ध, आलोचना ६)

४१. ज़िन्दगी मुसकराई ४)
४२ सस्कृत साहित्यमें अयुर्वेद ३)
४३ शरत्‌के नारीपात्र ४॥)
४४ क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ? २॥)

विविध

४५. द्विवेदी-पत्रावली २॥)
४६ ध्वनि और संगीत ४)
४७. हिन्दू विवाहमें कन्यादानका स्थान १)